भूमिका ।

देश की उन्नति और सुधार के लिये सब प्रकार की पोथियों में से इतिहास से बढ़ कर अच्छी और जरूरी दूसरी पोथी नहीं है। इसको पढ़ कर लोग यह जान सकते हैं कि किस जाति की उन्नति क्या क्या करने से हुई है और किन किन बुराइयों के आजाने से देश की अवस्था बुरी होगई है। इन बातों को जान कर देश का भला चाहने वाले और उसके लिये उद्योग करने वाले यदि किसी बुराई के बीज को जमता देखें तो वे उसके आगे चल कर बड़ी भारी बुराई और हानि का ध्यान कर के उसके नाश करने का उपाय सोच सकते है और बहुत से दूसरे उपायों से अपने देश को भलाई पहुँचा के उसका उद्धार कर सकते हैं । इन्हीं कारणों से इतिहास की पोथियां बड़ी आवश्यक हैं। परन्तु बड़े खेद की बात है कि हमारे देश में इतिहास का पूरा अभाव है । नाम लेने को राजतरंगिणी एक इतिहास की पुरानी पुस्तक मिलती है। पहिले इसको कल्हण ने सन् ११४८ के लगभग रचना प्रारम्भ किया था और पीछे और लोगों ने उसे समाप्त किया। इस ग्रन्थ में जिन जिन राजाओं का नाम आया है उन्होंने कितने दिनों तक राज्य किया इसकी गिनती दिनों तक की है पर यदि उस पुस्तक की भली भांति जांच की जाय तो यह मिलता है कि सन् संवतों में ही सबसे अधिक इस ग्रन्थ के रचयिता चूके हैं। अशोक के समय में एक हजार वर्ष का अन्तर डाल दिया है। मिहिर कुल का समय ईस्वी से ७०४—६३४ वर्ष पूर्व लिखा है जब कि उसका ठीक समय ५३० ई० है। इसी प्रकार से और और भूलें इसमें भरी हैं जिससे हम इस पुस्तक का ऐतिहासिक बातों में पूरा पूरा सहारा नहीं ले सकते। पुराणों में अवश्य वंशावलियें मिलती हैं परन्तु अनेक स्थानों में एक वंशावली एक पुराण में एक प्रकार दी है तो दूसरे में दूसरे प्रकार से और सन संवत् का तो कहीं नाम भी नहीं लिया

है। दूसरे कविता में लिखे जाने से अत्युक्ति की उसमें इत
भरमार है कि ठिकाना नहीं लगता। इसलिये यदि हम संस्कृत
प्राचीन ग्रन्थों के सहारे से भारतवर्ष का पुराना और सच्चा इ
हास लिखना चाहें तो शायद इससे बड़ी भूल हम दूसरी न क
सकेंगे। हमारे एक प्यारे मित्र का कहना है कि बहुत पुराने सम
से अद्भुत बातों या वस्तुओं को देवतुल्य मान उनकी पूजा कर
और उन पर भक्ति भाव रखना भी भारतवासियों की नस नस में
ऐसा समा गया है कि उन बातों की छान बीन करने और सच
सच्ची घटनाओं के जानने का कभी उन्हें स्वप्न भी नहीं आता। अप
इस कथन के प्रमाण में उन्होंने कहा 'कि अमरोहे में एक पीर साह
की दरगाह है जहां लाखों लोग जाते हैं। यह स्थान गंगा के उ
पार है। जब इस दरगाह के पुजारी या उनके सेवक हिन्दू यात्रिय
को इस पार से लेने आते हैं और जब वे उन्हें लेकर गंगा के निक
पहुंचते हैं तो कहने लगते हैं कि तुम लोग अपनी आँख बन्द कर
क्योंकि गंगा के दर्शन कर पीर साहब के पास जाओगे तो तुम्हार
मुराद पूरी न होगी। विचारे सीधे साधे अथवा स्वार्थान्ध हिन्
अपनी आँखें बन्द कर लेते हैं।' यही मुख्य कारण है कि यहां इति
हास की सामिग्री के रहते भी अब तक कोई अच्छा इतिहास न
बन सका। भारतवर्ष का सच्चा पुराना इतिहास यदि किसी के
सहारे से बन सकता है तो वे शिलालेख और दानपत्र हैं जो दान
और धर्म्म और न कि इतिहास की दृष्टि से लिखे गए थे। इस लेख
में हम यह नहीं दिखाया चाहते कि इन दानपत्रों का कैसे पता
लगा और इनसे अब तक किन किन नई बातों का ज्ञान हमें प्राप्त
हुआ। इसे हम किसी दूसरे लेख में लिखने का उद्योग करेंगे।
आज इस ऐतिहासिक सामिग्री को हम हिन्दी पाठकों की भेंट करते
हैं। इसमें ७१६ दानपत्रों का सारांश दिया गया है जिसके सहारे
से पाठकगण बहुत से ऐतिहासिक पुरुषों का ठीक ठीक समय
स्थिर कर सकेंगे। जिस जिस पुस्तक में इन लेखों का पूरा पूरा
वृत्तान्त छपा है उनके नाम भी सांकेतिक रूप में पहिली ही पंक्ति में
लिख दिए गए हैं। उन सांकेतिक अक्षरों से किन किन पुस्तकों का
आशय है उसे हम नीचे स्पष्ट लिख देते हैं जिससे पाठकों को उन-
के जानने में किसी प्रकार की कठिनता न हो।

(१) आ० स० इ० = Acheological Survey of India
(२) आ० स० वे० इ० = Archeological Survey of Western India
(३) ए० इ० = Epigraphia Indica.
(३) इ० इ० = Indian Inscriptions
(४) जै० मो० जे० = Zetsh D. Morg. Ges
(६) ए० री० = Asiatic Researches
(७) ए० रे० बा० प्रे० = Antiquarian Remains Bombay Presidency.
(८) कै० टे० वे० इ० = Cave Temples of Western India
(९) को० मि० ए० = Colebrooke's miscellaneous Essays.
(१०) गु० इ० = Gupta Inscriptions.
(११) ज० अ० ओ० सो० = Journal American Oriental Society
(१२) ज० ब० ए० सो० = Journal Bengal Asiatic Society
(१३) ज० रा० ए० सो = Journal, Royal Asiatic Society.
(१४) इ० ए० = Indian Antiquary
(१५) प्रा० ले० मा० = Prachinlekhamala.
(१६) प्रो० बा० ए० सो = Proceedings, Bengal Asiatic Society.
(१७) प्रो० बे० ज० = Professor Bendall's Journey.
(१८) बा० ग० = Bombay Gazetteer
(१९) वी० जी० = Wiener Zeitschrift.
(२०) भा० इ० = Bhavanagar Inscriptions
(२१) राजस्थान = Annals and Antiquities of Rajsthan.
(२२) रा० मि० बु० ग० = Dr. R. L. Mittra's Buddha Gaya.

इन्हीं बाइस पुस्तकों से ये दानपत्र के लेख इकट्ठे किएगए हैं। इस संग्रह से यह न समझना चाहिए कि अबतक इतने ही लेखों का पता लगा है। इससे कहीं अधिक शिलालेखों और दानपत्रों का वृतान्त छप चुका है। इन बाकी के लेखों को भी हम किसी समय पाठकों के सम्मुख उपस्थित करने का उद्योग करेंगे यदि हमें यह ज्ञात हुआ कि हमारे इस परिश्रम से किसी को भी लाभ पहुंचा और हिन्दी प्रेमियों की कुछ भी रुचि इस ओर हुई। इस संग्रह में निम्न लिखित संवतों के लेख दिएगए हैं। इन्हीं सन से उ-

इनकी गणना भी हम पाठकों के सूचनार्थ नीचे दे देते हैं।

वि० सं० = विक्रम संवत् (प्रारम्भकाल ईस्वी से ५७ वर्ष पूर्व)

शा० सं० = शाक संवत् (प्रारम्भकाल ७८ ई०)

क० सं० = कलचुरी-चेदि-संवत् (प्रारम्भकाल २४९ ई०)

गु० सं० = गुप्तवल्लभी संवत् (प्रारम्भकाल ३१९ ई०)

ह० सं० = हर्ष संवत् (प्रारम्भकाल ६०६ ई०)

ने० सं० = नेवार संवत् (प्रारम्भकाल ८८० ई०)

लौ० सं० = लौकिक संवत्-दूसरा नाम-सप्तर्षि संवत् (प्रारम्भ ८२४ ई०)

शा० सं० = शाहूर संवत् (प्रारम्भकाल १३४४ ई०)

बु० सं० = बुद्ध के निर्वाण का संवत् (प्रारम्भकाल ईस्वी से ६ वर्ष पूर्व)

ल० सं० = लक्ष्मणसेन संवत् (प्रारम्भकाल ६१७ ई)

सि० सं० = सिंह संवत् (प्रारम्भकाल १११४ ई०)

म० सं० = मुहम्मद या हिजरी संवत् (प्रारम्भ ६२२ ई०)

सन् सं० = बंगाली सन् संवत् (प्रारम्भकाल ५९३ ई०)

अ० सं० = अलाई या इलाही संवत् (प्रारम्भकाल १५५६)

हमारी इच्छा थी कि इन सब संवतों का कुछ कुछ वृत्तान्त हम भूमिका में दे देते परन्तु ग्रन्थ बढ़ जाने के भय ने हमें ऐसा करने से रोका। अस्तु जिन लोगों की इस विषय में कुछ भी रुचि होगी वे इसका पता स्वयं लगा लेंगे।

अन्त में हमें अब केवल इतना निवेदन करना है कि यह सूची हमने डाक्टर किलहार्न के संग्रह से ली है। हिन्दी हस्तलिखित पुस्तकों की रिपोर्ट लिखने में हमें अनेक दानपत्रों की खोजना पड़ा जिसके लिये हमें अनेक पुस्तकें उलटनी पड़ीं, अन्त में डाक्टर किलहार्न का संग्रह हमारे हाथ लगा जिससे हमें बड़ी सहायता मिली। यह समझ कर कि दूसरे लोगों को भी ऐसी आवश्यकता पड़ सकती है हमने उसे हिन्दी में लिखने का साहस किया। आशा है कि हमारे इस परिश्रम से इतिहास प्रेमी लोग लाभ उठावेंगे और हमें उत्साहित करेंगे जिससे इसका दूसरा भाग भी हम आगे चलकर उनके अर्पण कर सकें।

प्राचीन-लेख-मणि-माला।

प्रथम खण्ड।

(१) मालव विक्रम संवत के शिला लेख।

(१)

वि० सं० ४२८– गु० इ० पृष्ठ २५३। व्याघ्रराट के प्रपौत्र, यशोराट के पौत्र तथा यशोवर्धन के पुत्र "वरिक विष्णुवर्धन" का विजयगढस्तूप पर लेख।

(२)

वि० सं० ४८० (?) गु० इ० पृष्ठ ७४। नरवर्मन के पुत्र (?) "विश्ववर्मन" के समय का गङ्गधार में लेख जिसमें राजा के मन्त्री मयूराक्ष के कई मंदिरों के बनवाने का वर्णन है।

(३)

वि० सं० ४९३ और ५२९– गु० इ० पृष्ठ ८१। "कुमार गुप्त" (प्रथम) और उसके अधीनस्थ दशपुर के नायक "विश्ववर्मन" के पुत्र "बन्धुवर्मन" के समय का लेख जो मन्दसोर में है और जिसे वत्सभट्ट ने सङ्कलित किया।

(४)

वि० सं० ५८९– गु० इ० पृष्ठ १५२– राजाधिराज "यशोधर्मन विष्णुवर्धन" के समय का मन्दसोर में शिलालेख जिसमें

का शिलालेख जिसमें (कन्नौज के) भोजदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज महेन्द्रपालदेव के समय का महासामन्ताधिपति उन्दभट्ट के दानपत्र का वर्णन और उसका समय है ।

(२०)

वि० सं० ९३३—आ० स० आ० ई० भाग १० पृष्ठ १२ ग्यारिसपुर के खण्डित शिलालेख का समय ।

(२१)

वि० सं० ९६५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७४ । सीयडोणी के शिलालेख का समय ।

(२२)

वि० सं० ९६७—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७४ । सीयडोणी के शिलालेख का समय ।

(२३)

वि० सं० ९६९—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७५ । सीयडोणी के सामन्त महाराजाधिराज "धूरभट्ट" के राजत्वकाल का सियडोणी में शिलालेख ।

(२४)

वि० सं० ९७३—ज० बं० ए० सो० भाग १२ पृष्ठ ३१४ । हस्तिकुण्डी के हरिवर्मन के पुत्र राष्ट्रकूट "विदग्ध" के समय का बीजापुर में शिलालेख ।

(२५)

वि० सं० ९७४—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ १७४ । [कन्नौज के] महेन्द्रपालदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज "महीपालदेव" के समय का असनी (फतेहपुर हसवा) में शिलालेख ।

(२६)

वि० सं० ९८१—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २५१ । धोर्मा "वकुल्ल"

का टूटा हुआ शिलालेख जिसे देवानन्द ने सङ्कलित किया था और जो अब बृटिश म्यूजियम में है।

(२७)

वि० सं० ९८३—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ २५० । योर्ग "वकुलज" का शिलालेख जो अब बृटिश म्यूजियम में है।

(२८)

वि० सं० ९९१—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७७ । सियडोणी शिलालेख का समय।

(२९)

वि० सं० ९९४—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७६ । सियडोणी शिलालेख का समय।

(३०)

वि० सं० ९९६—ज० ब० ए० सो० भाग ६२ पृष्ठ ३११। बीजापुर का शिलालेख जिसमें हस्तिकुंडी के विदग्ध के पुत्र राष्ट्रकूट "मम्मट" के राजत्वकाल का समय है।

(३१)

वि० सं० १००५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७७ । सियडोणी का शिलालेख जिसमें (कन्नौज के) क्षितिपालदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज "देवपालदेव" और सियडोणी के सामन्त महाराजाधिराज "निष्कलङ्क" के राजत्वकाल का समय है।

(३२)

वि० सं० १००५—ए० रि० भाग १ पृष्ठ २८४। एक संस्कृत शिलालेख जो मिस्टर विल्मट को बुद्ध गया में मिला था और जिसका अनुवाद चार्ल्स विल्किन्स ने किया था। इसमें विक्रमादित्य के नवरत्नों में से "अमरदेव" का वर्णन है।

(३३)

वि० सं० १००८–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७७। सियडोणी का शिलालेख जिसमें [सियडोणी के सामन्त] महाराजाधिराज "निष्कलङ्क" के राजत्वकाल का समय है।

(३४)

वि० सं० १००८ और १०१०–मा० ऽ० पृष्ठ ६७ तथा प्रा० ले० मा० भाग २ पृष्ठ २४। महाराणी महालक्ष्मी के पुत्र और नरवाहन के पिता [गुहिल] "अल्लट" के समय का उदयपुर (राजपूताना) में शिलालेख।

(३५)

वि० सं० १०११–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १२४। चन्देल "यशोवर्मन" और "धंग" के समय का खजुराहो में शिलालेख जो देद के पुत्र माधव द्वारा सङ्कलित है। चन्द्रात्रेय ऋषि के वंश में नन्नुक, उसका पुत्र वाक्पति, उसके जयशक्ति और विजयशक्ति, विजयशक्ति का पुत्र राहिल, उसका हर्ष जिसने चाहमान राजकुमारी कंचुका से विवाह किया, उनका पुत्र यशोवर्मन लक्षवर्मन (जो हेरम्बपाल के पुत्र देवपाल के जो वीरा के राजासाही का समकालीन था, समय में हुआ था), और उनाका पुत्र धंग (जिसे विनायकपालदेव भी कहते हैं) हुआ।

(३६)

वि० सं० १०११–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १३६ तथा आ० स० आ० इ० भाग २१। [चंदेल] "धंग" (?) के समय का खजुराहो के जैन मंदिर में शिलालेख।

(३७)

वि० सं० १०११–प्रो० बे० अ० पृष्ठ ८६। राजपूताने में अजमेर में शिलालेख।

(३८)

वि० सं० १०१३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १२४ । सिक्कर के हर्ष शिलालेख में हर्ष (शिव) के एक मन्दिर के बनने का समय

(३९)

वि० सं० १०१६—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ २६६ । गुर्जर मनिहार वंश के सामंत और उसकी पत्नी लच्छुका के पुत्र महाराज धिराज "मथनदेव" का राजोरगढ़ (अलवर) का शिलालेख जो कि (कन्नौज के) क्षितिपालदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज "विजय पालदेव" के राजत्वकाल का है।

(४०)

वि० सं० १०२५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १७८ । सियडोणी का शिलालेख जिसमें सियडोणी के सामन्त महाराजाधिराज "निश्च लंक" के राजत्वकाल का समय है।

(४१)

वि० सं० १०२७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १२४ । सिक्कर के हर्ष शिलालेख में शैव सन्यासी अल्लट की मृत्यु का समय।

(४२)

वि० सं० १०२८—भा० इ० पृष्ठ ७० । गुहिल "नरवाहन" का उदयपुर (राजपूताना) में खण्डित शिलालेख जिसे आदित्यनाग के पुत्र आम्रकवि ने सङ्कलित किया।

(४३)

वि० सं० १०२ [८]—डाक्टर बर्गेस् के फोटो से (आ० स० इ० भाग २३ पृष्ठ १२९) महाराजाधिराज "चामुण्डराज" के राजत्वकाल का सिमनोर (राजपुताना) में शिलालेख।

(४४)

वि० सं० १०३०—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ११९ । चाहमान

'विग्रहराज" का हर्ष शिलालेख जिसे धीरुक के पुत्र धीरनाग ने उत्कलित किया।

चाहमान वंश में गूवक (प्रथम), उसका पुत्र चन्द्रराज, उसका पुत्र गूवक (द्वितीय), उसका पुत्र चन्दन (जिसने तोमर रामकुमार रुद्रेन=रुद्रपाल (?) को पराजित किया), उसका पुत्र वाक्पतिराज (जिसने तन्त्रपाल को पराजित किया), उसका पुत्र सिंहराज (जो केसी "लवण" का समकालीन था), उसका पुत्र विग्रहराज। महाराजाधिराज सिंहराज का एक भाई जिसका नाम वत्सराज था और (विग्रहराज को छोड कर) तीन बेटे दुर्लभराज, चन्द्रराज और गोविन्दराज थे।

(४५)

वि० सं० १०३०—बी० जी० भाग ९ पृष्ठ ३००। चौलुक्य मूलराज प्रथम का बडौदा (पाटन) में दानपत्र।

(४६)

वि० सं० १०३१—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ९१। धरमपुरी (इन्दौर) के परमार महाराजाधिराज वाकपति राजदेव का दानपत्र जो उज्जयनी में दिया गया था। वंशावली इस प्रकार है। कृष्णराज, वैरिसिंह, सीयक, वाकपतिराज-अमोघवर्ष।

(४७)

वि० सं० १०३४—ज० बे० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ३९३। [कच्छपघाट] महाराजाधिराज वज्रदामन के समय का ग्वालियर में एक जैन मूर्तिपद पर खण्डित शिलालेख।

(४८)

वि० सं० १०३४—राजस्थान भाग १ पृष्ठ ८०२। कर्नल टाड उदयपुर के एक शिलालेख का अनुवाद देते हैं जो गुहिल शक्तिकुमार के समय का ज्ञान होता है।

(५८)

वि० सं० १०८०-ए० इं० भाग २ पृष्ठ २११ । मथुरा
जैनमुनि का शिलालेख ।

(५९)

वि० सं० १०८३-इं० ए० भाग १४ पृष्ठ १४० । गौड़
महीपाल और उसके पुत्र स्थिरपाल और वसन्तपाल का सारनाथ (
बनारस कालिज) में शिलालेख ।

(६०)

वि० सं० १०८४-इं० ए० भाग १८ पृष्ठ ३४ । [कन्नौज
विजयपाल देव के उत्तराधिकारी राज्यपाल देव के उत्तराधिकारी म
राजाधिराज त्रिलोचनपाल देव का झूसी (अब बंगाल एशियाटि
सोसायटी) में दानपत्र जो गङ्गा के तट पर प्रयाग के निकट
गया था ।

(६१)

वि० सं० १०८६-इं० ए० भाग ६ पृष्ठ १९३ तथा
इं० पृष्ठ १९४ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव प्रथम का र
पुर में दानपत्र जो अणहिल पाटक में दिया गया था ।

(६२)

वि० सं० १०९३-ए० ई० भाग ९ पृष्ठ ४३२, ज०
ए० सो० भाग ९ पृष्ठ ७३१ तथा को० मि० ए० भाग २ पृष्ठ २९
महाराजाधिराज यशःपाल का करा (अब कलकत्ता म्यूजियम)
शिलालेख ।

(६३)

वि० सं० १०९३-इं० ए० भाग १३ पृष्ठ १८९ । उदयगि
के अमृतगुहा का शिलालेख जिसमें 'चन्द्रगुप्त' और 'विक्रमादित्य'
नाम हैं । यह एक प्रशस्ति है जिसे हरि के पुत्र मित्रशर्मा ने संका

किया। इसमें ये नाम आते हैं—उत्पलराज, आर्ण्धराज (अर्णोराज) अद्भुतकृष्णराज (कृष्णराज) वासुदेव, श्रीनाथघोषी, महिपाल, धन्धुक (धन्धुक) जिसने धूरदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र पूर्णपाल, उसकी छोटी वहिन लाहिनी जिसने विग्रहराज से विवाह किया।

(६४)

वि० सं० १०९९—ज० ब० ए० सो० भाग १० पृष्ठ ६७१। आबू पर्वत के समानान्तर की दक्षिणी पहाड़ी के नीचे वसन्तगढ़ के एक तालाब का शिलालेख।

(६५)

वि० सं० ११००—इ० ए० भाग १४ पृष्ठ १० तथा इ०इ० नम्बर ७। [कच्छपघाट ?] विजयाधिराज (विजयपाल ?) के समय का वियाना में जैन शिलालेख।

(६६)

वि० सं० ११०७—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०५। कालञ्जर के चन्देल महाराजाधिराज देववर्मदेव का नन्योरा (अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) का दानपत्र जो सुहवास में दिया गया था।

विद्याधर, विजयपाल, देववर्मन, (जिसकी माता भुवनदेवी थी)।

(६७)

वि० सं० १११२—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ४८। परमार महाराजाधिराज जयसिंह देव का मानधाता में दानपत्र जो धारा में दिया गया था। उसमें वंशावली इस प्रकार है—

वाक्पतिराज, सिंधुराज, भोज, जयसिंह

(६८)

वि० सं० १११६—ज० ब० ए० सो० भाग ९ पृष्ठ ५४९। उदयपुर (ग्वालियर) का एक नवीन शिलालेख जिसमें परमार उदयादित्य का राज्यकाल संवत ११११६ दिया है।

(६९)

वि० सं० ११२७—ग्रा० स० भाग १ पृष्ठ ४७२ । देवराज के पौत्र तथा धन्धुक के पुत्र परमार महाराजाधिराज **कृष्णराज** के राज्यकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख ।

(७०)

वि० सं० ११२३—ग्रा० स० भाग १ पृष्ठ ४७३ । [परमार] महाराजाधिराज **कृष्णराज** के राज्यकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में खण्डित शिलालेख ।

(७१)

वि० सं० ११३४ और ११३५—डाक्टर फुहरर की एक प्रतिलिपि से । (कल्चुरी वंश के) महाराजाधिराज मर्यादासागरदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज **सोढदेव** का कल्ह जिला गोरखपुर में, (अब लखनऊ म्यूजियम) दानपत्र जो गण्डकी नदी पर धुलियाघट्ट में दिया गया था ।

(७२)

वि० सं ११३६—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८० । परमार **चामुण्डराज** के अर्थूना में शिलालेख का नोटिस जिसे विजयसाधार के छोटे भाई तथा सुमतिसाधार के पुत्र चन्द्र ने सङ्कलित किया ।

परमार नायक के वंश में वैरिसिंह, उसका लघु भ्राता डम्बरसिंह, उसके वंश में कङ्कदेव (जिसने मालव राजा हर्ष के एक शत्रु, कर्नाट के शासक को पराजित किया), उसका पुत्र चण्डप, उसका पुत्र सत्यराज, उसका मण्डनदेव, उसका पुत्र चामुण्डराज (जिसने सिन्धुराज को पराजित किया)।

(७३)

वि० सं० ११३७—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८३ । परमार उदयादित्य का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख ।

(७४)

वि० सं० ११४५—ए० इ० भाग२पृष्ठ२३७तथा आ० स० इ० भाग १० । कच्छपघाट महाराजाधिराज विक्रमसिंह का दुबकुन्ड में शिलालेख जिसे शान्तिषेण के पुत्र विजयकीर्ति ने सङ्कलित किया।

कच्छपघाट वंश में युवराज, उसका पुत्र अर्जुन जो (चन्देल्ल) विद्याधर का सहायक था और जिसने (कन्नौज के) राज्यपाल को युद्ध में मारा, उसका पुत्र अभिमन्यु (जो भोज का समकालीन था) उसका पुत्र विजयपाल, उसका पुत्र विक्रमसिंह।

(७५)

वि० सं० ११४८—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३१७ । चौलुक्य महाराजाधिराज कर्णदेव त्रैलोक्यमल्ल का सूनक में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

(७६)

वि० सं० ११५०—इ० ए० भाग १५ पृष्ठ ३६ तथा प्रा० ले० मा० भाग १ पृष्ठ ८१ । कच्छपघाट महिपालदेव का ग्वालियर में सासबहू के मन्दिर में शिलालेख जिसे राम के पौत्र तथा गोविन्द के पुत्र मणिकण्ठ ने सङ्कलित किया।

कच्छपघाट (कच्छपारि) वंश में लक्ष्मण, उसका पुत्र वज्रदामन (जिसने गाधिनगर अर्थात कन्नौज के अनुशासक को पराजित किया और गोपाद्रि अर्थात ग्वालियर को विजय किया) मङ्गलराज, कीर्तिराज, उसका पुत्र मूल्देव जिसे भुवनपाल और त्रैलोक्यमल्ल भी कहते हैं और जिसने देवव्रता से विवाह किया, उनका पुत्र देवपाल, उसका पुत्र पद्मपाल, जिसका उत्तराधिकारी महीपाल भुवनैकमल्ल हुआ जो कि सूर्यपाल का पुत्र था परन्तु जो पद्मपाल का भाई कहा गया है।

(७७)

वि० सं० ११५२—आ०स०इ० भा०२०पृष्ठ १०२ । दुबकुण्ड के जैनस्तूप का शिलालेख।

(७८)

वि० सं० ११९४–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ११। कन्नौज के
हाराजाधिराज मदनपालदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी वाल
नपत्र जिसमें मदनपालदेव के पिता चन्द्रदेव के वाराणसी
ान का वर्णन है।

यशोविग्रह, उसका पुत्र महीचन्द्र, उसका पुत्र चन्द्रदेव (जिसे
न्यकुब्ज अर्थात् कन्नौज का राज्य पाया था), उसका पुत्र मदनपा
मदनदेव)

(७९)

वि० सं० ११९४–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २३८ तथा आ०
० इ० भाग १०। चन्देल कीर्तिवर्मन तथा उसके मंत्री वत्सराज
देवगढ़ का शिलालेख।

चन्देल्ल वंश में विद्याधर, उसका पुत्र विजयपाल, उसका पुत्र
ीर्तिवर्मन।

(८०)

वि० सं० ११६१–इ० ए० भाग १४ पृष्ठ १०२। कन्नौज
महाराजपुत्र गोविन्दचन्द्रदेव का बसाही (अब लखनऊ म्यूजियम)
का दानपत्र जो यमुना के तट पर आसनिका में दिया गया था।

गाहड़वाल वंश में महीचन्द्र का पुत्र चन्द्रदेव (जो भोज और कर्ण
पश्चात् पृथ्वी का रक्षक था और जिसने अपनी राजधानी कन्याकुब्ज
स्थापित की), उसका पुत्र मदनपाल, उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र।

(८१)

वि० सं० ११६१–इ० ए० भाग १९ पृष्ठ २०२। कन्नौ०
ज महीपालदेव के उत्तर काशी का शासन (अब लखनऊ म्यू-
ज़ियम) में लखिम लिख ... वत्सदेव ने स्थापित किया था।

भुवनपाल, उसका पुत्र अपराजित देवपाल, उसका पुत्र पद्मपाल, महीपाल।

(८२)

वि० सं० ११६१-ए० इ० भाग २ पृष्ठ १८२। परमार नरवर्मदेव का नागपुर म्यूजियम में शिलालेख (इसे कदाचित नरवर्म देव ने स्वयं सङ्कलित किया था)

नायक परमार के वंश में वैरिसिंह, उसका पुत्र सीयक, उसका पुत्र मुञ्जराज, उसका लघुभ्राता सिंधुराज, उसका पुत्र भोज, उसका सम्बन्धी उदयादित्य (जिसने चेदिकर्ण को पराजित किया), उसका पुत्र लक्ष्मदेव, उसका भाई नरवर्मन।

(८३)

वि० सं० ११६२-ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३५९। कन्नौज के महाराजपुत्र गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो गंगा के तट पर विष्णुपुर में दिया गया था।

गाहड़वाल वंश में महीयल का पुत्र चन्द्रदेव, उसका पुत्र मदनपाल उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र। २१ पंक्ति में गोविन्दचन्द्र की माता राल्ह-देवी का वर्णन है।

(८४)

वि० सं० ११६३-(११६४-के स्थान पर)-ज० रा० ए० सो० १८९६ पृष्ठ ७८७। कन्नौज के मदनपालदेव तथा उसकी (!) रानी पृथ्वीश्रिका का दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(८५)

वि० सं० ११६४-प्रा० रि० ए० सो० भाग १ पृष्ठ २२६। दरौदा के मधुकरघर में एक शिलालेख जो परमार **नरवर्मन** के समय काल का है और जिसमें एक सूर्यग्रहण (!) का वर्णन है। इस शिलालेख में सिन्धुराज (सिन्धुल ?), भोज, उदयादित्य और नरवर्मन का वर्णन है।

(८६)

वि० सं० ११६६–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १९ । कन्नौज के महाराज पुत्र गोविन्दचन्द्रदेव का राहन (अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जिसे मदनपालदेव के राजत्वकाल में यमुना तट पर आसनिका में राणक लवराप्रवाह ने दिया था ।

गाहड़वाल वंश में महीतल, चन्द्रदेव, उसका पुत्र मदनपाल, उस का पुत्र गोविन्दचन्द्र ।

(८७)

वि० सं० ११७१–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १०२ । कन्नौज महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

यशोविग्रह, उसका पुत्र महीचन्द्र, उसका पुत्र चन्द्रदेव, उसका पुत्र मदनपाल, उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र ।

(८८)

वि० सं० ११७१–डाक्टर फुहरर की एक प्रतिलिपि से कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का पाली (अब लखनऊ म्यूजियम) में प्रथम दानपत्र ।

(८९)

वि० सं० ११७२–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १०४ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(९०)

वि० सं० ११७३–ए० इ० भाग १ पृष्ठ १४७ । चन्द्रदेव के वि० सं० १०४९ के मथुरा वाले शिलालेख को मन्दिर अपराजितदेव के पुनः नया करके देने का [illegible] ।

(९१)

वि० सं० ११७४—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १०१। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का बसही (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो देवस्थान (?) में दिया गया था।

(९२)

वि० सं० ११७४—(११७५—के स्थान पर ?)—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १९। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का बसही (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र।

(९३)

वि० सं० ११७५—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १०६। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(९४)

वि० सं० ११७६—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १०८। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव और उनकी रानी पट्टमहादेवी महाराज्ञी नयणकेलिदेवी का दानपत्र जो गङ्गा के तट पर [illegible] में दिया गया था।

(९५)

वि० सं० ११७६—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १०९। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(९६)

वि० सं० ११७६—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ ६२, आ० स० इ० भाग १ पृष्ठ ७१ तथा ज० ए० सो० भाग ६१ पृष्ठ ६०। सेट महेट (अब लखनऊ म्यूजियम) का बौद्ध शिलालेख जिसमें गाधिपुर (कन्नौज) के अनुशासक गोपाल और राजा मदन का उल्लेख है। (इसे उदयिन ने अङ्कित किया था)।

(९७)

वि० सं० ११७७—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ १२३
कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का दानपत्र जिसमें (कलचुरी) राजा **यशःकर्णदेव** की दान की हुई भूमि की स्वीकृति है।

(९८)

वि० सं० ११७७—ज० ए० ओ० सो० भाग ६ पृष्ठ ५४२।
कच्छपघाट महाराजाधिराज **वीरसिंहदेव** का दानपत्र जो नलपुर के केले में दिया गया था।

कच्छपघाट वंश में गगनसिंह, उसका उत्तराधिकारी शरदसिंह, उसका पुत्र लक्ष्मीदेवी से वीरसिंह।

(९९)

वि० सं० ११७८—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११०। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१००)

वि० सं० ११८१—ज० ब० ए० सो० भाग ५६ पृष्ठ ११४।
कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उनकी माता **राल्हणदेवी** का बनारस में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०१)

वि० सं० ११८२—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १००। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो गङ्गा के तट पर मदनविहार (अमविहार?) में दिया गया था।

(१०२)

वि० सं० ११८९—(११८२ के स्थान पर?)—ज० ब०

ए० सो० भाग २७ पृष्ठ २४२। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का दानपत्र जो गंगा के तट पर ईशप्रतिष्ठान में दिया गया था।

(१०३)

वि० सं० ११८४—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १११। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०४)

वि० सं० ११८५—ज०ब०ए०सो० भाग ५६ पृष्ठ ११९। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का बनारस में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०५)

वि० सं० ११८६—आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३४। चन्देल्ल महाराज मदनवर्मदेव के समय का कालञ्जर के स्तूप पर लेख।

(१०६)

वि० सं० ११८७—आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३४। चन्देल्ल मदनवर्मदेव का कालञ्जर स्तूप पर लेख।

(१०७)

वि० सं० ११८७—ज०ब०ए०सो० भाग ५६ पृष्ठ १०८। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का रैान (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१०८)

वि० सं० ११८८—आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३५ तथा ज०ब०ए०सो० भाग १७ पृष्ठ ३२१। कालञ्जर के चन्देल्ल महाराजाधिराज मदनवर्मदेव के समय का कालञ्जर चट्टान पर लेख।

(१०९)

वि० सं० ११८८–इ०ए० भाग १९ पृष्ठ २४९ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का रेन (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो बनारस में दिया गया था।

(११०)

वि० सं० ११८९–ए०इ० भाग ९ पृष्ठ ११४ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उनकी माता महारानी **राल्हण देवी** का पाली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र।

(१११)

वि० सं० ११९०–इ०ए० भाग ६ पृष्ठ ५५ । पृथ्वीपालदेव के उत्तराधिकारी तिहुणपालदेव, उनके उत्तराधिकारी महाराजाधिराज **विजयपालदेव** का हङ्गोड़ में शिलालेख।

(११२)

वि० सं० ११९०–ए०इ० भाग ४ पृष्ठ ११२ । कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र।

(११३)

वि० सं० ११९०–इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २०८ । कालञ्जर के चन्देल्ल महाराजाधिराज **मदनवर्मदेव** का बान्दा जिले (अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो मैलस्वामिन के निकट दिया गया था। इसका समय ठीक नहीं है।

चन्द्रात्रेय केवंश में जो जयशक्ति, विजयशक्ति तथा अन्य राजकुमारों से प्रसिद्ध हो चुकी थी कीर्तिवर्मन, तब पृथ्वीवर्मन, और उसके पीछे मदनवर्मन हुए।

(११४)

वि० सं० ११९१–ए०इ० भाग ४ पृष्ठ १११ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव के राजत्वकाल का सिङ्गर महाराज-पुत्र वत्सराजदेव (लोहडदेव) का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(११५)

वि० सं० ११९१–इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३५३ । परमार महाराजाधिराज यशोवर्मदेव का दानपत्र जो धारा में दिया गया था और जिसे उसके पुत्र और उत्तराधिकारी महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव ने अपने उज्जैन वाले दानपत्र में संवत १२०० में स्वीकार किया था।

(११६)

वि० सं० ११९२–ज०व०ए०सो०भाग १७ पृष्ठ ३२२ तथा आ०स०इ०भाग २१ पृष्ठ ३९। कालञ्जर में चट्टान की मूर्ति का शिलालेख।

(११७)

वि० सं० ११९२–इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३४९ तथा इ०इ० नम्बर ९१ । परमार महाराज यशोवर्मदेव का उज्जैन (अब रॉयल एशियाटिक सोसायटी) में दूसरा दानपत्र। इसमें एक मोमलदेवी का वर्णन है जो कदाचित यशोवर्मन की माता थी।

(११८)

वि० सं० ११९४–आ०स०इ० भाग २१ पृष्ठ ३१ । कालञ्जर में नीलकण्ठ मन्दिर के निकट एक गुहा में शिलालेख।

(११९)

वि० सं० ११९५–आ० स० वे० ई० नम्बर २। चौलुक्य महाराजाधिराज जयसिंहदेव के राजत्वकाल का गंद्देश्वरवाला खण्डित शिलालेख।

(१२०)

वि० सं० ११९६–ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३६१ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दान पत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१२१)

वि० स० ११९६–इ० ए० भाग १० पृष्ठ १५९ । चौलुक्य जयसिंहदेव के राजत्वकाल का दोहद में शिलालेख ।

(१२२)

वि० सं० ११९७–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११४ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कामौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१२३)

वि० सं० ११९८–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११२ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१२४)

वि० स० ११९९–इ०ए० भाग १८ पृष्ठ २१ । कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव तथा महाराजपुत्र राज्यपालदेव का गगहा (अब ब्रिटिश म्यूजियम) में दानपत्र ।

(१२५)

वि० सं० ११९९–आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ ५८–६० । गढ़वा के मन्दिर के स्तूपों के शिलालेख ।

(१२६)

वि० सं० १२००–इ०ए० भाग १९ पृष्ठ ३५१ तथा इ०इ० नम्बर २५० । परमार महाकुमार लक्ष्मीवर्मदेव का उज्जैन (अब रोयल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र । इसमें उस दानपत्र को स्वीकार

किया है जो उसके पिता महाराजाधिराज यशोवर्मदेव ने संवत ११९१ में दिया था।

उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, महाकुमार, लक्ष्मीवर्मन।

(१२७)

वि० सं० १२००—ए०इं० भाग ४ पृष्ठ ११९। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का बसौली (अब लखनऊ म्युज़ियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१२८)

वि० सं० १२०१ (१२०२ के स्थान पर) ए०इं० भाग ५ पृष्ठ ११५। कन्नौज के महाराजाधिराज गोविन्दचन्द्रदेव का मछलीशहर (अब लखनऊ म्युज़ियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१२९)

वि० सं० १२०२—ए०रि० व. प्रो. पृष्ठ १७९ तथा भा० इं० पृष्ठ १९८। [जयसिंह] सिद्धराज के उत्तराधिकारी चौलुक्य कुमारपाल के राज्यकाल का राजपूताना के कुछ जनों का महगोल (महूल्पुर) में शिलालेख जिसे प्रसर्वज्ञ ने संकलित किया।

(१३०)

वि० सं० १२०२-इं०ए० भाग १० पृष्ठ १९९। गोदड़क के महामण्डलेश्वर वापनदेव के समय के वि०सं० ११९९ के दोहद शिलालेख के पश्चात्‌लेख में समय।

(१३१)

वि० सं० १२०५—ए० इं० भाग १ पृष्ठ १५३। ग्वालियर के कुछ जनों (श्रेष्ठियों) का खजुराहो के जैन मन्दिर में शिलालेख।

(१३२)

वि० सं० १२०७–आ० स० इ० भाग १० पृष्ठ ९७। चान्दपुर में वराह की प्रतिमा के नीचे लेख।

(१३३)

वि० सं० १२०७–आ० स० इ० भाग १ पृष्ठ ९९। कन्नौज के गोविन्दचन्द्रदेव की रानी गोसल्लदेवी के समय का हथियादह के स्तूप पर शिलालेख।

(१३४)

वि० सं० १२०७–आ० स० इ० भाग २० पृष्ठ ४६ तथा ए० इ० भाग २ पृष्ठ २७६। महाराजाधिराज [अ ?] जयपालदेव के समय का महावन में शिलालेख।

(१३५)

वि० सं० १२०७–ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४२२। चौलुक्य कुमारपालदेव का चित्तौरगढ़ में खण्डित शिलालेख जिसे जयकीर्ति ने सङ्कलित किया।

मूलराज प्रथम,.... .. .., सिद्धराज, कुमारपाल (शाकम्भरि के अनुशासक को पराजित किया तथा स्पादलक्ष देश को उजाड़ा)

(१३६)

वि० सं० १२०८–ए० इ० भाग १ पृष्ठ २९६। कुमारपाल के राजत्वकाल का वड़नगर का शिलालेख जिसे श्रीपाल ने सङ्कलित किया था।

चुलुक्य के वंश में मूलराज प्रथम (जिसने चापोत्कट राजकुमारों को पराजित किया), उसका पुत्र चामुण्डराज, उसका पुत्र वल्लभराज, उसका भाई दुर्लभराज, भीम प्रथम, उसका पुत्र कर्ण, उसका पुत्र जयसिंह सिद्धाधिराज, कुमारपाल (जिसने अर्णोराज को पराजित किया)।

(१३७)

वि० सं० १२०८–ए० इं० भाग ९ पृष्ठ ११७। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** तथा उसकी रानी पट्टमहादेवी महाराज्ञी गोसलदेवी का बहुवान (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था। समय ठीक नहीं है।

(१३८)

वि० सं० १२०८–आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ४९। चन्देल्ल **मदनवर्मन** के राजत्वकाल का अजयगढ में शिलालेख।

(१३९)

वि० सं० १२०८–ज० ये० ए० सो० १८९८ पृष्ठ १०१। ग्रहपति वंश के कुछ लोगों का हॉर्निमेन म्यूजियम में जैनमूर्ति का शिलालेख।

(१४०)

वि० सं० १२०९–भा० इं० पृष्ठ १७२। चौलुक्य महाराजाधिराज **कुमारपालदेव** के राजत्वकाल का केरडू में खण्डित शिलालेख जिसमें नदूल के महाराज अल्हणदेव की एक आज्ञा तथा महाराजपुत्र केल्हणदेव का वर्णन है।

(१४१)

वि० सं० १२१०–इं०ए० भाग २० पृष्ठ२१०। अजमेर का शिलालेख जिसमें शाकम्भरी के चाहमान महाराजाधिराज **विग्रहराजदेव** के बनाए हुए हरकेलि नाटक के कुछ भाग हैं।

(१४२)

वि० सं० १२११–ए० इं० भाग ४ पृष्ठ ११६। कन्नौज के महाराजाधिराज **गोविन्दचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१४३)

वि० सं० १२११—आ० स० इं० भाग २१ पृष्ठ ७३। चन्देल मदनवर्मदेव के राज्यकाल का महोबा की मूर्ति पर शिलालेख।

(१४४)

वि० सं० १२१४—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३११। जापिल के नायक प्रतापधवल के तुत्राही फाल्स चट्टान के शिलालेख का समय।

(१४५)

वि० सं० १२१५—आ० स० वे० इ० भाग २ पृष्ठ १६७। गिरनार का शिलालेख।

(१४६)

वि० सं० १२१५—ए० इ० भाग १ पृष्ठ १५२। चन्देल मदनवर्मदेव के राज्यकाल का ग्रहपति वंश के कुछ जनों का खजुराहो की मूर्ति पर शिलालेख।

(१४७)

वि० सं० १२१६—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१४ तथा आ० स० इ० भाग २१। दाहाल के कलचुरी (छेदी) महाराजाधिराज नरसिंहदेव तथा महाराणक जाल्हण के पुत्र राणक छोहुल के समय का अल्हघाट में शिलालेख।

(१४८)

वि० सं० १२१८—ज० ब० ए० सो० भाग १९ पृष्ठ ३० तथा इ० इ० नम्बर १०। चाहुमान महाराज आल्हणदेव का नदोल (अब रोयल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र।

चाहुमान वंश में नदूल में लक्ष्मण था, उसका पुत्र सोहिय, उसका पुत्र बलिराज, उसका चचा विग्रहपाल, उसका पुत्र महेन्द्र,

सका पुत्र अणहिल, उसका पुत्र बाल्प्रसाद, उसका भाई जेन्द्रराज, सका पुत्र पृथिवीपाल, उसका भाई जोज्जल, उसका भाई आसाराज, सका पुत्र आल्हणदेव।

(१४९)

वि० सं० १२१९—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १५८। चन्देल्ल हाराजाधिराज मदनवर्मदेव के दानपत्र (जो भार्लिदुर्ग में लिखा या था) का समय। इसे उसके पौत्र और उत्तराधिकारी परमार्दिदेव वि० सं० १२२३ में स्वीकार किया।

(१५०)

वि० सं० १२२०—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ३४३। चौलुक्य महाराजाधिराज कुमारपालदेव के राजत्वकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में खण्डित शिलालेख।

(१५१)

वि० सं० १२२०—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ २१८। शाकम्भरी के अवेल्लदेव के पुत्र चाहुमान वीसलदेव-विग्रहराज का देहली सिवालिक स्तूप पर शिलालेख।

(१५२)

वि० सं० १२२२—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ३४४। उदयपुर (ग्वालियर) स्तूप का शिलालेख।

(१५३)

वि० सं० १२२३—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १७० । कालञ्जराधिपति चन्देल्ल महाराजाधिराज परमार्दिदेव का सेम्र (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जिसमें उसने अपने दादा और पूर्वज मदनवर्म देव के संवत् १२१९ के दान को स्वीकार किया है यह दानपत्र सेमरा में दिया गया था।

चन्द्रात्रेय राजकुमारों के वंश में पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन, उसका पौत्र परमारदिदेव कालिंजर का राजा हुआ। इस वंश में प्रसिद्ध राजा विजयशक्ति और जयशक्ति आदि हुए।

(१९४)

वि० सं० १२२४—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ७४। कालञ्जराधिपति चन्देल्ल परमारदिदेव के राजत्वकाल का महोबा की मूर्ति पर शिलालेख।

(१९५)

वि० सं० १२२४—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ११८। कन्नौज के महाराजाधिराज विजयचन्द्रदेव तथा उसके पुत्र युवराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

यशोविग्रह, उसका पुत्र महीचन्द्र, उसका पुत्र चन्द्रदेव, उसका पुत्र मदनपाल, उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र, उसका पुत्र विजयचन्द्र, उसका पुत्र युवराज जयचन्द्र।

(१९६)

वि० सं० १२२४—ए० ई० भाग १९ पृष्ठ ४४३—४४६। हांसी का एक शिलालेख जो कि मत्लक्ष चाहमान पृथ्वीराज के राजत्वकाल का है।

(१९७)

वि० सं० १२२५—आ० स० इ० भाग ११ पृष्ठ १२९। कन्नौज के विजयचन्द्रदेव (?) के राजत्वकाल का जौनपुर के स्तूप पर शिलालेख।

(१९८)

वि० सं० १२२५—इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ७ तथा इ० ए०

म्बर १२। कन्नौज के महाराजाधिराज **विजयचन्द्रदेव** तथा उनके त्र युवराज **जयचन्द्रदेव** का गयन एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र।

(१५९)

वि० सं० १२२५—सर ए० कनिंघाम की प्रतिलिपि से। पालि के नायक **प्रतापधवल** का फुलवरिया (रोहतासगढ़) में शिलालेख।

(१६०)

वि० सं० १२२५—ज० ए० ओ० सो० भाग ६ पृष्ठ ५४८ पालि के महानायक **प्रतापधवलदेव** का ताराचण्डी चट्टान पर शिला-ख जिसमें उन्होंने कन्नौज के **विजयचन्द्र** के एक ताम्रपत्र लेख को ली प्रकाशित किया है।

(१६१)

वि० सं० १२२६—ज० ब० ए० सो० भाग ५५ पृष्ठ ४०। हमान **सोमेश्वर** के राजत्वकाल का बिझोली चट्टान पर शिलालेख। समें चाहमान कुल की वंशावली दी है।

(१६२)

वि० सं० १२२६—ज० ब० ए० सो० भाग ५५ पृष्ठ ४६। हमान पृथ्वीराज के राजत्वकाल का मेनालगढ़ में शिलालेख।

(१६३)

वि० सं० १२२६—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२१। कन्नौज महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्युजियम) दानपत्र जो बडविह में दिया गया था।

यशोविग्रह, उसका पुत्र महीचन्द्र, उसका पुत्र चन्द्रदेव, उसका त्र मदनपाल, उसका पुत्र गोविन्दचन्द्र, उसका पुत्र विजयचन्द्र, उसका त्र जयचन्द्र।

(१६४)

वि० सं० १२२७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ४६। अजयगढ़ के ऊपरी फाटक पर शिलालेख।

(१६५)

वि० सं० १२२८—इ० ए० भाग २६ पृष्ठ २०६ तथा ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १६६। कालञ्जराधिपति चन्देल महाराजाधिराज **परमार्दिदेव** का इच्छावर में दानपत्र जो विल्सपुर में दिया गया था।

(१६६)

वि० सं० १२२८—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२२। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वेणी के तट पर प्रयाग में दिया गया था।

(१६७)

वि० सं० १२२९—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ३४७। चौलुक्य महाराजाधिराज **अजयपालदेव** के राजत्वकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख।

(१६८)

वि० सं० १२३०—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२४। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१६९)

वि० सं० १२३१—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२६। कन्नौज के महाराजाधिराज **जयचन्द्रदेव** का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो काशी में दिया गया था। समय ठीक नहीं है।

(१७०)

वि० सं० १२३१ (१२३० के स्थान पर?)—इ० ए०

भाग १८ पृष्ठ ८२ । जयसिंहदेव के उत्तराधिकारी कुमारपालदेव के उत्तराधिकारी चौलुक्य महाराजाधिराज अजयपालदेव के राजत्वकाल का दानपत्र जिसमें चाहुयाण (चाहमान) वंश के महामण्डलेश्वर वैजल्लदेव के दान का उल्लेख है । यह ब्राह्मणपाटक में लिखा गया था । यह दानपत्र सवत् १२३९ में खोदा गया था ।

(१७१)

वि० सं० १२३२–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२७ । कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो काशी में दिया गया था और जिसमें राजा के पुत्र हरिश्चन्द्र का वर्णन है ।

(१७२)

वि० सं० १२३२–इ०ए० भाग १८ पृष्ठ १३० । कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बनारस कालेज में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था और जिसमें राजा के पुत्र हरिश्चन्द्र का वर्णन है ।

(१७३)

वि० सं० १२३२–आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १२५ । गोविन्दपालदेव के राजत्वकाल का गया में शिलालेख ।

(१७४)

वि० सं० १२३३–ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १२९ । कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१७५)

वि० सं० १२३३–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३५ । कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था ।

(१७६)

वि० सं० १२३३-इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३७ कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दूसरा दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१७७)

वि० सं० १२३३-ज० ब० ए० सो० भाग ३८ पृष्ठ २१। बुलंदशहर से अनंग का दानपत्र। इसमें ये नाम दिए हैं—चन्द्रक, धरणीवराह, प्रभास, भैरव, रुद्र, गोविन्दराज, यशोधर, हरदत्त, त्रिभुवनादित्य, भोगादित्य, कुलादित्य, विक्रमादित्य, पद्मादित्य, भोजदेव, सहजादित्य, (राजराज ?) अनङ्ग।

(१७८)

वि० सं० १२३४-इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १३८। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था।

(१७९)

वि० सं० १२३५ और १२३६—ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ७३६। परमार महाकुमार हरिश्चन्द्र देव का पिप्लिआ नगर में दानपत्र जो नरमदा के तट पर किसी स्थान पर दिया गया था।

उदयादित्य, नरवर्मन, यशोवर्मन, जयवर्मन, महाकुमार हरिश्चन्द्र जो महाकुमार लक्ष्मीवर्मन के पुत्र थे।

(१८०)

वि० सं० १२३६-इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १४०। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बंगाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो गंगा के तट पर रन्धरै में दिया गया था।

(१८१)

वि० सं० १२३६-इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १४१। कन्नौज

के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बंगाल एशियाटिक सोसायटी में दूसरा दानपत्र जो गंगा के तट पर रण्डवे में दिया गया था।

(१८२)

वि० सं० १२३६—ज० ए० भाग १८ पृष्ठ १४२। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का बंगाल एशियाटिक सोसायटी में दूसरा दानपत्र जो गंगा के तट पर रण्डवे में दिया गया था।

(१८३)

वि० सं० १२३९—आ० स० इ० भाग १० तथा भाग २१ पृष्ठ १७३ व १७४। अर्णोराज के पौत्र तथा सोमेश्वर के पुत्र चाहमान पृथ्वीराज का जेजाकभुक्ति के चन्देल्ल परमार्दिदेव के पराजित करने का मदनपुर में शिलालेख।

(१८४)

वि० सं० १२३९—बो० ग० भाग १ पृष्ठ ४७४। महाराज पुत्र (?) जयतसिंहदेव (?) के राजत्वकाल का भिमाल (श्रीमाल) में शिलालेख।

(१८५)

वि० सं० १२४—(?)—प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ ७७। बुद्धगया का बौद्ध शिलालेख जिसमें कन्नौज के जयचन्द्रदेव का वर्णन है और जिसे सौद के पुत्र मनोरथ ने सङ्कलित किया था।

(१८६)

वि० सं० १२४०—डाक्टर बरगेस की प्रतिलिपियों से। चन्देल्ल परमार्दिदेव के राजत्वकाल का कालञ्जर की चट्टान पर शिलालेख।

(१८७)

वि० सं० १२४०—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ७२। महोबा के दुर्ग की दीवाल का खण्डित शिलालेख।

(१८८)

वि० सं० १२४३—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १०। झा
गढ़ के ऊपरी फाटक पर का शिलालेख।

(१८९)

वि० सं० १२४३—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १० तथा इ० ए० ६
१३। कन्नौज के महाराजाधिराज जयचन्द्रदेव का फैजाबाद (अब ए
एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो वाराणसी में दिया गया था

(१९०)

वि० सं० १२४४—आ० स० इ० भाग २० पृष्ठ ९९
महनगढ़ दुर्ग के फाटक पर के स्तूप का शिलालेख।

(१९१)

वि० सं० १२४४—आ० स० इ० भाग ६ पृष्ठ १९६। चन्द
पृथ्वीराजदेव के राजत्वकाल का बीसलपुर स्तूप का शिलालेख।

(१९२)

वि० सं० १२४७(?)—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ४७। क
के पृथ्वीराज तृतीय के समय का दनापुर (अब नागपुर म्युजियम)
शिलालेख जिसे रनसिंह के पुत्र देवपाल ने संस्थापित किया था।

(१९३)

वि० सं० १२५३—ए० इ० भाग १ पृष्ठ २०८। बौ
[illegible] और [illegible] (उसके पुत्र) पृथ्वी
[illegible] (अब [illegible] म्युजियम) में शिलालेख जिसे [illegible]
[illegible] के पुत्र [illegible] ने संस्थापित किया था।

[illegible] में [illegible], उसका पुत्र [illegible]
[illegible]।

(१९४)

वि० सं० १२५३—ए० ए० भाग १० पृष्ठ २१८ [illegible]

बेसाने कल्चुरी (चेदी) महाराजाधिराज विजयदेव के राज्य काल का ककरेडी के महाराणक सल्लक्षणवर्मदेव का रीवाँ (अब ब्रिटिश म्यूजियम) में दानपत्र जो ककरेडी में दिया गया था।

धाहिल्ल, वाजुक, दन्दुक, भोजुक, जयवर्मन, उसका पुत्र वत्सराज, उसके पुत्र कीर्तिवर्मन और सल्लक्षणवर्मन

(१९५)

वि० सं० १२६३—आ० स० इ० भाग ११ पृष्ठ १२९ । कन्नौज के एक अनुनामक का बेल्वार स्तूप पर शिलालेख।

(१९६)

वि० सं० १२६६—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ ७१ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का पाटन में दानपत्र जो अणहिल्लपाटक में दिया गया था।

मूलराज प्रथम, चामुण्डराज, दुर्लभराज, भीम प्रथम, कर्णत्रैलोक्य-मल्ल, जयसिंह-सिद्धचक्रवर्तिन, कुमारपाल, अजयपाल, मूलराज द्वितीय, भीम द्वितीय, अभिनवसिद्धराज।

(१९७)

वि० सं० १२६६—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ २५४ । परमार महाकुमार उदयवर्मदेव का भूपाल में दानपत्र जो रेवा के तट पर गुवा-डाघट्ट में दिया गया था।

यशोवर्मन, जयवर्मन, महाकुमार लक्ष्मीवर्मन, महाकुमार हरिश्चन्द्र, उसका पुत्र महाकुमार उदयवर्मन।

(१९८)

वि० सं० १२५८—ज० ब० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ ३१३ तथा आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ३७। चन्देल्ल परमर्दिदेव का कालञ्जर में शिलालेख जिसे उसने स्वयं सङ्कलित किया था।

(१९९)

वि० सं० १२६३–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९४ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का कडी में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

(२००)

वि० सं० १२६२—आ०ग० भाग १ पृष्ठ ४७४ । महाराजाधिराज उदयसिंहदेव के राज्यकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख।

(२०१)

वि० सं० १२६४–इ०ए० भाग ११ पृष्ठ ३३७ । चौलु महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राज्यकाल का मेहर राजा जगमा का तिमाणा में दानपत्र जो तिवाणक में दिया गया था।

(२०२)

वि० सं० १२६५–इ० ए० भाग ११ पृष्ठ २२१ । चौलु महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राज्यकाल का आबु पर्वत प शिलालेख, जिस समय परमार माण्डलिक धारावर्षदेव (जिसके युवरा प्रह्लादनदेव थे) चन्द्रावती में राज्य करते थे । यह लक्ष्मीधर द्वार संकलित किया गया था।

(२०३)

वि० सं० १२६६–इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ११२ तथा इ० ई० नम्बर ११ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राज्यका का [illegible] सोमापति में दानपत्र जो अणहिलपाटक में दिया गया था।

(२०४)

वि० सं० १२६७–आ० स० प० सं० भाग ९ पृष्ठ २२८ ।

परमार अर्जुनवर्मदेव का पिप्लिआनगर में दानपत्र जो मण्डपदुर्ग में दिया गया था।

परमार वंश में भोज, उसके पीछे उदयादित्य, उसका पुत्र नरवर्मन, उसका पुत्र यशोवर्मन, उसका पुत्र अजयवर्मन उसका पुत्र विन्ध्यवर्मन, उसका पुत्र सुभटवर्मन, उसका पुत्र अर्जुन (अर्जुनवर्मन) जिसने जयसिंह को पराजित किया।

(२०५)

वि० सं० १२६९—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ९०। चन्देल्ल राजा त्रैलोक्यवर्मदेव के राजत्वकाल का अजयगढ़ में शिलालेख।

(२०६)

वि० सं० १२७०—ज० अ० ओ० सो० भाग ७ पृष्ठ ३२। परमार महाराज अर्जुनवर्मदेव का भूपाल में दानपत्र जो भृगुकच्छ में दिया गया था।

(२०७)

वि० सं० १२७२—ज० अ० ओ० सो० भाग ७ पृष्ठ २६। परमार महाराज अर्जुनवर्मदेव का भूपाल में दानपत्र जो रेवा और कपिला के सङ्गम पर अमरेश्वर तीर्थ में दिया गया था।

(२०८)

वि० सं० १२७२—ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ १८६। मेहर राजा रणसिंह के समय का शियाल बेट मूर्ति का शिलालेख। इसका समय ठीक नहीं है।

(२०९)

वि० सं० १२७३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४३९ तथा भा० इ० पृष्ठ १९९। चौलुक्य भीमदेव द्वितीय के समय का वेरावल (सोमनाथदेव पट्टन) में खण्डित शिलालेख जिसमें श्रीधर और वस्त्राकुल वंश-

के और लोगों तथा मूलराज प्रथम से लेकर भीमदेव द्वितीय तक अ
हिलवाड़ के चौलुक्य राजाओं की प्रशंसा है।

(२१०)

वि० सं० १२७३—ज० ब० ए० सो० भाग १९ पृष्ठ ४९
जौनपुर जिले का शिलालेख जिसमें एक रेहननामा है।

(२११)

वि० सं० १२७४—या० ग० भाग १ पृष्ठ ४७१। महारा
धिराज उदयसिंहदेव के राजत्वकाल का भिमाल (श्रीमाल)
खण्डित शिलालेख।

(२१२)

वि० सं० १२(७)८—आ० इ० पृष्ठ २०९। चौलुक्य महारा
धिराज भीमदेव द्वितीय के राजत्वकाल का भराणा का खण्डित शिलाले

(२१३)

वि० सं० १२७५—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ३११ तथा के
टै० वे० इ० पृष्ठ ११०। धारा के परमार महाराजाधिराज देवपाल
के राजत्वकाल का हरसौदा (अब अमेरिकन ओरिएण्टल सोसायटी
में शिलालेख।

(२१४)

वि० सं० १२७९—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३११। राजा (सिंह
प्रतार के समय का रेहननामा की चट्टान पर शिलालेख।

(२१५)

वि० सं० १२८०—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९९। चौलु
महाराजाधिराज जयन्तसिंहदेव का कडी में दानपत्र जो अनहिलपु
में दिया गया था।

भीम द्वितीय तक संख्या १९६ के ऐसा, उसके पश्चात् उसके स्थान पर जयन्तसिंह-अभिनवसिद्धराज ।

(२१६)

वि० सं० १२८३—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १९९ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का कडी में दानपत्र जो अणहिल्लपाटक में दिया गया था ।

मूलराज प्रथम, चामुण्डराज, वल्लभराज, दुर्लभराज, इसके पीछे भीम द्वितीय तक संख्या १९६ ऐसा ।

(२१७)

वि० सं० १२८६—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८३ । धारा के परमार देवपालदेव के राज्यकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख ।

(२१८)

वि० सं० १२८७—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०१ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का कडी में दानपत्र जो अणहिल्लपाटक में दिया गया था । इसका समय ठीक नहीं है ।

(२१९)

वि० सं० १२८७(?)—कापवाटे सम्पादित सोमेश्वरकृत कीर्तिकौमुदी, एपेंडिक्स बी० तथा भा० इ० पृष्ठ २१८ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय तथा चन्द्रावती के परमार महामण्डलेश्वर राजकुल सोमसिंहदेव (जिसका पुत्र कान्हणदेव था) के राज्यकाल का आबू पर्वत पर शिलालेख जिसमें लवणप्रसाददेव के पुत्र चौलुक्य(बघेल) महामण्डलेश्वर राणक वीरधवलदेव का वर्णन है ।

(२२०)

वि० सं० १२८७(?)—ए० इ० भाग ८ पृष्ठ २०१ । काप-

वटे सम्पादित सोमेश्वरकृत-कीर्तिकौमुदी एपेंडिक्स ए०, तथा भा० इ० पृष्ठ १७४ । आबू पर्वत का शिलालेख जिसमें वीरधवल के मंत्री वस्तुपाल और तेजहपाल की (सोमेश्वर से) प्रशंसा है और चौलुक्य (बघेला) अर्णोराज, लवणप्रसाद और **वीरधवल** तथा चन्द्रावती के परमार धूमराज, धन्धुक, ध्रुवभट, रामदेव, उसके छोटे भाई यशोधवल (जिसने चौलुक्य कुमारपाल के शत्रु, मालव के राजा बल्लाल को पराजित किया), उसके पुत्र धारावर्ष, उसके छोटे भाई प्रह्लादन (जो सामन्तसिंह से लड़ा) धारावर्ष के पुत्र **सोमसिंहदेव** और उसके पुत्र कृष्णराजदेव का वर्णन है ।

(२२१)

वि० सं० १२८८—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०१। चौलुक्य महाराजाधिराज **भीमदेव द्वितीय** का कडी में दानपत्र जो अणहिल्पाटक में दिया गया था ।

(२२२)

वि० सं० १२८८—आ० स० वे० इ० भाग २ पृष्ठ १७०। मंत्री वस्तुपाल और तेजहपाल के मन्दिर का गिरनार में शिलालेख जिसमें चौलुक्य (बघेला) लवणप्रसाददेव तथा उसके पुत्र **वीरधवलदेव** का वर्णन है ।

(२२३)

वि० सं० १२८८ अथवा १२८९—आ० स० वे० इ० भाग २ पृष्ठ १७३ तथा ए० री० बा० प्रे० पृष्ठ ३१९ । मंत्री वस्तुपाल का गिरनार में शिलालेख ।

(२२४)

वि० सं० १२८९—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८३ । धारा के परमार महाराजाधिराज **देवपालदेव** के राज्यकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख ।

(२२५)

वि० सं० १२९५–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०५ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल्ल-पाटक में दिया गया था ।

(२२६)

वि० सं० १२९६–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०६ । चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल्ल-पाटक में दिया गया था ।

(२२७)

वि० सं० १२९६–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ११९ । कीरग्राम में वैद्यनाथ के मन्दिर का जैन शिलालेख ।

(२२८)

वि० सं० १२९७–इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २३१ । त्रिकलि-ङ्गाधिपति चन्देल्ल महाराजाधिराज त्रैलोक्यवर्मदेव के राजत्वकाल का ककरेडी के महाराणक कुमारपालदेव का रीवां (अब बृटिश म्यूजि-यम) में दानपत्र ।

कौरव वंश में महाराणक धाहिल्ल, उसका पुत्र दुर्जय, उसका पुत्र शोजवर्मन, उसका पुत्र जयवर्मन, उसका पुत्र वत्सराज, उसका पुत्र सल्लक्षणवर्मन उसका पुत्र हरिराज, उसका पुत्र कुमारपाल ।

(२२९)

वि० सं० १२९८–इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २३५ । चन्देल्ल महाराज त्रैलोक्यमल्ल के राजत्वकाल का ककरेडी के महाराणक हरि-राजदेव का रीवां (अब बृटिश म्यूजियम) में दानपत्र ।

धाहिल्ल से वत्सराज तक संख्या २२८ में वत्सराज का पुत्र कीर्तिवर्मन, उसका भाई सल्लक्षणवर्मन, उसका पुत्र [व] आह [इ] वर्मन, उसका भाई हरिराज ।

(२३०)

वि० सं० १२९९–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २०८ । चौलु महाराजाधिराज त्रिभुवनपालदेव का कड़ी में दानपत्र जो अणहिल्ल टक में दिया गया था ।

मूलराज प्रथम से भीम द्वितीय तक के लिये संख्या २१६ देखें भीम द्वितीय के पश्चात त्रिभुवनपाल ।

(२३१)

वि० सं० १३००–ए० री० पृष्ठ १८६ । सियालबेट मूर्ति का शिलालेख ।

(२३२)

वि० सं० १३०५–ब्रा० ग० भाग १ पृष्ठ ४७६ । महाराज धिराज [उदय] सिंहदेव के राजत्वकाल का भिमाल (श्रीमाल में खण्डित शिलालेख ।

(२३३)

वि० सं० १३११–ए० इ० भाग १ पृष्ठ २९ । वीरधवल पुत्र चौलुक्य (बघेला) वीसलदेव का दभोई का खण्डित शिलाले जिसे सोमेश्वर ने सङ्कलित किया ।

(२३४)

वि० सं० १३१२–इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८४ । धारा परमार महाराजाधिराज जयसिंहदेव के राजत्वकाल का राहतगढ़ शिलालेख ।

(२३५)

वि० सं० १३१५–ए० रि० बा० प्रे० पृष्ठ १८६ । सियाल बेट की मूर्ति का शिलालेख ।

(२३६)

वि० सं० १३१७–इ० ए० भाग ६ पृष्ठ २१० । चौलुक्य

(बाघेला) महाराजाधिराज वीसलदेव के राजत्वकाल का कडी में दानपत्र जिसमें मण्डली के लूणपसाजदेव के पौत्र तथा संग्रामसिंहदेव के पुत्र महामण्डलेश्वर राणक सामन्तसिंहदेव के दान का उल्लेख है।

(२१७)

वि० सं० १३१७–ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३२७ तथा आ० स० इ० भाग २१ चन्देल वीरवर्मन तथा उसकी रानी कल्याणदेवी का अजयगढ़ चट्टान का शिलालेख, जिसे वत्सराज के पौत्र तथा हरिपाल के पुत्र ने सङ्कीर्ण किया।

चन्द्रवंश में कीर्तिवर्मन (जिस ने चेदी कर्ण को पराजित किया) उस का पुत्र सल्लक्षण, जयवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदन, परमर्दिन, त्रैलोक्यवर्मन, उस का पुत्र वीरवर्मन जिस ने महेश्वर और वीसलदेवी की पुत्री कल्याणदेवी से विवाह किया। यह वीसलदेवी कुमार गोविन्दराज की पुत्री थी और महेश्वर दधीचि जाति के चादल का पौत्र तथा श्रीपाल का पुत्र था।

(२१८)

वि० सं० १३१८–डाक्टर बर्गेस की एक प्रतिलिपि में। चन्देल वीरवर्मन (?) का हांसी (अब लखनऊ म्यूज़ियम) में शिलालेख।

(२१९)

वि० सं० १३२०–इ० ए० भाग ११ पृष्ठ २४२ तथा भा० इ० पृष्ठ २२४ चौलुक्य (बाघेल) महाराजाधिराज अर्जुनदेव के राजकाल का वीरावल में शिलालेख।

* ग्रन्थकार ने सर्वत्र शिलालेख लिखा है इस से यह नहीं कह सकते कि कौन ताम्रलेख है और कौन शिलालेख।

(२४०)

वि० सं० १३२०—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ ४७७ | भिन्न (श्रीमाल) का शिलालेख जिसे सुभट ने संकलित किया था।

(२४१)

वि० सं० १३२४—ज० ब० ए० सो० भाग ५५ | पृष्ठ मेवाड़ के गुहिल महाराज तेजसिंहदेव के राजकाल का चित्तौड़गढ़ शिलालेख।

(२४२)

वि० सं० १३२५—आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १२७ गयासुद्दीन बल्बन (?) के समय का वनराजदेव (?) का गया शिलालेख।

(२४३)

वि० सं० १३२५—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ५१, चन्देल वीरवर्मन के राजकाल का अजयगढ़ में शिलालेख।

(२४४)

वि० सं० १३२६—डाक्टर हुल्श की प्रतिलिपि से, धार परमार जैसिंघदेव (जयसिंहदेव) के राजकाल का पथारी में शिलालेख

(२४५)

वि० सं० १३२९—इ० ए० भाग ११ पृष्ठ १०९, कोडिनार का शिलालेख जिसमें चौलुक्य (बाघेला) वीसलदेव के कर्मचारी नानाक की प्रशंसा है और जिसे गणपतिव्यास ने सङ्कलित किया था

(२४६)

वि० सं० १३३०—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ ४७८, भिनमाल (श्रीमाल) का खण्डित शिलालेख जिसमें महाराजाधिराज उदयसिंहदेव का नाम आया है—इसे सुभट ने संकलित किया।

(२४७)

वि० सं० १३३१—ऍ० इ० भाग २२ पृष्ठ ८०, भा०इ० पृष्ठ ७४, तथा आ० म० इ० भाग २३, मेदपाट (मेवाड़) के गुहिलवंश का चित्तौर में शिलालेख जिसे वेदशर्मन ने संकलित किया। इस में नीचेलिखे राजाओं की प्रशंसा है—बप्पा, गुहिल, भोज, शील, कालभोज, मत्त्लट, भर्तृभट, सिंह, महायक, शुम्माण, अल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, शुचिवर्मन, आम्रप्रसाद, नरवर्मन।

(२४८)

वि० सं० १३३२—इ० ए० भाग २१ पृष्ठ २७७। चौलुक्य (वाघेला) महाराजाधिराज सारङ्गदेव के राजकाल का खोखा का खण्डित शिलालेख।

(२४९)

वि० सं० १३३३—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ ४८०, महाराजकुल [चा] चिगदेव के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख जिसे सुभट ने सकलित किया।

(२५०)

वि० सं० १३३४—बॉ० ग० भाग १ पृष्ठ २८१, महाराजकुल चाचिग के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख।

चाहुमान वंश में महाराजकुल समरसिंह; उसका पुत्र महाराजाधिराज उदयसिंहदेव; उसका पुत्र वाहड़सिंह; और [उसका पुत्र ?] चामुण्डराजदेव।

(२५१)

वि० सं० १३३२—ज० ब० ए० सो० भाग २२ पृष्ठ ५८। मेदपाट (मेवाड़) के तेजसिंह और उनकी स्त्री जयतल्लदेवी के पुत्र गुहिल सामर सिंह के राजकाल का चित्तौरगढ़ में शिलालेख।

(२५२)

वि० सं० १३३८—डाक्टर बरगेस की एक प्रतिलिपि से, च,
क्य (वाघेला) महाराजाधिराज **सारङ्गदेव** के राजकाल का दे.
म्यूजियम में शिलालेख ।

(२५३)

वि० सं० १३३७—ज० ब० ए० सो० भाग ४३ पृष्ठ १०४,
हम्मीर **गयासदीन (गिया सुद्दीन बल्बन)** के समय
जिले के बोहेर गांव की "पालम बावली" का शिलालेख ।

हरियाणक देश में पहिले तोमर लोग राज्य करते थे, उसके
पश्चात् चौहान लोग और उसके पश्चात् निचेलिखे शक राजा
साहबदीन (शहाबुद्दीन गोरी), खुद्बदीन (कुतबुद्दीन ऐबक),
समदीन (शमसुद्दीन अल्तमिश), पेरूज-साहि (रुक्नुद्दीन फीरोजशाह
प्रथम) जलालदीन (जलालुद्दीन), मौजदीन (मुईजुद्दीन बहराम),
अलावदीन (अलाउद्दीन मसऊद), नसरदीन (नासिरुद्दीन महमूद)
और गयासदीन (गियासुद्दीन बल्बन) ।

(२५४)

वि० सं० १३३७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ५२ । च
न्देल वीरवर्मदेव के राजकाल का अजयगढ़ की चट्टान पर शिलालेख ।

(२५५)

वि० सं० १३३७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ७४ । का
लञ्जराधिपति चन्देल महाराजाधिराज वीरवर्मदेव का दादि में दानपत्र

चन्द्रात्रेय राजकुमारों के वंश में मदनवर्मन, त्रैलोक्यवर्मन, वीरव
र्मन इस वंश में प्रसिद्ध ये लोग हुए, जयशक्ति और विजयशक्ति आदि

(२५६)

वि० सं० १३३०—ज० ए० भाग १ पृष्ठ १८३, महाराज

कुल साम्वन्तसिंहदेव (?) के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में खण्डित शिलालेख ।

(२५७)

वि० सं० १३४०—ए० इ० भाग ४ पृष्ठ ३१३ , महाराजकुल साम्य (म ?) न्तसिंहदेव के राजकाल का रूपादेवी का 'बुर्ज' (अब जोधपुर) में शिलालेख ।

समरसिंह; उस का उत्तराधिकारी उदयसिंह; उस का पुत्र चाहुमान चाच (चाच ?); उस की पुत्री (लक्ष्मीदेवी से) रूपादेवी जो राणा तेजसिंह की पत्नी हुई और जिस का पुत्र क्षेत्रसिंह हुआ ।

(२५८)

वि० सं० १३४०—डाक्टर बर्गेस की एक प्रतिलिपि से, कालञ्जर का शिलालेख ।

(२५९)

वि० सं० १३४२—डाक्टर हार्नली की एक प्रतिलिपि से । चन्देल वीरवर्मदेव के राजकाल का गढ़ का शिलालेख जिसमें एक स्त्री के सती होने का वर्णन है ।

(२६०)

वि० सं० १३४२—इ० ए० भाग १६ पृष्ठ ३४७ तथा भा० इ० पृष्ठ ८४ , मेदपाट (मेवाड़) के गुहिल समरसिंह का आबू पर्वत पर शिलालेख (?) जिसे प्रियपटु के पुत्र वेदशर्मन ने संकलित किया था । इस शिलालेख में नीचेलिखे गुहिल राजाओं की प्रशंसा है वप्प (वप्पक) गुहिल भोज, शील कालभोज, भर्तृभट, सिंह, महायिक, खुम्माण (खुम्मन), अल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, शुचिवर्मन, नरवर्मन, कीर्तिवर्मन, वैरट, वैरिसिंह, विजयसिंह, अरिसिंह, चोड़, विक्रमसिंह, क्षेमसिंह, सामन्तसिंह, कुमारसिंह, मथनसिंह, पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजसिंह, और समरसिंह ।

(२६१)

वि० सं० १३४२—बो० ग० पुस्तक भाग १ पृष्ठ २८७ । हाराजकुल साम्वत्तसिंहदेव (?) के राजकाल का भिनमाल (श्री- माल) में शिलालेख ,

(२६२)

वि० सं० १३४३—इ० ई० भाग १ पृष्ठ २८० , चौलुक्य बाघेल) सारङ्गदेव के समय का वीरावल (अब सिन्ट्र) में शिला- ख मिमे धन्य के पुत्र धरणीधर ने संकलित किया था ।

विश्वमल्ल (वीसलदेव जिस ने नागल्लदेवी से विवाह किया); स का छोटा भाई प्रतापमल्ल, उस का पुत्र (विश्वमल्ल का उत्तराधि- कारि) अर्जुनदेव, उस का पुत्र सारङ्गदेव ।

(२६३)

वि० सं० १३४३—ए० रि० बो० प्रे० पृष्ठ १८६ , शिला- वेट की मूर्ति का शिलालेख ।

(२६४)

वि० सं० १३४४—ज० ब० ए० सो० भाग ५५ पृष्ठ ४६ दपार (मेवाड) के गुहिल समस्तमहाराजकुल समरसिंह का उद- पुर (राजपूताना) में शिलालेख ।

(२६५)

वि० सं० १३४५—ज० ब० ए० सो० भाग ६ पृष्ठ ८८२ , न्देल भोजवर्मन के मन्त्री नान का अजयगढ़ (अब कलकत्ता यूजियम) में शिलालेख जिसे अमर ने संकलित किया ।

(२६६)

वि० सं० १३४५—बो० ग० भाग १ पृष्ठ २८६ , महाराज कुल साम्वत्तसिंहदेव (?) के राजकाल का भिनमाल (श्रीमाल) में शिलालेख ।

(२६७)

वि० सं० १३४२—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८२, नलपुर के गोपाल के पुत्र गणपति के राजकाल का सर्वग में शिलालेख जिसे सोमधर के पुत्र सोममिश्र ने संकलित किया।

(२६८)

वि० सं० १३६२—भा० इ० पृष्ठ २२७, चौलुक्य (वाघेला) सारङ्गदेव के समय का केम्बे में खण्डित शिलालेख जिसमें लुणिगदेव उस के पुत्र वीरधवल, प्रतापमल्ल, उसके पुत्र अर्जुन, और सारङ्गदेव का वर्णन है।

(२६९)

वि० सं० १३६३—आ० स० इ० भाग ११ पृष्ठ ११८, जौनपुर स्तूप का शिलालेख।

(२७०)

वि० सं० १३६८—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८१, नलपुर के गणपति के राजकाल का नरवर में शिलालेख जिसे दामोदर के पौत्र तथा लोहड़ के पुत्र शिव ने सकलित किया था।

चाहड़, उसका पुत्र नृवर्मन, उसका पुत्र आसल्लदेव, उसका पुत्र गोपाल, उसका पुत्र गणपति।

(२७१)

वि० सं० १३६०—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८२ हरिराजदेव (?) का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख।

(२७२)

वि० सं० १३६६—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८२, [धारा के?] [परमार ?] महाराजाधिराज जयसिंघदेव के राजकाल का उदयपुर (ग्वालियर) में शिलालेख।

(२७३)

वि० सं० १३७२—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ३२, ... यगढ़ के द्वार के स्तूप पर का शिलालेख।

(२७४)

वि० सं० १३७३—डाक्टर फुहेरर की प्रतिलिपि में। ... कुतबुदी (कुत्बुद्दीन) के राजकाल का जोधपुर में शिलालेख।

(२७५)

वि० सं० १३७७—ए० रि० भाग १६ पृष्ठ २८२। ... पर्वत का एक खण्डित शिलालेख।

इस शिलालेख में सिन्धुपुत्र, लक्ष्मण, शाकम्भरि का ... अविराज (?)......... दन्दन (?), कीर्तिपाल, समरसिंह, उदयसिंह मानवसिंह, प्रताप, आदि का वर्णन है।

(२७६)

वि० सं० १३८०—सर ए० कनिंघम की एक प्रतिलिपि से, उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख।

(२७७)

वि० सं० १३८४—प्रो० ब० ए० सो० १८७३ पृष्ठ १०१ महमन्द साहि (मुहम्मद इब्न तुगलक) के समय का दिल्ली म्यूजियम में शिला लेख।

(२७८)

वि० सं० १३८४—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ९३। महम्मद साहि (मुहम्मद इब्न तुगलक) के समय का दिल्ली म्यूजियम में एक दूसरा शिलालेख।

इस शिलालेख में म्लेच्छ सहावदीन (शहाबुद्दीन गोरी) को प्रथम 'तुरुस' लिखा है जिसने दिहिका (दिल्ली) में राज्य किया।

(२७९)

वि० सं० १३८४–इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ३६० । मेहर के नायक टेवक (टेवक) का दाथलिना (अब भावनगर म्युजियम) में शिला लेख । इस लेख में पहिले चन्द्र (?) वंश में एक राजा सागर (सगर) का वर्णन है, जिन के वंश में जसधवल (यशोधवल) हुआ जिन ने सूर्यवंश की प्रियमता से विवाह किया और उस से तीन पुत्र, मछ, मण्डल और मेकिन हुए। इस लेख में फिर लिखा है कि वाछलराज (वावलराज) के वंश में नागार्जुन (मण्डलीक का मित्र) हुआ, जिन के पुत्र महानन्द ने मङ्गलराज (?) की कन्या रूपा से विवाह किया । इस से टेवक उत्पन्न हुआ । इस मेहर ठेवक को राजा मदिस ने राणादवी दी और वह बल्लादित्य के वंशवाले (जो सूर्य विकल का वंशज था) राजा मुन्तराज के आधीन था ।

(२८०)

वि० सं० १३८७—आ० स० वे० इ० नम्बर २ ' चन्द्रावती के चाहुमान तेजसिंह (?) के राजकाल का आबूपर्वत पर शिलालेख '

(२८१)

वि० सं० १३९०–आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १४३ । बेवटी-कुण्ड के स्तूप का शिलालेख ।

(२८२)

वि० सं० १३९०–ज० ब० ए० सो० भाग ५ पृष्ठ ३४२ । मुहम्मद इब्न तुगलक (?) के समय का चुनार के दुर्ग में शिलालेख ।

(२८३)

वि० सं० १३९४–मर ए० कनिंघम की एक प्रति लिपि से । उदयपुर (ग्वालियर) के दो शिलालेख ।

(२८४)

वि० सं० १३२५-इ० ए० भाग २ पृष्ठ २३१। ...
बनी के नेथसिंह के पुत्र चाहुमान राजा कान्हणदेव के राजकाल
का आबुर्वन पर शिलालेख।

(२८५)

वि०सं० १३९७-आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १३३।
रणस्तम्भपुर के महाराज हमीरदेव के राजकाल के कोटीकुण्ड के ...
स्मारक स्तूपों के शिलालेख।

(२८६)

वि० सं० १४०४-आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १९।
सिधितुह्न (?) के राजकाल का मर्फ़ दुर्ग पर शिलालेख।

(२८७)

वि० सं० १४०४-आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ ३४। मह...
राज वीरराजदेव (?) की रानियों के सती स्तूपों के रामपुर ...
शिलालेख।

(२८८)

वि० सं० १४१२-आ० स० इ० भाग ९। उच्चहुडनगर के
महाराज वीररामदेव के राजकाल का कारीतलाई में शिला-
लेख।

(२८९)

वि० सं० १४२९-इ० ए० भाग २० पृष्ठ ३१४। सुल्तान
पियरोज साह (फ़ीरोज शाह) के राजकाल में गया के अ...
शासक कुलचन्द्र का गया में शिलालेख।

ठाकुर कुलचन्द (कुलचन्द्रक), कुमार व्याघ्र (व्याघ्रराज...
के वंश के ठाकुर ढाला के पौत्र तथा ठाकुर हेमराज के पुत्र थे।

(२९०)

वि० सं० १४३७–ए० ए० भाग ८ पृष्ठ १८१ तथा ए० रि० या० प्रे० पृष्ठ १८१ । प्रभास के शासक नायक भर्म तथा उसके मन्त्री कर्मसिंह के समय का प्रामलेज में शिलालेख ।

(२९१)

वि० सं० १४३९–आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ ७९ । बाउ-गुजर वंश के आमल्लदेव के पुत्र महाराजाधिराज गोगादेव के समय का और सुल्तान पीरोजसाहि (फीरोजशाह) के राजकाल का माचाड़ी (अलवर के निकट) में शिलालेख ।

(२९२)

वि० सं० १४४२–ए० रि० या० प्रे० पृष्ठ १८९ । राठौड़ (राष्ट्रकूट) वंश के नायक भर्म के समय का बीथरल में शिलालेख ।

(२९३)

वि० सं० १४४३–आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १८ । महा-सार के राजा नायदेव के राजकाल का मसार (महासार) की जैन-मूर्ति पर शिलालेख ।

(२९४)

वि० सं० १४४८–आ० स० इ० भाग १७ पृष्ठ ४१ । वीरमदेव के सतीसूर का शिलालेख ।

(२९५)

वि० सं० १४४५–ए० रि० वा० प्रे० पृष्ठ १७८ । चुडा-समा के कुछ नायकों का वन्थली (जूनागढ़) में शिलालेख ।

इस शिलालेख में खङ्गार (खङ्गार), जयसिंह, महिपति, गोकल-सिंह आदि का वर्णन है ।

(२९६)

वि० सं० १४४८–ए० रि० वा० प्रे० पृष्ठ १८३ । पवैरा-वंश के कुछ नायकों का चोरवाड़ (जूनागढ़) में शिलालेख ।

इस शिलालेख में सूजिग, उसके पुत्र भीमसिंह, उनके पुत्र व्यायपाल, उसके पुत्र लक्ष्मसिंह, अन्न और रत्नपाल, लक्ष्मसिंह के पुत्र रामसिंहआदि का वर्णन है।

(२९७)

वि० सं० १५५२—ए० रि० पृष्ठ १७९। योगिनी पुर (दिल्ली) के नसरथ (नसरत शाह) और गुजरात के दफर खां (जफर खां) के समय का मङ्गोल में शिलालेख।

(२९८)

वि० सं० १४५५—मिथिला के देवसिंह के पुत्र महाराजाधिराज शिवसिंहदेव का बिहार (दरभङ्गा) (सन्दिग्ध !) में दानपत्र जो पण्डितविद्यापतिको दिया गया था।

(२९९)

वि० सं० १४५८—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८२। यादव के महाराजाधिराज महदेव तथा उसके मंत्री नायक हाजिरागदेव के समय का रायपुर (अब नागपुर म्यूजियम) में शिलालेख।

लक्षमिदेव (लक्ष्मीदेव), उसका पुत्र सिंघ (सिंह), उसका पुत्र रामचन्द्र, उसका पुत्र हीरायनब्रह्म (ब्रह्मदेव अथवा रायब्रह्मदेव)

(३००)

वि० सं० १४६६—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १८। गढ़पति परमर्दिन का रासिन में शिलालेख।

(३०१)

वि० सं० १४६७—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ४२२। महाराजाधिराज वीरङ्ग (अथवा (वीरम?) देव का ग्वालियर में शिलालेख।

(२०२)

वि० सं० १५३०—(१५३१ के स्थान पर)—ए० इ० भाग २ पृष्ठ २१० रत्नपाटिका के कल्चुरि (कलचुरी) हरिब्रह्मदेव (ब्रह्मदेव) के समय का रतनपुर में शिलालेख जिसे शिवदासमिश्र ने सङ्कलित किया था।

अहिहय (हैहय) वंश के कल्चुरि (कलचुरी) शाखा में सिंहण, उस का पुत्र रामदेव (जिस ने भोणिङ्गदेव को लड़ाई में मार डाला), उस का पुत्र हरिब्रह्मदेव।

(२०३)

वि० सं० १५३३—ए० रि० का० प्रे० पृष्ठ १७६। चूडासमा के नायक जयसिंह द्वितीय के समय का जूनागढ़ (गिरनार) में शिलालेख जिसे धांधल के पौत्र तथा महीसिंह के पुत्र शामल ने सङ्कलित किया।

यदुवंश में मण्डलीक प्रथम, उसका पुत्र महिपाल, उस का पुत्र खङ्गार, उस का पुत्र जयसिंह प्रथम, उसका पुत्र मुक्तसिंह, उस का पुत्र मण्डलीक द्वितीय, उस का छोटा भाई मेलिग, उस का पुत्र जयसिंह द्वितीय।

(२०४)

वि० सं० १४८१—ज० ब० ए० सो० भाग ६२ पृष्ठ ७०। साहि आलम्भक मालवा का हुशङ्ग गोरी उर्फ अलप खां (जिस ने माण्डू [मण्डपपुर] को बसाया) के समय का देवगढ़ (अब कलकत्ता म्यूज़ियम) का जैन शिलालेख।

(२०५)

वि० सं० १४८५—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४१० तथा भा० इ० पृष्ठ ९६। मेदपाट (मेवाड़) के गुहिल मोकल का चित्तौरगढ़ में शिलालेख जिसे भट्टविष्णु के पुत्र एकनाथ ने सङ्कलित किया।

गुहिलवंश में अरिसिंह, उस का पुत्र हम्मीर, उस का पुत्र क्षेत्र,

उस का पुत्र लक्षसिंह, उसका पुत्र मोकल (जिसने यवनों के दल पीरोज अर्थात सुलतान फीरोजशाह को पराजित किया)।

(३०६)

वि० सं० १४९३—डाक्टर बर्गेस की एक प्रतिलिपि में ... का जैन शिलालेख।

(३०७)

वि० सं० १४९४—भा० इ० पृष्ठ ११२। मेदपाट (मेवाड़) के मोकल के पुत्र गुहिल कुम्भकर्ण के राजकाल का नागड़ में शिलालेख।

(३०८)

वि० सं० १४९६—ज० ब० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ १३३। भैरवेन्द्र का ऊमगा (विहार) में शिलालेख।

ऊमगा नगर में चन्द्रवंशी भूमिपाल था, उस का पुत्र ... उस का पुत्र लक्ष्मणपाल उस का पुत्र चन्द्रपाल उस का पुत्र ... उस का पुत्र सन्नद्रपाल, उस का पुत्र अभयदेव, उस का पुत्र मल्लदेव, उस का पुत्र केसिराज, उस का पुत्र वरसिंहदेव, उस का पुत्र भानुदेव, उस का पुत्र सोमेश्वर, उस का पुत्र भैरवेन्द्र।

(३०९)

वि० सं० १४९६—भा० इ० पृष्ठ ११४ तथा भा० ले० भा० भाग २ पृष्ठ २८। मेदपाट (मेवाड़) के गुहिल राणाकुम्भकर्ण के राजकाल का सादड़ी में जैन शिलालेख।

इस शिलालेख में निम्नलिखित गुहिल राजाओं की नामावली है:—

बप्प, गुहिल, भोज, शील, कालभोज, भर्तृभट, सिंह, महायक, खुम्माण, अल्लट, नरवाहन, शक्तिकुमार, शुचिवर्मन, कीर्तिवर्मन, योगराज, वैरट, वैरिसिंह, वीरसिंह, अरिसिंह, चोडसिंह, विक्रमसिंह, रणसिंह, क्षेमसिंह

सामन्तसिंह, कुमारसिंह, मथनसिंह, पद्मसिंह, जैत्रसिंह, तेजस्विसिंह, समरसिंह, भुवनसिंह, (जिसने सुल्तान राजा कातुक और सुल्तान अल्लाउद्दीन को पराजित किया), उस का पुत्र जयसिंह, लक्ष्मसिंह (जिस ने मालव राजा गोगादेव को पराजित किया), उस का पुत्र अजयसिंह, उस का भाई अरिसिंह, हम्मीर, खेतसिंह, लक्ष, उस का पुत्र मोकल, कुम्भकर्ण ।

(३१०)

वि० सं० १४९७—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ४२२। महाराजाधिराज डुङ्गरेन्द्रदेव के राजकाल का ग्वालियर में शिलालेख ।

(३११)

वि० सं० १५००—भा० इ० पृष्ठ ११२ तथा प्रा० ले० मा० भाग २ पृष्ठ २६ महुवा का शिलालेख जिस में गुहिल सारङ्ग की पृथ्वी पर श्रेष्ठिन् मोकल के तालाव बनाने का वर्णन है ।

(३१२)

वि० सं० १५०३—सर ए० कनिंघम की प्रतिलिपि से । उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख ।

(३१३)

वि० सं० १५१०—ज० ब० ए० सो० भाग ३१ पृष्ठ ४२३ तथा डाक्टर बर्गेस की एक प्रतिलिपि । महाराजाधिराज डुङ्गरेन्द्रदेव के राजकाल का ग्वालियर में शिलालेख ।

(३१४)

वि० सं० १५१६—आ० स० इ० भाग २३ । चित्तौरगढ़ में गुहिल कुम्भकर्ण के कीर्तिस्तम्भ के ऊपरी भाग का शिलालेख ।

(३१५)

वि० सं० १५१८—आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १३१ । गया में गयासुरी देवी के मन्दिर का शिलालेख । सर ए० कनिङ्घम के लिये

जो वृत्तान्त लिया गया था उस के अनुसार इस लेख में निम्नलिखित नाम हैं—

सिन्धुराज, दामी (प्रथम); सन्तेवा; दामी (द्वितीय); महीचन्द देवीदास; सूर्यदास; उस का पुत्र शक्तिसिंह, उस का पुत्र मदन।

(३१६)

वि० सं० १५४५—भा० इ० पृष्ठ ११७। मेदपाट (मेवाड़) के कुम्भकर्ण के पुत्र गुहिल राजमल्ल के समय का उदयपुर (राजपुताना) में शिलालेख जिसे केसर शोटिह्न के पौत्र तथा अत्रू के पुत्र महेश्वर ने सङ्कलित किया था।

इस शिलालेख में गुहिल राजा अरिसिंह, हमीर, क्षेत्रसिंह, लक्षसिंह मोकल, कुम्भकर्ण तथा राजमल्ल की विशेषतः प्रशंसा है।

(३१७)

वि० सं० १५५३—ए० रि० आ० प्रै० पृष्ठ २६६। बोरु में एक कुएं की सीढ़ी पर का शिलालेख।

(३१८)

वि० सं० १५५५—ए० रि० आ० प्रै० पृष्ठ २६४। पाटन महमूद (सुलतान महमूद बेगड़) के राजकाल का दण्डाहिदेश वाघेल वीरसिंह की पत्नी रानी रूपादेवी का अडालिज के कुएं का शिलालेख।

वाघेल मोकलसिंह, उस का पुत्र कर्ण, उस का पुत्र मूलराज, उस का पुत्र महीप, उस का पुत्र वीरसिंह जिस ने रूडादेवी से विवाह किया उन के पुत्र नारसिंह और जेत (? जैत्र)

(३१९)

वि० सं० १५५६—ए० ए० भाग ४ पृष्ठ ३६८ तथा ए० रि० आ० प्रै० पृष्ठ २३४ और ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २९८। शाह महमूद (सुलतान महमूद बेगड़) के राजकाल का बाई हरीर का अहमदाबाद के कुएं का शिलालेख।

(१२०)

वि० सं० १५५६ तथा १५६१—ज० ब० ए० सो० भाग ५६ पृष्ठ ७९। मेदपाट (मेवाड) के गुहिल राजमल्ल (कुम्भकर्ण का पुत्र) तथा उसकी पत्नी शृंगारदेवी [जो कि मरुस्थलि (मारवाड) के रणमल्ल के पुत्र राजकुमार योध की पुत्री थी] धानगरी (चित्तौर के निकट) में शिला लेख जिसे ओटिङ्केशव के पौत्र तथा अत्रु के पुत्र महेश ने सङ्कलित किया था।

(१२१)

वि० सं० १५५७(?)—गुहिल रायमल्ल (राजमल्ल) के राज-काल का नारली में शिलालेख।

(१२२)

वि० सं० १५८१—आ० स० इ० भाग ४ पृष्ठ १४४। सुल्तान इब्राहीम लोदी के राजकाल का दिल्ली सिवालिक स्तूप पर शिलालेख।

(१२३)

वि० सं० १५८७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ४२ तथा भा० इ० पृष्ठ १३४। पुण्डरीक के मन्दिर के सप्तम जीर्णोद्धार का शिला-लेख जिस में गुजरात के सुल्तान महिमूद (महमूद बेगरा), मदाफर साह (मुज़फ्फर द्वितीय) और बाहदर साह (बहादुर) तथा चित्रकूट के गुहिल राजा कुम्भराज, उस के पुत्र राजमल्ल, उस के पुत्र संग्रामसिंह और उस के पुत्र रत्नसिंह का वर्णन है। इसे लावण्यसमय ने संकलित किया था।

(१२४)

वि० सं० १५९५—प्रो० ब० ए० सो० १८७१ पृष्ठ १६। सम्राट हुमाऊं (हुमायूं) के राजकाल का तिलबेगामपुर में शिला-लेख।

(१११)

वि० सं० १६६४—भा० इ० पृष्ठ १४४। मेवाड के महाराणा अमरसिंहजी के राजकाल का सादडी में शिलालेख।

(११२)

वि० सं० १६७५—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ६०। सम्राट जहांगीर के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख।

(११३)

वि० सं० १६७५ और १६७६—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ६४। हालार (हलार प्रान्त) में नवीनपुर (नवा नगर) के याम शत्रुशल्य के पुत्र जसवन्त के समय का शत्रुञ्जय में जैन शिलालेख।

(११४)

वि० सं० १६८०—प्रो० ब० ए० सो० १८७६ पृष्ठ ८२। चन्द्रवंश के राजकुमार वासुदेव के समय का बनारस में शिलालेख।

(११५)

वि० सं० १६८३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ६८। सम्राट जिहांगीर (जहांगीर) के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख जिसे देवसागर ने सङ्कलित किया।

(११६)

वि० सं० १६८६—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ७२। सम्राट शाहाज्याहां (शाहजहां) के राजकाल का शत्रुञ्जय का जैन शिलालेख।

(११७)

वि० सं० १६८८—ज० ब० ए० सो० भाग ८ पृष्ठ ६९९। रोहतास दुर्ग के कोथोटिय फाटक के ऊपर की पटिया पर तोमर मित्रसेन का शिलालेख जिसे कृष्णदेव के पुत्र शिवदेव ने संकलित किया था।

तोमर वंश में गोपाचल (ग्वालियर) में वीरसिंह, उस का पुत्र उद्धरण, उस का पुत्र वीरम, उस का पुत्र गणपति, उस का पुत्र डूंगरसिंह (डूंग-

रासिंह ?), उस का पुत्र कीर्तिसिंह, उस का पुत्र कल्याणसाहि, ... पुत्र मानसाहि, उस का पुत्र विक्रमसाहि, उस का पुत्र रामसाहि, ... पुत्र शालिवाहन, उस के पुत्र श्यामसाहि और मित्रसेन (जो ... द्दीन के समकालीन थे)

(३३८)

वि० सं० १६८९—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३०१ । वि० ... १२०८ के वडनगर शिलालेख (संख्या १३६) के पुनः नवीन ... के देने का समय ।

(३३९)

वि० सं० १७१७—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १११ ... चम्बा का शिलालेख ।

(३४०)

वि० सं० १७१८, १७२२ तथा १७३२—भा० इ० ... १४९ और १९० । राजनगर कांकरोली के शिलालेख जिस में ... के " राजप्रशस्तिमहाकाव्य " के द्वितीय और तृतीय सर्ग हैं ।

(३४१)

वि० सं० १७२४—ज० अ० ओ० सो० भाग ७ पृष्ठ ४ ... गढ़ादेश के राज हृदयेश तथा उनकी रानी सुन्दरीदेवी का रामन... में शिलालेख जिसे मण्डन के पुत्र जय गोविन्द ने संकलित किया था ।

इस शिलालेख में निम्नलिखित राजाओं का वर्णन है:—यादवरा... (गढ़ादेश का एक सम्राट), माधवसिंह, जगन्नाथ, रघुनाथ, रुद्रदे... बिहारीसिंह, नरसिंहदेव, सूर्यभानु, वासुदेव, गोपाल साहि, भूपाल सा... गोपीनाथ, रामचन्द्र, सुरतानसिंह, हरिहरदेव, कृष्णदेव, जगत सिं... महासिंह, दुर्जनमल्ल, यशहकर्ण, प्रतापादित्य, यशश्चन्द्र, मनोहरसिं... गोविन्दसिंह, रामचन्द्र, कर्ण, रत्नसेन, कमलनयन, नरहरिदेव, वीरसिं... त्रिभुवनराय, पृथ्वीराज, भारतीचन्द्र, मदनसिंह, उग्रसेन, रामसाहि, ता...

चन्द्र, उदयसिंह, भानुमित्र, भवानीदास, शिवसिंह, हरिनारायण, सबलसिंह, राजसिंह, दादीराय, गोरक्षदास; अर्जुनसिंह, संग्रामसाहि, दलपति जिस ने दुर्गावती से विवाह किया, उन का पुत्र वीरनारायण, दलपति का लघुभ्राता चन्द्रसाहि, उस का पुत्र मधुकरसाहि, प्रेमनारायण (प्रेमसाहि), हृदयेश जिस ने सुन्दरीदेवी से विवाह किया, उन की पुत्री (?) मृगावती।

(१४२)

वि० सं० १७७०– भा० इ० पृष्ठ १९९ । मेवाड के राणा संग्रामसिंह के समय का उदयपुर (राजपूताना) में शिलालेख ।

(१४३)

वि० सं० १८६१—प्रो० ब० ए० सो० १८९९ पृष्ठ २०४ सम्भलपुर के नायक जयन्तसिंह की पत्नी **रत्नकुमारिका** का नागपुर में दानपत्र ।

(१४४)

वि० सं० १८७४, १८७५ तथा १८७७– इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९१ । महाराजाधिराज **रणबहादुरशाह** की विधवा **ललित-त्रिपुरसुन्दरीदेवी** का उन के पौत्र महाराजाधिराज **राजेन्द्रविक्रमशाह** के समय का नैपाल में शिलालेख ।

पृथ्वीनारायणशाह, उस का पुत्र सिंहप्रतापशाह, उस का पुत्र रणबाहादुर शाह, उस का पुत्र गीर्वाणयुद्धविक्रमशाह, उस का पुत्र राजेन्द्रविक्रमशाह ।

(१४५)

वि० सं० १८७६– आ० स० इ० भाग १ पृष्ठ २७० । मसार (महासार) का जैन शिलालेख ।

(१४६)

वि० सं० १८८१– ए० इ० भाग २ पृष्ठ २४४ । पभोसा का जैन शिलालेख ।

(३४७)

वि० सं० १९१८ तथा १९१७— आ० म० इ० भाग १ पृष्ठ १३६ । महाराजाधिराज श्रीसिंददेव (?) का चम्बा का दानपत्र

विक्रम संवत् के विना समय के शिलालेख ।

(३४८)

गुप्त इ० पृष्ठ १४६ । राजा यशोधर्मन (जिस के आधीन राजा मिहिरकुल था) का मन्दसोरस्तूप पर शिलालेख जिसे कक्क के पुत्र वासुल ने सङ्कलित किया तथा गोविन्द ने खोदा था ।

(३४९)

ज० रो० ए० सो० १८९४ पृष्ठ ४ । प्रतिहार वाउक का जोधपुर में शिलालेख ।

ब्राह्मण हरिचन्द्र के उस की क्षत्राणी पत्नी से चार पुत्र थे, भोगभट, कक्कुक, रजिल्ल और दद्द, रजिल्ल का पुत्र नरभट पेल्लापेल्ली, उस का पुत्र नागभट जिस ने जज्जिकादेवी से विवाह किया, उस के पुत्र तात और भोज, तात का पुत्र यशोवर्धन, उस का पुत्र चन्दुक, उस का पुत्र शिलुक वा शीलुक (जिस ने भट्टिकदेवराज को पराजित किया), उस का पुत्र झोट, उस का पुत्र भिल्लादित्य, उस का पुत्र कक्क जिस ने पद्मिनी से विवाह किया, इन का पुत्र बाउक (जिस ने उस मयूर को मारा जिस ने नन्दावल्ल को पराजित किया था ।

(३५०)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २४४ । कन्नौज के महेन्द्रपालदेव के राजकाल का पेहेवा (पहोआ, अब लाहोर म्यूजियम) में शिलालेख जिस में तोमरवंश के कुछ जनों के विष्णु के मन्दिर बनवाने का वर्णन है । इसी वंश में राजा जाउल थे, उन के एक सन्तान, वज्रट ने मङ्गल्य देवी से विवाह किया, उन का पुत्र जज्जुक जिस ने चन्द्र और नायिका

से विवाह किया, उन के पुत्र गोग्ग, पूर्णराज, तथा देयराज। (इसे भट्टराम के पुत्र मु............(!) ने मङ्कलित किया।

(३९१)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ १२२ तथा आ० स० इ० भाग २१। चन्द्रेल्ल का खजुराहो में खण्डित शिलालेख जिस में जेज्जाक विज्ञाक और र्पदेव तथा (कन्नौज के) क्षितिपालदेव का वर्णन है।

(३९२)

ए० इ० भाग १८ पृष्ठ २३७ तथा आ० स० इ० भाग १०। महाराजाधिराज यशोवर्मन के पौत्र तथा कृष्णप और उसकी स्त्री आसर्व के पुत्र चद्रेल्लदेवलब्धि के दुदहि में शिलालेख।

(३९३)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २२१ तथा आ० स० इ० भाग २१ चन्द्रेल्ल का महोबा (अब लखनऊ म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख जिस में जेजा और उस के लघुभ्राता वीजा, धङ्ग, उस के पुत्र गण्ड, उस के पुत्र विद्याधर (जो [धारा] के भोजदेव का समकालीन [!] था), विजयपाल (जो चेदी गांगेयदेव का समकालीन था), और उस के पुत्र कीर्तिवर्मन (जिस ने लक्ष्मीकर्ण अर्थात् चेदीकर्ण को विजय किया) का वर्णन है।

(३९४)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ १९७। चन्देल्ल मदनवर्मदेव का मऊ (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख जिस में धङ्ग, उस के पुत्र गण्ड, उस के पुत्र विद्याधर, उस के पुत्र विजयपाल, उस के पुत्र कीर्तिवर्मन, उस के पुत्र सल्लक्षणवर्मन, उसके पुत्र जयवर्मन, सल्लक्षणवर्मन के लघुभ्राता पृथ्वीवर्मन, और पृथ्वीवर्मन के पुत्र मदनवर्मन का वर्णन है।

(३९५)

ज० ब० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ ३१७ तथा आ० स० इ०

पुत्र महिपाल (प्रथम) पह्नार (गुह्नार), जयसिंह, मेकर्न, मेलग, महिपाल (द्वितीय), और उसका पुत्र मण्डलीक (द्वितीय).

---

(२) शक संवत के शिलालेख ।

(३६१)

श० सं० ४००—इ० ए० भाग १० पृष्ठ २८३ । भटै (भटार्क) के पुत्र गुहसेन के पुत्र महाराजाधिराज धरसेनदेव बम्बई एशियाटिक सोसायटी में (सन्दिग्ध) दानपात्र जो वल्लभी दिया गया था ।

(३६६)

श० सं० ४००—इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ६३ । दद (दद्द) प्रथम के पुत्र जयभट्ट (जयभट) वीतराग के पुत्र गुर्जर महाराजाधिराज दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का उमेता (सन्दिग्ध) में दानपत्र जो भरुकच्छ (के फाटक के सामने के तंबू) में दिया गया था ।

(३६७)

श० सं० ४१५—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ १९९ । दद (दद्द) प्रथम के पुत्र जयभट्ट (जयभट) वीतराग के पुत्र गुर्जर महाराजाधिराज दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का बगुम्रा में (सन्दिग्ध) दानपत्र जो भरुकच्छ (के फाटक के सामने के तम्बू) में दिया गया था ।

(३६८)

श० सं० ४१७—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ११६ । दद (दद्द) प्रथम के पुत्र, जयभटवीतराग के पुत्र गुर्जर महाराजाधिराज दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का इलाओ (सन्दिग्ध) में दानपत्र जो भरुकच्छ (के फाटक के सामने के तम्बू) में दिया गया था ।

अनियंकभीम (३५ वर्ष), (७) उसका सब से बड़ा पुत्र कामार्णव (१ वर्ष), उसका छोटा भाई गुण्डम (३ वर्ष), (९) उसका, (दूसरी माता से भाई) मधु-कामार्णव (१९ वर्ष), (१०) वज्रहस्त-कामार्णव (७)का वैदुम्ब वंश की विनयमहादेवी से पुत्र ।

(१७७)

दा० सं० ९९९—ई० ए० भाग १८ पृष्ठ १६३ । त्रिकलिङ्गाधिपति राज महाराजाधिराज अनन्त वर्मन-चोडगंगदेव के राज्याभिषेक का समय जैसा कि उसके विजगापटम) के शा० स १००३ के दानपत्र में दिया है (संख्या १७८) ।

(१७८)

शा० सं० १००३—ई० ए० भाग १८ पृष्ठ १६२ । त्रिकलिङ्गाधिपति राज महाराजाधिराज अनन्त वर्मन-चोडगंगदेव का विजगापटम (अब मद्रास म्यूजियम) में दानपत्र जो कलिंग नगर में दिया गया था ।

वंशावली, वज्रहस्त (१०) तक संख्या १७६ में दी है; (११) उसका पुत्र राजराज प्रथम (८ वर्ष), (१२) उसका पुत्र, राजेन्द्रचोल की कन्या राजसुन्दरी से, अनन्त वर्मन चोडगंग ।

(१७९)

शा० सं० १०४०—ई० ए० भाग १८ पृष्ठ १६६ । त्रिकलिङ्गाधिपति राज राजाधिराज महाराज अनन्तवर्मन-चोड गंगदेव का विजगापटम (अब मद्रास म्यूजियम) में दान पत्र जो सिन्दुरपोर में दिया गया था । अनन्त (विष्णु) से चन्द्र तदनन्तर गांगेय तक, उस से कोलाहल तक (जो गंगा वाडि कोलाहलपुर का संस्थापक था), और उसके पुत्र वीरसिंह तक की वंशावली दी है । इसके आगे कोलाहलपुर के ८१ राजाओं का वर्णन कर के इस प्रकार वंशावली दी है—
वीरसिंह जिसके चार पुत्र कामार्णव (प्रथम) दानार्णव, गुणार्णव (प्रथम)

मार्गसिंह, और वज्रहस्त (प्रथम) हुए। (१) कामार्णव (प्रथम) ने बालादित्य को जीत कर कलिंग पर अधिकार जमाया और जन्तापुर में ३६ वर्ष राज्य किया; (२) उस के छोटे भाई दानार्णव ने ४० वर्ष राज्य किया; (३) उस के लड़के कामार्णव (द्वितीय) ने नगर में ५० वर्ष राज्य किया; (४) उस के लड़के रणार्णव ने ५ वर्ष; (५) उसके लड़के वज्रहस्त (द्वितीय) ने १५ वर्ष; (६) उस के छोटे भाई कामार्णव (तृतीय) ने १९ वर्ष (७) उसके लड़के गुणार्णव (द्वितीय) ने २७ वर्ष; (८) उसके लड़के जितांकुश ने १५ वर्ष; (९) उसके भतीजे कलिंगांकुश ने १२ वर्ष, (१०) उसके चाचा गुणधाम (प्रथम) ने ७ वर्ष, (११) उस के छोटे भाई कामार्णव (चतुर्थ) ने २५ वर्ष; (१२) उस के छोटे भाई विनयादित्य ने ३ वर्ष; (१३) कामार्णव (चतुर्थ) के पुत्र वज्रहस्त (चतुर्थ) ने ३५ वर्ष (१४) उस के लड़के कामार्णव (पञ्चम) ने ६ मास (१५) उस के छोटे भाई गुणम (द्वितीय) ने ३ वर्ष (१६) । उस के सौतेले भाई मधु-कामार्णव (षष्ठम) ने १९ वर्ष (१७) उसके लड़के वज्रहस्त (पंचम) ने ३० वर्ष (१८) उसके लड़के राजराज (प्रथम) ने ८ वर्ष राज्य किया और चोल राजकुमारी राजसुन्दरी से विवाह किया (१९) उनका ज्येष्ठ लड़का अनन्तवर्मन चोड़गंग हुआ।

(१८०)

इ० ऐं० १०७३—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १७२। त्रिकलिंगाधिपति गङ्ग महाराजाधिराज अनन्तवर्मन-चोड़गङ्गदेव का विक्रम (अब मद्रास म्यूजियम) में दान पत्र जो कलिङ्गनगर में दिया हुआ था।

(१८१)

इ० ऐं० १०७९—इ० ए० भाग २ पृष्ठ १११। श्री

गङ्गाधर का गोविन्दपुर में शिलालेख जिसमें मगध के मानराज-कुमार वर्णमान और रुद्रमान का वर्णन है।

इस शिलालेख में मग अथवा शाकद्वीपीय ब्राह्मण दामोदर, उस के पुत्र चक्र पाणि, उसके पुत्र मनोरथ और दशरथ, मनोरथ के पुत्र गङ्गाधर (जिसने इस शिलालेख का सङ्कलन किया) और महीधर, और दशरथ के पुत्र हरिहर और पुरुषोत्तम का वर्णन है।

(१८२)

शा० सं० १०५४—ज० ब० ए० सो० भाग ६९ पृष्ठ २८१।
अनन्त वर्मन चोडगङ्ग के पुत्र तथा उत्तराधिकारी कलिङ्ग के राज कामार्णव के राज्याभिषेक की तिथि जो कि शा० सं० १२१७ के नर-सिंह देव द्वितीय के केन्दुपाटन के ताम्रपत्र में (संख्या १८६ देखो) दी है।

(१८३)

शा० सं० ११०७—जी० ई० सो० बं० भाग ४० पृष्ठ ४१ तथा ए० इ० भाग ९ पृष्ठ १८३। वल्लभदेव का आसाम (अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र।

चन्द्रवंश में भास्कर; उस का पुत्र रायारिदेवत्रैलोक्य सिंह; उस का पुत्र उदय कर्ण—निःशङ्क सिंह जिसने आदित्य देवी से विवाह किया, उन का पुत्र वल्लभदेव।

(१८४)

शा० सं० ११४१—ए० इ० भाग ९ पृष्ठ ४०३ तथा ज० ए० सो० बं० भाग ९ पृष्ठ ५४२। हरिकाल देव रणवङ्कमल्ल (?) का त्रिपुरा (टिप्परा) से दानपत्र।

(१८५)

शा० सं० ११६५—ज० ब० ए० सो० भाग ४३ पृष्ठ ३३३।
दामोदर का चिटगाँव से दानपत्र।

चन्द्रवंश में पुरुषोत्तम; उस का पुत्र मधु सूदन; उस का पुत्र ?
?देव; उस का पुत्र दामोदर।

(३८१)

श० सं० १२१७—(१२१८ के स्थान पर)—ज० ?
?० सो० भाग ६५ पृष्ठ २३९। [कलिंग के] गंग राजा नरसिं
देव द्वितीय के इक्कीसवें वर्ष का केन्दु पाटन (उड़ीसा में) में दान
?त्र जो रेमुणा में दिया गया था।

विष्णु से चन्द्र तदनन्तर गांगेय तक, उस से कोलाहलअनन्तवर्म
?क जिस ने कोलाहलपुर बसाया, और उसके पीछे अनेक राजाओं ?
?शावली दी है। उन के पीछे कामार्णव और अन्य चार राजाओं ?
कलिंग पर अधिकार जमाया। इस गंग वंश में कामार्णव के वंशज
हुए। (१) वज्रहस्त जिसने नङ्ग से विवाह किया (२) उस
पुत्र पहिला राजराज जिसने राजसुन्दरी से विवाह किया (३) उस
पुत्र चोड़गंग जिसने ७० वर्ष राज्य किया (४) उसका पुत्र ?
कामोदिनी से कामार्णव हुआ जिसका अभिषेक शक १०६४ में हु
और जिसने १० वर्ष राज्य (५) सूर्य वंश की इन्दिरा से चोड़ग
का पुत्र राघव हुआ जिसने १५ वर्ष राज्य किया (६) चन्द्रलेखा
चोड़गंग का पुत्र दूसरा राजराज हुआ जिसने २५ वर्ष राज्य कि
(७) उस का छोटा भाई अनियाङ्कभीम हुआ जिसने १० वर्ष रा
किया (८) उस का पुत्र वाघल्ल देवी से तीसरा राज राज हु
जिसने १७ वर्ष राज्य किया (९) उस का पुत्र चालुक्य वंश ?
मान कुनदेवी से अनंग भीम हुआ जिसने ३४ वर्ष राज्य किया (१०
उसका पुत्र कस्तूरादेवी से पहिला नरसिंह हुआ जिसने ३३ वर्ष रा
किया (११) उस का पुत्र मालव राजा की कन्या सीतादेवी से पहि
हुआ जिसने ऊचालुक्य वंश की ?कल्लदेवी से विवाह किया और
अपने राजकाल के १८ वे वर्ष में मरा (१२) उसका पुत्र दू
नरसिंह हुआ।

(१८७)

दा० सं० १३०४—सुल्तान पीरोजसाहि (फ़ीरोज़ शाह) के राजकाल का बड़गूजरवंश के आसल्ल देव के पुत्र महाराजाधिराज गोगादेव के समय का माचाड़ी (अलवर के निकट) में शिलालेख।

(१८८)

दा० सं० १३०५—ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ ११६। [कलिंग के] गंग राजा नरसिंह देव चतुर्थ के आठवें वर्ष का पुरी (उड़ीसा) में दान पत्र जो वाराणसी-कटक (?) में दिया गया था।

(१२) नरसिंह [द्वितीय] शक की पंचाब्द संख्या १६७ में (उसने १४ वर्ष राज्य किया)' (१३) उसका पुत्र, चोड़देवी से, भानुदेव [द्वितीय] (२४ वर्ष), (१४) उसका पुत्र, लक्ष्मी से, नरसिंह [तृतीय] (२५ वर्ष), (१५) उसका पुत्र, कमलदेवी से भानुदेव [तृतीय] (२६ वर्ष), (१६) उसका पुत्र, चालुक्य वंश की हीरादेवी से, नरसिंह [चतुर्थ]

(१८९)

दा० सं० १३१६ (१३१७ के स्थान पर)—ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १२१। [कलिंग के] गंग राजा नरसिंह देव चतुर्थ के बाईसवें तथा तेईसवें वर्ष का पुरी (उड़ीसा के) का दान पत्र जो वाराणसी-कटक (?) में दिया गया था।

(१९०)

दा० सं० १३२१—[त्रिपुरी के] देव सिंह के पुत्र महाराजाधिराज शिवसिंहदेव का बिहार (दरभंगा) में (?) दान पत्र जिसमें एक दान का वर्णन है जो कवि विद्यापति को दिया गया था।

(३९१)

श० सं० १३२२ (१३२३ के स्थान पर)—रायपुर के महाराजाधिराज ब्रह्मदेव तथा उस के मंत्री, नायक हाजिराज देव के समय का रायपुर में शिलालेख ।

(३९२)

श०सं० १३३४ (१३३६ के स्थान पर)—खल वाटिका कलचुटि (कालचुरि) हरिब्रह्मदेव (ब्रह्मदेव) के समय खलारि में शिलालेख ।

(३९३)

श० सं० १३४६—साहि आलम्भक के समय का देवगढ़ का जैन शिलालेख ।

(३९४)

श० सं० १३५८—देवगढ़ का जैन शिलालेख ।

(३९५)

श० सं० १३७७—इ० ए० भाग २० पृष्ठ १९१ । ... (उड़ीसा) के कपिलेन्द्र-गजपति के समकालीन और सामन्त (?) कोण्डवीडु के गाणदेव का किस्तन जिले में दानपत्र ।

इस शिलालेख में कटक के सूर्यवंशी कपिलेन्द्रगजपति (कपिलेश्वरगज), जो कि उस समय राज्य करता था, की प्रशंसा है । इस के वंश में (!) चन्द्रदेव हुआ; उस का पुत्र गुहिदेव पात्र; उस का पुत्र कोण्डवीडु का गाणदेव (उपनाम रौतराय या राहुत्तराय) ।

(३९६)

श० सं० १४२०—'पातशाह' महमूद (सुल्तान महमूद बेगड़ा) के राज्यकाल का, दादहदेश के पालक वीरसिंह की पत्नी, रानी हरदेवी का अर्जित कूप का शिलालेख ।

(३९७)

शा० सं० १४२१–'पातुसाह' महमूद (सुलतान महमूद ...र) के राजकाल का बाई हरीर का अहमदाबाद के कुए का ...लेख ।

(३९८)

शा० सं० १४२६–मेदपाट (मेवाड़) के गुहिल राजमल्ल और ...की पत्नी शृङ्गारदेवी का नगरी (चित्तौर के निकट) में शिला-...ख ।

(३९९)

शा० सं० १४५३–पुण्डरीक के मन्दिर के सातवें बार मरम्मत ...ने का शत्रुञ्जय में शिलालेख ।

(४००)

शा० सं० १४६०–सम्राट हुमाऊ (हुमायूं) के राजकाल का ...लेगामपुर में शिलालेख ।

(४०१)

शा० सं० १५२०–[मेवाड़ के] महाराणा अमरसिंह जी ... राजकाल का सादड़ी में शिलालेख ।

(४०२)

शा० सं० १५४१–नवीनपुर (नवानगर) के याम शत्रुशल्य ...पुत्र जसवन्त के समय का शत्रुञ्जय में जैन शिलालेख ।

(४०३)

शा० सं० १५५१–सम्राट शाहाश्याहाम् (शाहजहां) के राज-...ल का शत्रुञ्जय में जैन शिलालेख ।

(४०४)

शा० सं० १५८२–पन्ना के एक शिलालेख की नोटिस ।

(४०५)

शा० सं० १६३९-मेवाड़ के राणा संग्रामसिंह के समय
पुर (राजपुताना) में शिलालेख।

---

(४) कलचुरी-चेदि संवत् के शिलालेख।

(४०६)

क० सं० १७४-गु० इ० पृष्ठ ११८। महाराज जयनाथ
ीतलाई में दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

महाराज ओघदेव, कुमारदेवी से उसका पुत्र महाराज कु
स्वामिनी से उसका पुत्र महाराज जयस्वामिन्, रामदेवी से उ
महाराज व्याघ्र, अज्झितदेवी से, उसका पुत्र महाराज जयनाथ।

(४०७)

क० सं० १७७-गु० इ० पृष्ठ १२२। महाराज जयनाथ
ह में दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

(४०८)

क० सं० १९३-गु० इ० पृष्ठ १२६-महाराज सर्वनाथ
ह में दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

जयनाथ तक वंशावली जैसी संख्या ४०६ में, उसका पुत्र मु
देवी से महाराज सर्वनाथ।

(४०९)

क० सं० १९३-गु० इ० पृष्ठ १३२। महाराज सर्वनाथ
द् में दूसरा दानपत्र।

(४१०)

क० सं० २०७-ज० ब० ए० सो० भाग १९ पृष्ठ १४०
कुटकवन के महाराज दहसेन का पार्दी (सूरत जिले में) में
ज और आम्रक में दिया गया था।

(४११)

क० सं० २१४–गु० इ० पृष्ठ १३६ । महाराज शर्वनाथ का
: में दान पत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था ।

(४१२)

क० सं० २४५–के० टे० पे० इ० पृष्ठ १८ । डाक्टर बर्ड का
ी ताम्रपत्र जिसमें कृष्णागिरि के महाविहार में एक चैत्य बनवाने
समय है । इस लेख का समय त्रैकुटक के राजकाल का है ।

(४१३)

क० सं० ३४६–ए० इ० भाग २ पृष्ठ २० । [गुर्जर राजा
?] सांखेड़ा में दूसरा दानपत्र ।

(४१४)

क० सं० ३८०–ज० रो० ए० सो भाग १ पृष्ठ २७३ तथा
ए० भाग १३ पृष्ठ ८२ । गुर्जर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग
कैर में दानपत्र जो नान्दीपुरी में दिया गया था ।

गुर्जर राज्यवंश में सामन्त दद्द (प्रथम), उसका पुत्र जयभट
थम), वीतराग, उसका पुत्र दद्द (द्वितीय) प्रशान्तराग ।

(४१५)

क० सं० ३८५–ज० रो० ए० सो० भाग १ पृष्ठ २७३ तथा
ए० भाग १३ पृष्ठ ८८ । गुर्जर दद्दद्वितीयप्रशान्तराग के
प का कैर में दानपत्र जो नान्दीपुरी में दिया गया था ।

(४१६)

क० सं० ३९१–ए० इ० भाग २ पृष्ठ २१ । दद्द के सम्बन्धी
। वीतराग के पुत्र रणग्रह का [रणग्रह के भाई (?) गुर्जर दद्द
ीय प्रशान्तराग के समय का] सांखेड़ा में दूसरा दानपत्र ।

(४१७)

क० सं० ३९२–ए० इ० भाग ५ पृष्ठ ३९ । [जयभट प्रथम]

वीतराग के पुत्र गुर्जर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का साह्वेडा में दान-पत्र जो नान्दीपुर में दिया गया था।

(४१८)

क० सं० ३९२-ए० इ० भाग ५ पृष्ठ ३९। [जयभट प्रथम] वीतराग के पुत्र गुर्जर दद्द द्वितीय प्रशान्तराग का साह्वेडा में दूसरा दानपत्र जो नान्दीपुर में दिया गया था।

(४१९)

क० सं० ३९४-इ० ए० भाग ७ पृष्ठ २४८। गुर्जर चौलुक्य **विजयराज** का कैर (अब रायल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो विजयपुर में दिया गया था।

चौलुक्यों के वंश में जयसिंहराज, उसका पुत्र बुद्धवर्मराज (उपनाम वल्लभ-रणविक्रान्त), उसका पुत्र विजयराज।

(४२०)

क० सं० ४०६-इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २६७। सेन्द्रक **निकुम्भल्लशक्ति** का बगुम्रा (अब बृटिश म्यूजियम) में दानपत्र।

सेन्द्रक राजाओं के वंश में भाणुशक्ति, उसका पुत्र आदित्यशक्ति, उसका पुत्र पृथिवीवल्लभ-निकुम्भल्लशक्ति।

(४२१)

क० सं० ४२१-ज० ब० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ २। गुजरात के चौलुक्य युवराज श्याश्रय-शीलादित्य का नौसारी में दानपत्र जो नवसारिका में दिया गया था।

चौलुक्यों के वंश में पुल्केशि-वल्लभ, उसका पुत्र धराश्रय-जयसिंह (महाराजाधिराज विक्रमादित्य-सत्याश्रय-पृथिवी-वल्लभ का छोटा भाई), उसका पुत्र युवराज श्याश्रय-शीलादित्य।

(४२२)

क० सं० ४४३-वी० ओ० का० पृष्ठ २२९। पश्चिमी चलुक्य

विनयादित्य-सत्याश्रय-वल्लभ के समय का गुजरात चलुक्य युवराज श्याश्रय-शीलादित्य का सूरत में दानपत्र जो कार्मणेय के समीप कुसुमेश्वर में दिया गया था।

महाराज सत्याश्रय-पुलकेशि-वल्लभ (जिसने उत्तरखण्ड के राजा हर्षवर्धन को पराजित किया था), उसका पुत्र महाराज विक्रमादित्य-सत्याश्रय-वल्लभ, उसका पुत्र महाराजाधिराज विनयादित्य सत्याश्रय-श्रीपृथिवीवल्लभ, उसका चाचा धराश्रय-जयसिंह वर्मन, उसका पुत्र युवराज श्याश्रय-शीलादित्य।

(४२३)

क० सं० ४५६—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ७७। गुर्जर जयभट तृतीय का नौसारी में दानपत्र जो कायावतार में दिया गया था।

महाराज कर्ण के वंश में दद [द्वितीय] (जिसने हर्षदेव से पराजित किए हुए वल्लभी के एक राजा की रक्षा की थी), उसका पुत्र जयभट [द्वितीय], उसका पुत्र दद [तृतीय] बाहुसहाय, उसका पुत्र जयभट [तृतीय]।

(४२४)

क० सं० ४८६—इ० ए० भाग ५ पृष्ठ ११३। गुर्जर जयभट तृतीय का काबी में दानपत्र।

(४२५)

क० सं० ४९०—बी० ओ० का० पृष्ठ २३०। गुजरात के चालुक्य पुलकेशिराज का नौसारी में दानपत्र।

महाराजाधिराज सत्याश्रय-पृथिवीवल्लभ-कीर्तिवर्मराज, उसका पुत्र सत्याश्रय-पुलकेशि वल्लभ (जिसने उत्तरखण्ड के राजा हर्षवर्धन को पराजित किया), उसका पुत्र सत्याश्रय-विक्रमादित्यराज, उसका छोटा भाई धराश्रय जयसिंहवर्मराज, उसका पुत्र जयाश्रय मङ्गलरसराज, उसका

छोटाभाई पुलकेशिराज (जिसने राजा श्रीवल्लभ से अवनिजनाश्रय का नाम) तथा उसकी और उपाधियाँ पाई थीं)।

(४२६)

क० सं० ७२४—इ० ए० भाग २० पृष्ठ ८९। योगी महान्त शिव तथा मत्तमपुर के अन्य जनों का चन्द्रेह में शिलालेख जिसे मेहुक के पौत्र तथा जेईक और अमरिका के पुत्र धांसट ने सङ्कलित किया था।

(४२७)

क० सं० ७८९ (?)—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ ११२। कलचुरि (चेदि) गङ्गेयदेव का पिआवन की चट्टान पर शिलालेख।

(४२८)

क० सं० ७९३—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३०९। त्रिकलिङ्गाधिपति कलचुरि (चेदि) महाराजाधिराज कर्णदेव का बनारस में दानपत्र जो प्रयाग में वेणी के तट पर दिया गया था।

हैहय वंश में कोकल्ल [प्रथम] (जो भोज, वल्लभराज, चित्रकूट के चन्देल्ल हर्ष तथा शङ्करगण का समकालीन था और जिसने चन्देल्ल राजकुमारी नट्टा (नट्टादेवी) से विवाह किया), उसका पुत्र प्रसिद्धधवल, उसका पुत्र बालहर्ष और युवराज [प्रथम], युवराज का पुत्र लक्ष्मणराज, उसका पुत्र शङ्करगण और युवराज [द्वितीय], युवराज का पुत्र कोकल्ल [द्वितीय], उसका पुत्र गाङ्गेय, उसका पुत्र कर्ण।

(४२९)

क० सं० ८४०—आ० स० इ० भाग १७ पृष्ठ ११। राजा नरसिंहदेव के राज्यकाल का भेड़ाघाट में शिलालेख।

(४३०)

क० सं० ८६६—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३४। रत्नपुर के जाजल्लदेव प्रथम का रत्नपुर (अब रतनपुर मध्यप्रदेश) में शिलालेख।

हैहयवंश में चेदि का राजा कोकल्ल था जिसके अठारह पुत्रों में से सबसे बड़ा पुत्र त्रिपुरी का राजा हुआ। उस के एक छोटे पुत्र की सन्तति कलिङ्गराज ने दक्षिणकोशल को विजय किया, उसका पुत्र कमलराज, उसका पुत्र रत्नराज (रत्नेश) [प्रथम] जिसने कोमो मण्डल के वज्जूक की पुत्री नोनल्ल से विवाह किया, उनका पुत्र पृथ्वीश (पृथ्वीदेव) [प्रथम] जिसने राजल्ला से विवाह किया, उनका पुत्र जाजल्ल [प्रथम] (जो किसी सोमेश्वर का समकालीन था)।

(४११)

क० सं० ८७४–ए० इ० भाग २ पृष्ठ १। कलचुरी (चेदि) महाराजाधिराज यशःकर्णदेव का जबलपुर (अब नागपुर म्यूज़ियम) में प्रथमशिलालेख।

कलचुरिवंश में त्रिपुरी का युवराज [द्वितीय], उसका पुत्र कोकल्ल [द्वितीय], उसका पुत्र गाङ्गेयदेव-विक्रमादित्य, उसका पुत्र कर्ण जिसने हूणराजकुमारी आवल्लदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र यशःकर्ण।

(४१२)

क० सं० ८९३–इ० ए० भाग १० पृष्ठ ८४। रतनपुर के पृथ्वीदेव द्वितीय के राजकाल का कुगड़ में खण्डितशिलालेख।

इस शिलालेख में रानी लाच्छल्लदेवी, रत्नदेव (?), तथा किसी वल्लभराज का उल्लेख है।

(४१३)

क० सं० ८९६–इ० ए० भाग १७ पृष्ठ १३९। रतनपुर के पृथ्वीदेव द्वितीय के समय का नायक जगपाल (जगसिंह) का राजिम में शिलालेख जिसे ममीधर के पुत्र जसानन्द ने उत्कीर्ण किया था।

इस शिलालेख में जाजल्ल (प्रथम) रत्नदेव द्वितीय और पृथ्वीदेव (द्वितीय) का उल्लेख तथा जगपाल के वंश का वर्णन है जिस का प्रारम्भ ठाकुरसाहिल्ल से हुआ जो उस राजमालवर्धन का एक उच्च

भूषण था जिसने पंचहंसवंश को आनन्दित किया था । साहिल का एक छोटा भाई वासुदेव और तीन पुत्र मायिल, देसल और स्वामी थे। स्वामी के लड़के जयदेव और देवसिंह हुए जिसमें से एक का पुत्र मोपाल हुआ जिसके गामल और जयंतसिंह दो छोटे भाई हुए।

(४३४)

क० सं० ८९८—आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ ८६ तथा स० ए० कनिंघम की प्रतिलिपि । किसी सेओरिनारायन के शिलालेख का समय।

(४३५)

क० सं० ९०२—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१० । कलचुरि (चेदि) गयाकर्णदेव तथा उसके पुत्र युवराज नरसिंह के समय का तेवर में शिलालेख जिसे धरणीधर के पुत्र पृथ्वीधर ने सङ्कलित किया था।

आत्रेयगोत्र में कर्ण, उसका पुत्र यशःकर्ण, उसका पुत्र गयाकर्ण, उसका पुत्र युवराज नरसिंह,

(४३६)

क० सं० ९०७—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १० तथा जे० ए० ओ० एस० पृष्ठ १०७ । गयकर्ण देव की विधवा कलचुरि (चेदि) रानी अल्हण देवी का, उसके पुत्र नरसिंहदेव के राज्यकाल का भेड़ाघाट (अब अमेरिकन ओरियन्टल सोसायटी) में शिलालेख जिसे धरणीधर के पुत्र शशिधर ने सङ्कलित किया था।

चन्द्रात्रेय सहस्रार्जुन के वंश में कोक्कल [द्वितीय], उसका पुत्र गाङ्गेय, उसका पुत्र कर्ण, उसका पुत्र यशःकर्ण, उसका पुत्र गयकर्ण जिसने विजयसिंह (जो मेवाड़ के गुहिल वैरिसिंह का पुत्र था) और उसकी रानी श्यामलदेवी (जो मालवा के परमार उदयादित्य की पुत्री थी) की एक पुत्री अल्हणदेवी से विवाह किया, उनके पुत्र नरसिंह तथा जयसिंह हुए।

(४३७)

क० सं० ९०९—इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१२ तथा आ०
० इ० भाग ९। त्रिकलिङ्गाधिपति कलचुरि (चेदि) नरसिंहदेव
समय का लाल पहाड़ चट्टान पर शिलालेख।

(४३८)

क० सं० ९१०—आ० स० इ० भाग १७। रत्नपुर के पृथ्वी-
व द्वितीय के राजकाल के रत्नपुर (अब नागपुर म्युजियम) में
क शिलालिप का समय।

(४३९)

क० सं० ९१९—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ४०। रत्नपुर के जाज-
देव द्वितीय के समय का मल्हार (अब नागपुर म्युजियम) में शिलालेख
जसे वास्तव्यवंश के मामे के पुत्र रत्नसिंह ने सङ्कलित किया था।

चन्द्रवंश में रत्नदेव द्वितीय (जिसने चोडगङ्ग को पराजित किया
ा), उसका पुत्र पृथ्वीदेव द्वितीय, उसका पुत्र जाजल्ल द्वितीय।

(४४०)

क० सं० ९२६—इ० ए० भाग १७ पृष्ठ २२९। त्रिकलिङ्गा-
धिपति कलचुरि (चेदि) महाराजाधिराज जयसिंहदेव के राज-
ाल का, कक्करेडिका के महाराणक कीर्त्तिवर्मन का रीवां (बङ्ग-
ल एशियाटिक सो० म्युजियम) में दानपत्र।

कौरववंश में महाराणक जयवर्मन, उसका पुत्र महाराणक वत्स-
ाज, उसका पुत्र महाराणक कीर्त्तिवर्मन।

(४४१)

क० सं० ९२८—आ० स० इ० भाग ९ पृष्ठ १११ तथा इ०
० पृष्ठ ९१। भेराघाट का शिलालेख।

(४४२)

क० सं० ९२८—ए० इ० भाग २ पृष्ठ १८ तथा बे० टे०

ये० इ० पृष्ठ ११९ गयाकर्ण के पुत्र तथा नरसिंह देव के छोटे भा
कलचुरि (चेदि) जयसिंहदेव के समय का तेवर (अब अमेरिकन
ओरियण्टल सोसायटी) में शिलालेख ।

(४४३)

क० सं० ९३२—ज० ए० ए० सो० भाग ८ पृष्ठ ४८१ तथा
भाग ३१ पृष्ठ ११६ । कलचुरि (चेदि) विजयसिंहदेव तथा
उसकी माता गोसलदेवी का कुम्भी में दानपत्र जो नर्मदा के तट पर
त्रिपुरी में दिया गया था ।

यशहकर्ण तक वंशावली संख्या ४३१ में, यशहकर्ण का पुत्र
गयाकर्ण जिसने अल्हणदेवी से विवाह किया, उनका पुत्र नरसिंह, उसका
छोटा भाई जयसिंह, उसका पुत्र विजयसिंह, महाकुमार अजयसिंह।

(४४४)

क० सं० ९३३—इ० ए० भाग २२ पृष्ठ ८२ । रत्नपुर के
रत्नदेव तृतीय के समय का खोरोद में शिलालेख ।

हैहयवंश में कलिङ्ग, उसका पुत्र कमल, उसका पुत्र रत्नरा
[प्रथम], उसका पुत्र पृथ्वीदेव प्रथम, उसका पुत्र जाजल्ल प्रथम (जि
सने सुवर्णपुर के भुजबल को पराजित किया), उसका पुत्र रत्नदे
द्वितीय (जिसने कलिङ्ग के चोडगङ्ग को पराजित किया), उसका पु
पृथ्वीदेव द्वितीय , उसका पुत्र जाजल्ल द्वितीय जिसने सोमल्लदेवी
विवाह किया , उनका पुत्र रत्नदेव तृतीय ।

(४४५)

क० सं० ९३४—आ० स० इ० भाग १७ । यशोराम क
लक्ष्मपुर में एक मूर्ति पर शिलालेख ।

इस शिलालेख में यशोराम के अतिरिक्त रानी लक्ष्मदेवी (!
राजकुमार [illegible] और रामदेव, तथा राजकुमारी [illegible] का वर्णन है

(४४६)

क० सं० ९३८—आ० स० इ० भाग २१ पृष्ठ १०२ बैशा
में [illegible] ।

---

(५) कलचुरी संवत् के बिना समय के शिलालेख।

—:०:—

(४४७)

गु० इ० पृष्ठ १२० । महाराज सर्वनाथ का खोह में प्रथम दानपत्र जो उच्चकल्प में दिया गया था।

(४४८)

ए० इ० भाग २ पृष्ठ २१। भोगिकपाल महापिलुपति निरिहुल्लक (जिसने कृष्णराज के पुत्र [कलचुरि ?] शङ्करण [शङ्करगण] के चरणों का ध्यान किया था) के बलाधिकृत शान्तिल्ल का सावेडा में प्रथम दानपत्र जो निर्गुण्डिपद्रक में दिया गया था।

(४४९)

ए० इ० भाग २ पृष्ठ १७९। कलचुरि (चेदि) लक्ष्मणराज तथा उसके मंत्री सोमेश्वर (युवराज के मंत्री भाकमिश्र का पुत्र था) के समय का कारीतलाई (अब जबलपुर म्यूज़ियम) में खण्डित शिलालेख। इसमें युवराज [प्रथम], [उसके पुत्र] लक्ष्मणराज जिसकी रानी राहा थी, और [उसके पुत्र] शङ्कर(गण) का वर्णन है।

(४५०)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ २५४। कलचुरि (चेदि) युवराजदेव द्वितीय का बिल्हरि (अब नागपुर म्यूज़ियम) में शिलालेख। (इस शिलालेख के प्रथम अंश को शिवानन्द के पुत्र श्रीनिवास ने, द्वितीय अंश को धीर के पुत्र सज्जन ने तथा अंत के श्लोकों को [illegible] ने सङ्कलित किया था)।

हैहयवंश में कोकल्ल [प्रथम] जिसने दक्षिण में कृष्णराज तथा उत्तर में भोजदेव की सहायता की थी); उसका पुत्र मुग्धतुङ्ग; उसका पुत्र केयूरवर्ष युवराज [प्रथम जिसने [illegible] (जो [illegible]

तथा सधन्व के पुत्र चौलुक्य अवनिवर्मन की पुत्री थी) से विवाह किया उनका पुत्र लक्ष्मणराज; उसका पुत्र शङ्करगण; उसका लघुभ्राता युवराज [द्वितीय]-इस शिलालेख में एक शैव योगी मत्तमयूरनाथ के सम्बन्ध में किसी राजा अवन्ति का भी वर्णन है ।

(४९१)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ ३५४ । रनोड (नरोड अथवा नरोद) का शिलालेख जिसमें कुछ शैवयोगिओं (कदम्बगुहाधिवासिन, शङ्खमठिकाधिपति, तेरम्बिपाल, आमर्दकतीर्थनाथ, पुरन्दर, कवचशिव सदाशिव, हृदयेश, और व्योमशिव) का वर्णन तथा (पुरन्दर के सम्बन्ध में) किसी राजा अवन्ति या अवन्तिवर्मन का वर्णन है जो मत्तमयूर पर रहता था' इसे देवदत्त ने सङ्कलित किया था।

(४९२)

इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २११ । कलचुरि (चेदि) जयसिंहदेव का करनबेल में अधूरा शिलालेख ।

कलचुरि वंश में युवराज द्वितीय, उसका पुत्र कोकल्ल द्वितीय, उसका पुत्र गाङ्गेय, उसका पुत्र कर्ण, उसका पुत्र यशःकर्ण, उसका पुत्र गयकर्ण जिसने [गुहिल] विजयसिंह (जो मेदपाट में हंसपाल के पुत्र वैरिसिंह का पुत्र था) तथा उसकी पत्नी श्यामलदेवी (जो धारा के परमार उदयादित्य की कन्या थी) की पुत्री अल्हणदेवी से विवाह किया; उनके पुत्र नरसिंह और जयसिंह ।

(४९३)

इ० ए० भाग १८ पृष्ठ २१८ । कलचुरि (चेदि) विजयसिंह देव के समय का जबलपुर में खण्डितशिलालेख । इस शिलालेख में कलचुरि राजा कर्ण, यशःकर्ण, गयकर्ण, नरसिंह, जयसिंह, जिसने गोसलदेवी से विवाह किया, और उनके पुत्र विजयसिंह का वर्णन है ।

(४९४)

ई० ए० भाग २० पृष्ठ ८४ । रत्नपुर के कलचुरि अनुशासकों का अकलतारा में खण्डितशिलालेख, जिसमें रत्नदेव, हरिगण, जाजल्लदेव, वल्लभराज, और जयसिंह देव का उल्लेख है ।

(४९५)

ई० ए० भाग २० पृष्ठ ८४ । रत्नपुर के कलचुरि अनुशासकों का मुहम्मदपुर में शिलालेख जिसमें जाजल्लदेव, रत्नदेव, पृथ्वीदेव, तथा वल्लभराज का उल्लेख है ।

(४९६)

ई० ए० भाग २० पृष्ठ ८९ । सेवर में एक खण्डितशिलालेख, जिसमें भीमपाल का उल्लेख है ।

---

(६) गुप्तवल्लभी संवत के शिलालेख ।

(४९७)

गु० सं० ८२–गु० इ० पृष्ठ २१ । उदयगिरि की गुहा में शिलालेख जिसमें महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय के अधीनस्थ महाराज छगलग के पौत्र तथा महाराज विष्णुदास के पुत्र सनकानिक महाराज....ध (?) ल के एक दान का वर्णन है ।

(४९८)

गु० सं० ८८–गु० इ० पृष्ठ ३७ । महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूज़ियम) में शिलालेख ।

(४९९)

गु० सं० ९३–गु० इ० पृष्ठ ३१ । महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय का साञ्ची में शिलालेख जिसमें काकनादबोट (अर्थात् साञ्ची) के महाविहार में एक दान का वर्णन है जो आर्य सिंह को दिया गया था ।

(४६०)

गु० सं० ९६—गु० इ० पृष्ठ ४३। महाराजाधिराज कुमारगुप्त प्रथम के राजकाल का किसी ध्रुवशर्मन का विल्सड के स्तूप का शिलालेख।

महाराज गुप्त; उसका पुत्र महाराज घटोत्कच; उसका पुत्र महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त [प्रथम]; उसका पुत्र, लिच्छवि की पुत्री कुमारदेवी से, महाराजाधिराज समुद्रगुप्त; उसका पुत्र, दत्तदेवी से, महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त [द्वितीय]; उसका पुत्र, ध्रुवदेवी से महाराजाधिराज कुमारगुप्त [प्रथम]।

(४६१)

गु० सं० ९८—गु० इ० पृष्ठ ४१। महाराजाधिराज कुमारगुप्त प्रथम के समय का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) शिलालेख।

(४६२)

गु० सं० १०६—गु० इ० पृष्ठ २५८। उदयगिरि की गुहा का जैन शिलालेख।

(४६३)

गु० सं० ११३ (?)—ए० इ० भाग २ पृष्ठ २१०। महाराजाधिराज कुमारगुप्त प्रथम के राजकाल का मथुरा (अब लखनऊ म्यूजियम) की जैनमूर्ति का शिलालेख।

(४६४)

गु० सं० १२९—गु० इ० पृष्ठ ४६। महाराज कुमारगुप्त प्रथम के राजकाल का मनकुवार में बौद्ध शिलालेख।

(४६५)

गु० सं० १३१—गु० इ० पृष्ठ २६१। साँची का शिलालेख जिसमें एक दान का वर्णन है जो काकनादबोट (साँची) के महाविहार में अर्पित किया गया था।

(४६६)

गु० सं० १३१—गु० इ० पृष्ठ २६३। मथुरा (अब लखनऊ म्यूजियम) की एक बौद्ध मूर्ति का लेख।

(४६७)

गु० सं० १३६, १३७ तथा १३८—गु० इ० पृष्ठ ९८ तथा भा० इ० पृष्ठ २४। राजाधिराज स्कन्दगुप्त के समय का जूनागढ़ के चट्टान का शिलालेख जिसमें सुराष्ट्र के अनुशासक पर्णदत्त के पुत्र चक्रपालित का सुदर्शन झील की बाँध को दुरुस्त कराने का उल्लेख है।

(४६८)

गु० सं० १३९—गु० इ० पृष्ठ २६७। महाराज भीमवर्मन के समय का एक मूर्ति पर का खंडितशिलालेख।

(४६९)

गु० सं० १४१—गु० इ० पृष्ठ ६६। स्कन्दगुप्त के राजकाल का कहाऊ के जैनस्तूप का शिलालेख।

(४७०)

गु० सं० १४६—गु० इ० पृष्ठ ७०। महाराजाधिराज स्कन्दगुप्त तथा उनके अधीनस्थ अन्तर्वेदी देश के विषयपति शर्वनाग के समय का ब्राह्मण देवविष्णु का इंदौर में दानपत्र।

(४७१)

गु० सं० १४८—गु० इ० पृष्ठ २६८। गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) का खंडित पत्थरशिलालेख।

(४७२

गु० सं० १५६—गु० इ० पृष्ठ ९९। महाराज देवपद के. दाऊँड

महाराज प्रभञ्जन के पौत्र तथा महाराज दामोदर के पुत्र परिव्राजक महाराज हस्तिन का खोह (अब लखनऊ म्यूजियम ?) में दानपत्र।

(४७३)

गु० सं० (?) १६८—ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३६४ । महाराज लक्ष्मण का पाली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो जयपुर में दिया गया था।

(४७४)

गु० सं० १६३—गु० इ० पृष्ठ १०२ । परिव्राजक महाराज हस्तिन का खोह (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र।

(४७५)

गु० सं० १६५—गु० इ० पृष्ठ ८९ । बुधगुप्त तथा उसके अधीनस्थ महाराज सुरश्मिचन्द्र के समय का ईरान के स्तूप का शिलालेख जिसमें महाराज मातृविष्णु तथा उसके छोटे भाई धन्यविष्णु के एक स्तूप बनवाने का वर्णन है।

(४७६)

गु० सं० १९१—गु० इ० पृष्ठ ९२ । राजा माधव के पुत्र तथा किसी राजा भानुगुप्त के अनुगामी (?) गोपराज की विधवा का ईरान के सतीस्तूप पर शिलालेख।

(४७७)

गु० सं० १९१—गु० इ० पृष्ठ १०७ । परिव्राजक महाराज हस्तिन के समय का मझगवाँ में दानपत्र।

(४७८)

गु० सं० २०७—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३२० । वलभी के महासामन्त मैत्रक ध्रुवसेन प्रथम का पालीताना (बड़ोदा) में दानपत्र जो [illegible] में दिया गया था।

मैत्रक वंश में सेनापति भटक्क (भटार्क), उसका पुत्र सेनापति धरसेन [प्रथम] ; उसका छोटा भाई महाराज द्रोणसिंह, उसका छोटा भाई महासामन्त महाराज ध्रुवसेन [प्रथम] ।

(४७९)

गु० सं० २०७—इ०ए० भाग ५ पृष्ठ २०५। वल्लभी के महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का भावनगर में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था।

(४८०)

गु० सं० २०९—गु० इ० पृष्ठ ११४। योगिराज सुशर्मन के वंश के महाराज देवाढ्य के पुत्र महाराज प्रभञ्जन के पौत्र, महाराज दामोदर के पौत्र तथा महाराज हरिन के पुत्र परिव्राजक महाराज **संक्षोभ** का खोह में दानपत्र।

(४८१)

गु० सं० २१६—इ० ए० भाग ४ पृष्ठ १०५। वल्लभी के महासामान्त महाप्रतिहार महादण्डनायक महाकार्त्ताकृतिक महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का वला में दानपत्र जो पुड्डवेद्रियग्राम में दिया गया था।

(४८२)

गु० सं० २१७—ज० रा० ए०सो० १८९५ पृष्ठ ३८२। वल्लभी के महाप्रतिहार महादण्डनायक महाकार्त्ताकृतिक महासामन्त महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का कुटिसम्पूलिका में दानपत्र।

(४८३)

गु० सं० २२१—वी० ओ० भाग ७ पृष्ठ १९३। वल्लभी के महाराज **ध्रुवसेन प्रथम** का बप्पदेवाभि-अंगिका में दानपत्र।

(४८४)

गु० सं० २३०—गु० इ० पृष्ठ २७१। मथुरा (अब लखनऊ म्युजियम) के बौद्धमूर्ति का शिलालेख।

(४८५)

गु० सं० २४० (? २३७)–इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ६७। वलभी के महाराज गुहसेन का दानपत्र।

भटार्क से ध्रुवसेन प्रथम तक की वंशावली संख्या ४७८ है; इसके पश्चात (धरपट्ट [संख्या ४८९] को छोड़ कर) महाराज गुहसेन।

(४८६)

गु० सं० २४६–इ० ए० भाग ४ पृष्ठ १७५। वलभी के महाराज गुहसेन का वला में द्वितीय दानपत्र।

(४८७)

गु० सं० [२] ४७–इ० ए० भाग १४ पृष्ठ ७५। वला का खण्डित शिलालेख जिसमें वलभी के महाराज गुहसेन का नाम है।

(४८८)

गु० सं० २४८–इ०ए० भाग ५ पृष्ठ २०७। वलभी के महाराज गुहसेन का भावनगर में द्वितीय दानपत्र जो वलभी में दिया गया था।

(४८९)

गु० सं० २५२–भा० इ० पृष्ठ ३१ तथा इ० ए० भाग १५ पृष्ठ १८७। वलभी के सामन्त महाराज धरसेन द्वितीय का हार में दानपत्र जो वलभी में दिया गया था।

भटार्क से ध्रुवसेन प्रथम तक की वंशावली संख्या ४७८ है, ध्रुवसेन का छोटा भाई महाराज धरपट्ट; उसका पुत्र महाराज गुहसेन, उसका पुत्र सामन्त महाराज धरसेन द्वितीय।

(४९०)

गु० सं० २५२–ज० ई० पृष्ठ ११९। वलभी के महाराज धरसेन द्वितीय का मालिया (जूनागढ़) में दानपत्र जो वलभी में दिया गया था।

(४९१)

गु० सं० २५२–इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ६८। वलभी के महाराज धरसेन द्वितीय का [illegible] (जूनागढ़) में दानपत्र जो वलभी में दिया गया था।

(४९२)

गु० सं० २५२—इ० ए० भाग ८ पृष्ठ [illegible] । वल्लभी के महाराज धरसेन द्वितीय का बाम्बे एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था ।

(४९३)

गु० सं० २५२—भा० इ० पृष्ठ ३१। वल्लभी के महाराज धरसेन द्वितीय का कतपुर (अब भावनगर म्यूज़ियम) में दानपत्र जो भद्रपत्तनक (?) में दिया गया था ।

(४९४)

गु० सं० २६९—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ ११ । वल्लभी के महासामन्त महाराज धरसेन द्वितीय का [illegible] में दानपत्र जो भद्रपत्तनक (?) में दिया गया था ।

वक्तव्य संख्या ४८९ में—इस शिलालेख में इसका सामन्त शीलादित्य का उल्लेख है ।

(४९५)

गु० सं० २६९ (?)—गु० इ० पृष्ठ २७९ । बौद्ध गुरु महानामन का बुद्ध गया (अब कलकत्ता म्यूज़ियम) में शिलालेख ।

(४९६)

गु० सं० २७०—इ० ए० भाग ७ पृष्ठ ७१ । वल्लभी के महासामन्त महाराज धरसेन द्वितीय का अमरेली में दानपत्र जो भद्रपत्तनक (?) में दिया गया था ।

इस शिलालेख में भी इसका सामन्त शीलादित्य का उल्लेख है ।

(४९७)

गु० सं० २८६—इ० ए० भाग १ पृष्ठ ४६ । वल्लभी के शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य (धरसेन द्वितीय के पुत्र) का [illegible] दूसरा दानपत्र ।

(४९८)

गु० सं० २८६—३० ए० भाग १४ पृष्ठ ३२९। वल्लभी के **शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य** का वल (अब ब्राम्बे एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था।

भटार्क के वंश में गुहसेन; उसका पुत्र धरसेन द्वितीय; उसका पुत्र शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य।

(४९९)

गु० सं० २९०—३० ए० भाग ९ पृष्ठ २३८। वल्लभी के **शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य** का ढाङ्क (अब राजकोट म्यूजियम) में दानपत्र जो वल्लभी द्वार के सामने होम्व (?) में दिया गया था।

इस शिलालेख में दूतक खरग्रह का उल्लेख है।

(५००)

गु० सं० ३१०—३० ए० भाग ६ पृष्ठ १३ तथा मा० इ० ४०। वल्लभी के **ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य** का बोटाद (भावनगर म्यूजियम) में दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था।

शीलादित्य प्रथम धर्मादित्य तक की वंशावली संख्या ४९८ उसका छोटा भाई खरग्रह [प्रथम]; उसका पुत्र धरसेन तृतीय; उस छोटा भाई ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य।

(५०१)

गु० सं० ३१६—(अथवा ३१८?)—३०ए० भाग १४ पृष्ठ तथा प्रो०वॅ०ऑ० पृष्ठ ७२। लिच्छवि वंश के महाराज **शिवदेव** प्र का गोल्मढि टोल (भाटगाव में) शिलालेख जिसमें एक आज्ञा लि हुई है जो महासामन्त **अंशुवर्मन** की प्रार्थना पर मानगृह में दी गई थी।

(५०२)

गु० सं० ३२६—ज० ब० ए० सो० भाग १० पृष्ठ ७७ त इ० ए० भाग १ पृष्ठ १४। वल्लभी के महाराजाधिराज **धरसेन चतु** का दानपत्र जो वल्लभी में दिया गया था।

ध्रुवसेन द्वितीय बालादित्य तक की वंशावली संख्या १०० में
है। इसका पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर चक्रवर्तिन धरसेन
चतुर्थ। इस शिलालेख में राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक करके लिखा है।

(१०३)

गु० सं० ३२६—ई० ए० भाग १ पृष्ठ ४५। वल्लभी के महा-
राजाधिराज ध्रुवसेन चतुर्थ का भावनगर में द्वितीय दानपत्र।

(१०४)

गु० सं० ३३०—ई० ए० भाग ७ पृष्ठ ७३। वल्लभी के महा-
राजाधिराज धरसेन चतुर्थ का अर्कोना में दानपत्र जो भरुकच्छ में
दिया गया था।

इस शिलालेख में राजदुहिता भूपा को दूतक कर के लिखा है।

(१०५)

गु० सं० ३३०—ई० ए० भाग १५ पृष्ठ ३३९। वल्लभी के
महाराजाधिराज धरसेन चतुर्थ का खैर में दानपत्र जो भरुकच्छ में
दिया गया था।

(१०६)

गु० सं० ३३४—ए० ई० भाग १ पृष्ठ ८६। वल्लभी के ध्रुव-
सेन तृतीय का कावड्ग्वाम में दानपत्र जो सिरिमिम्मणिका में दिया
गया था।

धरसेन चतुर्थ तक की वंशावली संख्या १०२ में; इसका उत्तरा-
धिकारी ध्रुवसेन तृतीय जो धरसेन चतुर्थ के दादा [खरग्रह प्रथम] के
बड़े] भाई शीलादित्य प्रथम के पुत्र देरभट का पुत्र था।

(१०७)

गु० सं० ३३७—ई० ए० भाग ७ पृष्ठ ७६। वल्लभी के खर-
ग्रह द्वितीय का अर्कोना में दानपत्र जो पूर्णेन्द्रक (?) में दिया गया था।
ध्रुवसेन तृतीय तक की वंशावली संख्या १०६ है, इसका उत्तरा-
धिकारी खरग्रह द्वितीय हुआ।

(९०८)

गु० सं० ३५०–९० इ० भाग ४ पृष्ठ ७६ । वल्लभी के **शीलादित्य तृतीय** का लुन्सडी में दानपत्र जो खेटक में दिया गया था।

खरग्रह [द्वितीय] धर्मादित्य तक की वंशावली संख्या ९०७ में उसके पश्चात शीलादित्य तृतीय जो खरग्रह द्वितीय के बड़े भाई शीलादित्य द्वितीय का पुत्र था—इस शिलालेख में राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक कर के लिखा है ।

(९०९)

गु० सं० ३५२–इ० ए० भाग ११ पृष्ठ ३०६ तथा भा० इं० पृष्ठ ४९ । वल्लभी के **शीलादित्य तृतीय** का लुन्सडी (अब भा० नगर म्यूज़ियम) में दानपत्र जो मेवदन में दिया गया था ।

वंशावली संख्या ९०८ में—इसमें भी राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक कर के लिखा है ।

(९१०)

गु० सं० ३५५ (?)—ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ९६८। वल्लभी के **शीलादित्य तृतीय** का कैर में दानपत्र ।

वंशावली संख्या ९०८ में—इसमें भी राजपुत्र ध्रुवसेन को दूतक कर के लिखा है ।

(९११)

गु० सं० ३७२–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ २०९ । वल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य चतुर्थ** का भावनगर में दानपत्र जो आनंदित्य के तगार पर के डेरे में दिया गया था ।

शीलादित्य तृतीय तक की वंशावली संख्या ९०८ में; उसका पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर शीलादित्य चतुर्थ हुआ । इसमें

राजपुत्र खरग्रह को दूतक करके लिखा है।

(९१२)

गु० सं० ३७५—श्री० भा०भाग १ पृष्ठ २९३ तथा मा० ३० पृष्ठ ९९। बल्लभी के महाराजाधिराज शीलादित्य चतुर्थ का देवलि (अब भावनगर म्यूजियम) में दानपत्र जो पूर्णांक ग्राम में दिया गया था।

वंशावली संख्या ९११ में—इसमें भी राजपुत्र खरग्रह को दूतक करके लिखा है।

(९१३)

गु० सं० ३७६—डाक्टर बर्गेस की प्रतिलिपि से। बल्लभी के महाराजाधिराज शीलादित्य चतुर्थ का दानपत्र।

वंशावली संख्या ९११ में—इस शिलालेख में भी राजपुत्र खरग्रह को दूतक करके लिखा है।

(९१४)

गु० सं० ३८२—डाक्टर फ्लीट की प्रतिलिपि से। बल्लभी के महाराजाधिराज शीलादित्य चतुर्थ का दानपत्र जो बल्लभी में दिया गयाथा।

वंशावली संख्या ९११ में—इसमें राजपुत्र धरसेन को दूतक करके लिखा है।

(९१५)

गु० सं० ३८३—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९३। मानदेव का चाङ्गुनारायण (काठमाण्डु के निकट) के स्तूप पर शिलालेख।

वृषदेव ; उसका पुत्र शङ्करदेव जिसने राज्यवती से विवाह किया ; उसका पुत्र मानदेव।

(९१६)

गु० सं० ४०३—ज० बा० ए० सो० भाग ११ पृष्ठ ३३९। बल्लभी के महाराजाधिराज शीलादित्य पञ्चम का गोण्डल में दानपत्र जो खेटक में दिया गया था।

शीलादित्य चतुर्थ तक की वंशावली संख्या ९११ में; उसका पुत्र परमभट्टारक **महाराजाधिराज परमेश्वर, शीलादित्य** पञ्चम हुआ इसमें राजपुत्र शीलादित्य को दूतक करके लिखा है।

(९१७)

गु० सं० ४०३—ज० बा० ए० सो० भाग ११ पृष्ठ ३३५—वल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य पञ्चम** का गोण्डल में दानपत्र जो खेटक में दिया गया था।

वंशावली संख्या ९१६ में—इसमें भी राजपुत्र शीलादित्य को दूतक करके लिखा है।

(९१८)

गु० सं० ४१३—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६७। **मानदेव** के समय का देवपाटन (काटमाण्डु के निकट) में खण्डित शिलालेख।

(९१९)

गु० सं० ४३५—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६७। महाराज **वसन्तसेन** का लगण्टोल (काटमाण्डु) में खण्डित शिलालेख जो मानगृह में लिखा गया था।

(९२०)

गु०सं० ४४१—इ० ए० भाग ६ पृष्ठ १७। वल्लभी के महाराजाधिराज **शीलादित्य छठवें** का लूणावाडा में दानपत्र जो गोद्रह् में दिया गया था।

शीलादित्य पञ्चम तक की वंशावली संख्या ९१६ में; उसका पुत्र परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर शीलादित्य छठवां।

(९२१)

गु० सं० ४४७—गु० इ० पृष्ठ १७३। वल्लभी के महाराजाधिराज शीलादित्य सप्तम ध्रुवट का अलीना (अब रोयल एशियाटिक सोसाइटी) में दानपत्र जो आनन्दपुर में दिया गया था।

शीलादित्य छठें तक की वंशावली संख्या १२० में; उसका पुत्र मुरत, जिनकी पदवी परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर शीलादित्य [सप्तम] थी।

(१२२)

गु० सं० ५३५–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६८ । लगान्टोल (काटमाण्डू) का खण्डित शिलालेख जिसमें राजपुत्र विक्रमसेन को दूतक करके लिखा है।

(१२३)

गु० सं० ५८५–इ० ए० भाग २ पृष्ठ २५७ । जैनक का मोधी में दूसरा दानपत्र।

(१२४)

गु० सं० ८५०–पी० सी० भाग ३ पृष्ठ ७ तथा भा० इ० पृष्ठ १८६ । पुजेरी भाव बृहस्पति का वेरावल में शिलालेख।

इस शिलालेख में चौलुक्य जयसिंह सिद्धराज और कुमारपाल (जिन्हों ने धारा के राजा बल्लाल को पराजित किया था) का वर्णन है।

(१२५)

गु० सं० ८५० (?)–भा० इ० पृष्ठ १८४ । चौलुक्य कुमारपाल के समय का जूनागढ़ में खण्डित शिलालेख।

(१२६)

गु० सं० ९११–भा० इ० पृष्ठ १९१ । घेलाणा (मान्ग्रोल के निकट) का खण्डित शिलालेख।

(१२७)

गु० सं० ९२७–ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३०३ । वेरावल की मूर्ति का शिलालेख।

(१२८)

गु० सं० ९४५–चौलुक्य (बाघेला) महाराजाधिराज अर्जुनदेव के राजकाल का वेरावल में शिलालेख।

---

(७) गुप्त वल्लभी संवत के बिना समय के शिलालेख।

(१२९)

गु० इ० पृष्ठ १४१ । मेहरौली (मिहरौली) के लोहस्तूप पर खुदा हुआ लेख जिसमें पराक्रमी राजा चन्द्र के विजयों का उल्लेख है जो उसकी मृत्यु के पीछे खोदा गया था।

(१३०)

गु० इ० पृष्ठ ६ । महाराजाधिराज समुद्रगुप्त का इलाहाबाद के स्तूप पर शिलालेख, जिसने कोसल के महेन्द्र, महाकान्तार के व्याघ्रराज, केरल के मण्टराज, पिष्टपुर के महेन्द्र, कोट्टूर पहाड़ी के स्वामिदत्त, एरण्डपल्ल के दमन, काञ्ची के विष्णुगोप, अवमुक्त के नीलराज, वेङ्गी के हस्तिवर्मन, पलक्क के उग्रसेन, देवराष्ट्र के कुबेर, कुस्थलपुर के धनञ्जय तथा दक्षिणापथ के और सब राजाओं को लड़ाई में पकड़ कर फिर छोड़ दिया और रुद्रदेव, मतिल, नागदत्त, चन्द्रवर्मन, गणपतिनाग, नागसेन, अच्युत, नन्दिन, बलवर्मन तथा आर्यावर्त के और राजाओं को उजाड़ दिया था (इसमें गद्य तथा पद्य में एक काव्य है जिसे ध्रुवभूति के पुत्र सन्धिविग्रहिक कुमारामात्य महादण्डनायक हरिषेण ने बनाया [illegible] किया था)

(१३१)

गु० इ० पृष्ठ २० । समुद्रगुप्त का एरण (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख।

(१३२)

गु० इ० पृष्ठ २५४ । महाराजाधिराज समुद्रगुप्त का गया (बिहार) में दानपत्र जो अयोध्या में दिया गया था।

(१३३)

गु० इ० पृष्ठ ३४ । चन्द्रगुप्त द्वितीय के [illegible] का उदयगिरि [illegible] [illegible], [illegible] [illegible], पाटलिपुत्र के [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के खोदे जाने का उल्लेख है।

(१३४)

गु० इ० पृष्ठ २६ । महाराजाधिराज चन्द्रगुप्त द्वितीय का मथुरा (अब लाहौर म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(१३५)

गु० इ० पृष्ठ ४० । महाराजाधिराज कुमारगुप्त प्रथम के राजकाल का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(१३६)

गु० इ० पृष्ठ २६९ । कुमारगुप्त प्रथम के समय का गढ़वा (अब कलकत्ता म्यूजियम) में खण्डित शिलालेख ।

(१३७)

गु० इ० पृष्ठ ४९ । महाराजाधिराज स्कन्दगुप्त के समय का बिहार के खण्डितस्तूप का शिलालेख ।

कुमारगुप्त प्रथम तक की वंशावली संख्या ४६० में; उसका पुत्र महाराजाधिराज स्कन्दगुप्त ।

(१३८)

गु० इ० पृष्ठ ५३ । स्कन्दगुप्त का भितरी के स्तूप पर शिलालेख, जिसमें विष्णु भगवान की एक मूर्ति को स्थापित करने तथा उस मूर्ति के निमित एक ग्रामप्रदान करने का उल्लेख है ।

(१३९)

ज० ब० ए० सो० भाग ५८ पृष्ठ ८९ तथा इ० ए० भाग १९ पृष्ठ २२९—महाराजाधिराज कुमारगुप्त द्वितीय की भितरी (अब लखनऊ म्यूजियम) में मोहर ।

कुमारगुप्त प्रथम तक की वंशावली संख्या ४६० में; उसका पुत्र अनन्त देवी से, महाराजाधिराज पुरगुप्त; उसका पुत्र, वत्सदेवी से, महाराजाधिराज नरसिंहगुप्त; उसका पुत्र, महालक्ष्मी देवी से, महाराजाधिराज कुमारगुप्त [द्वितीय] ।

(११०)

ह० सं० २८—ए० इ० भाग १ पृष्ठ ७२। महाराजाधिराज हर्ष का मधुवन (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र जो कपित्थिक में दिया गया था।

वंशावली संख्या १४९ में—इस शिलालेख में महासामन्त स्कन्दगुप्त और सामन्त महाराज ईश्वरगुप्त का राजपुरुषों की भांति वर्णन है।

(१११)

ह० सं० ३४—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ७४। महासामन्त अंशुवर्मन का सुन्धारा में शिलालेख जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

(११२)

ह० सं० ३४—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १६९। महासामन्त अंशुवर्मन का (काठमाण्डू के निकट) बङ्गमती में खण्डित शिलालेख, जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

(११३)

ह० सं० ३९—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७०। अंशुवर्मन का (काठमाण्डु के निकट) देवपाटन में शिलालेख जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में युवराज उदयदेव का दूतक की भांति उल्लेख है। इसमें अंशुवर्मन की बहिन भोगदेवी का भी, जो राजपुत्र शूरसेन की पत्नी तथा भोगवर्मन और भाग्यदेवी की माता थी, वर्णन है।

(११४)

ह० सं० ४५—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। अंशुवर्मन का (काठमाण्डु के निकट) सनधारा में शिलालेख।

(११५)

ह० सं० ४८—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। विष्णुगुप्त का (काठमाण्डु के निकट) ललितपाटन में शिलालेख, जो कैलासकूट भवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में मानगृह के सम्बन्ध में महाराज ध्रुवदेव का, महाराजाधिराज अंशुवर्मन का तथा दूतक की भांति युवराज विष्णुगुप्त का उल्लेख है।

(९९६)

इ० सं० ६६—गु० इ० पृष्ठ २१०। मगध के गुप्तवंश के आदित्यसेनदेव के राजकाल का शाहपुर के मूर्ति का शिलालेख, जिसमें बलाधिकृत सालपक्ष का नालन्द (?) में इस मूर्ति के स्थापन करने का वर्णन है।

(९९७)

इ० सं० ८२—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ७७। गैरिधारा का खण्डित शिलालेख, जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में युवराज स्कन्ददेव (?) का दूतक की भांति वर्णन है।

(९९८)

इ० सं० १००—मुन्सिफ़ देवीप्रसाद तथा डाक्टर फुहरर की प्रतिलिपियों से। महाराज भोजदेव प्रथम का दौलतपुरा (अब जोधपुर) में दानपत्र जो महोदय (कन्नौज) में दिया गया था।

महाराज देवशक्ति; उस का पुत्र, भूयिकादेवी से, महाराज वत्सराज, उस का पुत्र, सुन्दरीदेवी से, महाराज नागभट, उसका पुत्र ईश्वरीदेवी से, महाराज रामभद्र, उसका पुत्र, अप्पादेवी से, महाराज भोज [प्रथम] [उपनाम प्रभास ?]—इस शिलालेख में युवराज नागभट का भी दूतक की भांति वर्णन है।

(९९९)

इ० सं० ११९—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७४। महाराजाधिराज शिवदेव द्वितीय का लगन्टोल (काटमाण्डु) में शिलालेख, जो कैलासकूटभवन में दिया गया था।

इस शिलालेख में राजपुत्र जयदेव का दूतक की भांति वर्णन है।

(९६०)

इ० सं० १४३–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। महाराजाधिराज शिवदेव द्वितीय का काटमाण्डु में खण्डित शिलालेख।

(९६१)

इ सं १४५–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७०। (काठमाण्डु निकट) ललितपत्तन का खण्डित शिलालेख।

इस शिलालेख में युवराज विजयदेवका दूतक की भांति वर्णन है

(९६२)

इ० स० १५१–मो० बे० ज० पृष्ठ ७९। काटमाण्डु में भै के निकट नहर में एक शिलालेख।

(९६३)

इ० सं० १५६—इ० ए० भाग ९ पृष्ठ ७९। जयदे परचक्रकाम काटमाण्डु में शिलालेख–पांच श्लोकों को छोड कर, जि कि राजा ने स्वयं बनाया था, इसे बुद्ध कीर्ति ने सङ्कलित किया।

सूर्यवंश में लिच्छवि था, उसके कुल में सुपुष्प हुआ जो पुष्पपु (पाटलिपुत्र में) जन्मा; उसके पीछे २३ राजाओं के उपरान्त जयदे हुआ; उसके पीछे ११ राजाओं के उपरान्त वृषदेव हुआ; उसका पु शंकरदेव; उसका पुत्र धर्मदेव; उसका पुत्र मानदेव (संख्या ९१९ ओर ९१८ देखो); उस का पुत्र महीदेव; उस का पुत्र वसन्तदेव (संख्या ९१९ इसके पश्चात् इस शिलालेख में उदयदेव (जिनका ९९३ में युवरा की भांति वर्णन है) का उल्लेख है, उसका पुत्र नरेन्द्रदेव, उसका पु शिवदेव द्वितीय (संख्या ९९९ और ९६०) जिनने मगध के आदि वर्मन की नातिन तथा मौखरि भोगवर्मन की पुत्री वत्सदेवी से विवा किया, उनका पुत्र जयदेव परचक्रकाम जिनने राजा भगदत्त के वंश और कलिङ्ग, कोशल, गौड़ उद्र आदि के राजा हर्षदेव की पुत्री राज्य मती, से विवाह किया।

(९६४)

इ० सं० १५५-इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ११२। महाराज महेन्द्रपालदेव का दिघवा दुबौली में दानपत्र जो महोदय (कन्नौज में दिया गया था।

महाराज देवशक्ति; उसका पुत्र, भूयिकादेवी से, महाराज वत्सराज उसका पुत्र, सुन्दरीदेवी से, महाराज नागभट्ट, उसका पुत्र ईसटदेवी से, महाराज रामभद्र, उसका पुत्र अप्पादेवी से महाराज भोज प्रथम, उसका पुत्र, चन्द्रभट्टारिकादेवी से, महाराज महेन्द्रपाल [उपनाम भाक ?]

(९६५)

इ० सं० १८४-इ० ए० भाग २६ पृष्ठ २९। किसी विग्रह(!) के राजत्वकाल का पंजाब में शिलालेख।

(९६६)

इ० सं० १८८-इ० ए० भाग १९ पृष्ठ १४०। महाराज विनायकपालदेव का बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो महोदय (कन्नौज) में दिया गया था।

महेन्द्रपाल तक की वंशावली संख्या ९६४ में, उसका पुत्र, देहनागादेवी से, महाराज भोज द्वितीय, उसका भाई, अर्थात् महीदेवी से महेन्द्रपाल का पुत्र, महाराज विनायकपाल [उपनाम हर्ष ?]

(९६७)

इ० सं० २१८-इ० ए० भाग २६ पृष्ठ ३१—खजुराहो की मूर्ति का शिलालेख।

(९६८)

इ० सं० २७६-ए० इ० भाग १ पृष्ठ १८६। कन्नौज के महाराजाधिराज रामभद्रदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज भोजदेव के राजत्वकाल का पेहेवा (पेहोआ) में शिलालेख।

(९६९)

इ० सं० ५६४-(वा ९६२ ?)-इ० ए० भाग २६ पृष्ठ २२

तथा आ० स० इ० भाग १४ पृष्ठ ७२। पंजौर के एक शिलालेख की नोटिस।

---

(९) हर्ष संवत् के बिना समय के शिलालेख।

(१७०)

गु० इ० पृष्ठ २३२। महाराजाधिराज हर्षवर्धन का सोनपत के ताम्रपत्र।

वंशावली संख्या १४९ में दी है।

(१७१)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ १८०। कुदारकोट (गवीधुमत, अब लखनऊ म्यूज़ियम) का शिलालेख जिसमें हरिदत्त (जिसने कन्नौज के प्रतापी हर्ष द्वारा प्रतिष्ठा प्राप्त की थी) के पुत्र हरिवर्मन (प्रथम) द्वारा, उस के पुत्र तक्षदत्त के स्मरणार्थ, एक भवन के बनाने का वर्णन है। इसे वामन के पुत्र भद्र ने सङ्कुलित किया था।

(१७२)

गु० इ० पृष्ठ २०२। मगध के गुप्तवंश के आदित्यसेन, उस की माता श्रीमती तथा उनकी पत्नी कोणदेवी का अफसड़ में शिलालेख

कृष्णगुप्त, उसका पुत्र हर्षगुप्त; उसका पुत्र जीवितगुप्त प्रथम, उसका पुत्र कुमारगुप्त (जिसने [मौखरि] ईशानवर्मन से युद्ध किया था) उसका पुत्र दामोदरगुप्त (जो युद्ध में मौखरि से मारा गया), उसका पुत्र महासेनगुप्त (जिसने सुस्थितवर्मन को पराजित किया), उसका पुत्र माधवगुप्त (जो कन्नौज के हर्ष का समकालीन था), उसका पुत्र आदित्यसेन।

(१७३)

गु० इ० पृष्ठ २११। मगध के गुप्तवंश के महाराजाधिराज आदित्यसेनदेव और उनकी पत्नी कोणदेवी का मन्दार की पहाड़ी का शिलालेख।

(९७४)

गु० इ० पृष्ठ २१९। मगध के गुप्तवंश के महाराजाधिराज जीवितगुप्तदेव द्वितीय का दओबरणार्क में शिलालेख जो गोमतिकोट्टक में दिया गया था।

माधवगुप्त, उसका पुत्र, श्रीमती से, आदित्यसेन, उसका पुत्र, कोणदेवी से, महाराजाधिराज देवगुप्त, उसका पुत्र, कमलादेवी से, महाराजाधिराज विष्णुगुप्त, उसका पुत्र, इज्जादेवी से, महाराजाधिराज जीवितगुप्त द्वितीय। इस शिलालेख में बालादित्य, शर्ववर्मन और अवन्तिवर्मन का पूर्वभूत राजाओं की भांति वर्णन है।

(९७५)

गु० इ० पृष्ठ २२९। मुखरवंश के ईश्वरवर्मन का जौनपुर में खण्डित शिलालेख।

(९७६)

गु० इ० पृष्ठ २२०। मौखरि महाराजाधिराज शर्ववर्मन का असीरगढ़ में ताम्रपत्र।

महाराज हरिवर्मन, उसका पुत्र, जयस्वामिनी से, महाराज आदित्यवर्मन, उसका पुत्र, हर्षगुप्ता से, महाराज ईश्वरवर्मन, उसका पुत्र उपगुप्ता से, महाराजाधिराज ईशानवर्मन उसका पुत्र, लक्ष्मीवती से, महाराजाधिराज शर्ववर्मन।

(९७७)

गु० इ० पृष्ठ २२२। शार्दूल के पुत्र मौखरि अनन्तवर्मन का बराबर पहाड़ी के गुहा में शिलालेख।

(९७८)

गु० इ० पृष्ठ २२४ तथा २२७। यज्ञवर्मन के पुत्र शार्दूलवर्मन के पुत्र मौखरि अनन्तवर्मन का नागार्जुनी पहाड़ी की गुहा में शिलालेख।

(९७९)

इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १७१। जिष्णुगुप्त का काठमाण्डु में

खण्डित शिलालेख। इसमें लिच्छविवंश के भट्टारक महाराज ध्रुवदेव का वर्णन है जो मानगृह में रहते थे।

(१८०)

इ० ए० भाग९ पृष्ठ १७४। जिष्णुगुप्त के राजत्वकाल का काटमाण्डु में खण्डित शिलालेख।

---

(१०) नेवार संवत के शिलालेख।

(१८१)

ने० सं० २०३—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ८०। यशोदेव के पुत्र बाणदेव का (काटमाण्डु के निकट) ललितपत्तन की मूर्ति का शिलालेख।

(१८२)

ने० सं० २५९—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ८१। राजाधिराज मान देव के राज्यकाल का थंटोल (काटमाण्डु) में शिलालेख।

(१८३)

ने० सं० ५१२—प्रो० बे० ज० पृष्ठ ८३। महाराजाधिराज जयस्थिति राजमल्लदेव के राज्यकाल का (काटमाण्डु के निकट) ललितपत्तन में शिलालेख।

(१८४)

ने० सं० ५३३—इ० ए० भाग ९, पृष्ठ १८३। महाराजाधिराज जय ज्योतिर्मल्लदेव का काटमाण्डु में शिलालेख।

पूर्वोक्त स्थितिमल्ल ने राजल्ल देवी से विवाह किया; इनके पुत्र धर्ममल्ल, ज्योतिर्मल्ल (जिसने [illegible] देवी से विवाह किया) और कीर्तिमल्ल। इस शिलालेख में ज्योतिर्मल्ल के दामाद जय [illegible] ([illegible]) और जय ज्योतिर्मल्ल के पुत्र यक्षमल्ल ([illegible]

के अधिपति) और दूसरे (?) पुत्र जयन्तराज (जो कि जयलक्ष्मी का पुत्र और जयलक्ष्मी का पति (?) वर्णन किया गया है) का उल्लेख है।

(९८५)

नें० सं० ७१७ । इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १८४ । सिद्धिनृसिंह मल्ल का (काटमाण्डु के निकट) ललित पट्टन में शिलालेख।

राजा हरिसिंह; उस के वंश में महेन्द्रमल्ल; उसका पुत्र शिवसिंह; उसका पुत्र हरिहर सिंह जिसने लालमती से विवाह किया, उनका पुत्र सिद्धिनृसिंहमल।

(९८६)

नें० सं० ७६९ । इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १८८ । प्रताप (जय प्रताप मल्ल देव) का काटमाण्डु में शिलालेख।

सूर्यवंशी रामचन्द्र के वंश में नान्यदेव, उसका पुत्र गङ्गदेव, उसका नृसिंह, उसका पुत्र रामसिंह, उसका पुत्र शक्तिसिंह, उसका पुत्र भूपाल सिंह, उसका पुत्र हरसिंह उसके वंश में यक्षमल्ल, उसका पुत्र रत्नमल्ल, उसका पुत्र सूर्यमल्ल, उसका पुत्र अमरमल्ल, उसका पुत्र महेन्द्रमल्ल, उसका पुत्र शिवसिंह, उसका पुत्र लक्ष्मीनृसिंह, उसका पुत्र प्रताप (जिसने सिद्धिनृसिंहमल्ल तथा औरों का पराजित किया) जिसने रूपमती (जो प्राणनारायण की बहिन और नारायण के पौत्र तथा लक्ष्मीनारायण के पुत्र वीर नारायण की कन्या थी) और राजमती से विवाह किया।

(९८७)

नें० सं० ७७७–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १८९ । महाराजाधिराज जय प्रतापमल्ल देव का काटमाण्डु में शिलालेख जिसे स्वयम् उन्होंने सङ्कलित किया था।

सूर्यवंशी रामचन्द्र के पुत्र लव के वंश में हरिसिंह हुआ (जिसने मिथिला में तालाब खोदवाए तथा नेपाल बसाया), उसका पुत्र यक्ष-मल्ल, उसका पुत्र रत्नमल्ल, उसका पुत्र सूर्यमल्ल, उसका पुत्र नरेन्द्र-

मल्ल, उसका पुत्र महीन्द्रमल्ल, उसका पुत्र शिवसिंह, उसका पुत्र हरिहरसिंह, उसका पुत्र लक्ष्मीनरसिंह, उसका पुत्र प्रतापमल्ल।

(९८८)

ने० सं० ७९२–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९२। राजा श्रीनिवास का (काठमाण्डु के निकट) बङ्गमती में शिलालेख।

(९८९)

ने० सं० ८१०–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९१। राजा भूपालेन्द्रमल्ल की माता रानी रिद्धिलक्ष्मी का काठमाण्डु में शिलालेख।

(९९०)

ने० सं० ८४३–इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १९२। राज कुमारी योगमति का (काठमाण्डु के निकट) ललितपत्तन में शिलालेख जिसमें उसके पुत्र लोक प्रकाश के स्मरणार्थ एक मन्दिर निर्माण करावे का उल्लेख है।

ललितपत्तन के सिद्धिनृसिंहमल्ल, उसका पुत्र श्रीनिवास, उसका पुत्र योगनरेन्द्रमल्ल, उसकी पुत्री योगमती, उसका पुत्र लोक प्रकाश।

---

(११) लौकिक संवत् शास्त्र संवत् बुद्ध के निर्वाण के संवत् लक्ष्मणसेन संवत् सिंह संवत् हिजरी संवत् बङ्गाली सन और इलाही संवत् के शिलालेख।

(९९१)

लौ० सं० ८० ए० इ० भाग १ पृष्ठ १०४। तृगर्त (जालन्धर) के राजा जयचन्द्र के राज्यकाल का तथा कीरग्राम के राणक लक्ष्मणचन्द्र के समय का वैजनाथ में शिलालेख। इसे मन्नुक के पुत्र राम ने खुदवाया।

(९९२)

लाँ० सं० ३०-ए० इ० भाग १ पृष्ठ १२० । सूरि अभयचन्द्र तथा गच्छ राजकुल के और लोगों का कांगड़ा बाजार की जैनमूर्ति का शिलालेख ।

(९९३)

लाँ० सं० ८ -ए० इ० भाग १ पृष्ठ १९२ । कांगड़ा का शिलालेख (जिसमें राजचैत्य का भवानीज्वालामुखी स्तोत्र है) जो मेघचन्द्र के पुत्र कर्मचन्द्र के पुत्र [तृगर्त के] राजा संसारचन्द्र के राजत्वकाल में लगाया गया था ।

(९९४)

लाँ० सं० ६०—आ० डी० सा० गे० भाग ४० पृष्ठ ९ । महम्मदशाह (मुहम्मदशाह) के राजत्वकाल के हरिवर्धन के स्मारक पट की नोटिस ।

(९९५)

शा० सं० ३६—चम्बा के एक शिलालेख की नोटिस ।

(९९६)

शा० स० ३४ और ३६ । महाराजाधिराज श्रीसिंहदेव (!) के चम्बा में एक ताम्रपत्र की नोटिस ।

(९९७)

बु० सं० १८१३—इ० ए० भाग १० पृष्ठ ३४२ । कमादेश के जयतुङ्गसिंह के पौत्र तथा कामदेवसिंह के पुत्र पुरुषोत्तमसिंह का गया में शिलालेख । इस नन्दीवंश के वासुदेव के पौत्र तथा जीवनाग के पुत्र मञ्जुनन्दिन ने सङ्कलित किया ।

इस शिलालेख में सपादलक्ष पर्वत के राजा अशोकवल्ल, जिसके अधीनस्थ पुरुषोत्तम सिंह था, तथा गया के एक सर्दार छिन्द का वर्णन है ।

(९८)

ल० सं० ५१—ज० ब० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ ३१८ तथा सर ए० कनिंघम की महाबोधि पुस्तक। महाराज **अशोकवल्लदेव** का बुद्ध गया में शिलालेख।

(९९)

ल० सं० ७४—इ० ए० भाग १० पृष्ठ ३४६ । सपादलक्ष पर्वत के लघु राजाओं के अधिराज राजाधिराज **अशोकवल्लदेव** के सबसे छोटे भाई **दशरथ** के एक अधीनस्थ राजा का बुद्ध गया में शिलालेख।

(१००)

ल० सं० २९३—इ० ए० भाग १४ पृष्ठ १९० तथा प्रो० ब० ए० सो० १८९१ । [मिथिला के] देवसिंह के पुत्र महाराजाधिराज **शिवसिंहदेव** का बिहार (दरभंगा) में (संदिग्ध ?) दानपत्र जिस में कवि विद्यापति को एक दान देने का वर्णन है जो गजरथपुर में दिया गया था।

(१०१)

सिं० सं० ३२—चौलुक्य कुमारपाल के राजकाल का गुहिल वंश के कुछ लोगों का माङ्गोल (माङ्गलपुर) में शिलालेख।

(१०२)

सिं० सं० ५८—ए० रि० वा० प्रे० । गिरनार की मूर्ति का शिलालेख।

(१०३)

सिं० सं० ६०—चौलुक्य कुमारपाल के समय का [illegible] में [illegible] शिलालेख।

(१०४)

सिं० सं० ७३ इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ११०, तथा इ० ए०

नम्बर १७। चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव [द्वितीय ?] का बाम्बे एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र जो अणहिल पाटक में दिया गया था।

(६०५)

सि० सं० ९६–चौलुक्य महाराजाधिराज भीमदेव द्वितीय के राजकाल का रायल एशियाटिक सोसायटी में दानपत्र।

(६०६)

सि० सं० १५१–चौलुक्य (बाघेला) महाराजाधिराज अर्जुनदेव के राजकाल का वेरावल में शिलालेख।

(६०७)

स० सं० ६६२–चौलुक्य (बाघेला) महाराजाधिराज अर्जुनदेव के राजकाल का वेरावल में शिलालेख।

(६०८)

सन ८०७ (?)–[मिथिला के] देवसिंह के पुत्र महाराजाधिराज शिवसिंहदेव का विहार (दरभङ्गा) में (संदिग्ध ?) दानपत्र जिसमें एक दान का वर्णन है जो कवि विद्यापति को दिया गया था।

(६०९)

अल्लाई (इलाही) संवत ४१–अणहिल्लवाड़ में वाड़ीपुर-पार्श्वनाथ के मन्दिर का शिलालेख।

---

(१२) बिना समय के शिलालेख जिनका ऊपर वर्णन नहीं हुआ है।

(६१०)

गु० इ० पृष्ठ २५२–यौधेय वंश के एक महाराज महासेनापति का, जिनका नाम नष्ट हो गया है, विजयगढ़ (भरतपुर, राजपुताना) में खण्डित शिलालेख।

(६११)

इ० ए० भाग १० पृष्ठ ३४ तथा आ० स० इ० भाग २ शूरसेन वंश के कुछ राजकुमारों का कामा या कामवन (भरत राजपुताना) में एक खण्डित स्तूप पर शिलालेख । फक्क ने दें से विवाह किया; उनका पुत्र कुलभट जिसने द्रङ्गिणी से विवाह कि उनका पुत्र अजित जिसने अम्परःप्रिया से विवाह किया; उनका दुर्गभट जिसने वच्छुल्लिका से विवाह किया; उनका पुत्र दुर्गद जिसने वच्छिका से विवाह किया; उनका पुत्र देवराज जिसने यदि से विवाह किया; उनका पुत्र वत्सदामन ।

(६१२)

गु० इ० पृष्ठ २८३ । नागभट्ट के पुत्र महाराज महेश्वरन का लाहौर में ताम्रपत्र ।

(६१३)

गु० इ० पृष्ठ २७० । तुशाम (पञ्जाब में) की पहाड़ी शिलालेख जिसमें आचार्य सोमत्रात का विष्णु भगवान के निमित्त कुण्ड तथा एक गृह बनवाने का वर्णन है ।

(६१४)

गु० इ० पृष्ठ २८८ । महासामन्त महाराज समुद्रसेन का नि मण्ड (पञ्जाब में) में दानपत्र ।

महासामन्त महाराज वरुणसेन; उसका पुत्र प्रनालिका से, मह सामन्त महाराज सञ्जयसेन; उसका पुत्र, शिखरस्वामिनी से, महासा मन्त महाराज रविषेण; उसका पुत्र, मिहिरलक्ष्मी से, महासामन्त महा राज समुद्रसेन । इस शिलालेख में महाराज शर्मवर्मन का भी पूर्वभूत राजा की भाँति, वर्णन है ।

(६१५)

इ० ए० भाग ५७ पृष्ठ ११—महाराजाधिराज मालवाहनदेव (जिन्हें

पाहमाङ्क, निम्बइमङ्क, मटमट सिंह और कलिवर्ष भी कहते हैं और जो पौरव के. साहिल्लदेव के वंश में अर्थात् सूर्यवंश में हुए थे) और उनकी रानी रद्दादेवी के पुत्र महाराजाधिराज सोमवर्मदेव का तथा उनके उत्तराधिकारी आसटदेव का चम्बा (पञ्जाब में) में दानपत्र जो चणपका में दिया गया था ।

(६१६)

इ० ए० भाग १७ पृष्ठ १० । महाराजाधिराज साणिक्यवर्मन के उत्तराधिकारी महाराज भोटवर्मदेव का चम्बा (पञ्जाब में) में दानपत्र जो चणपका में दिया गया था ।

(६१७)

आ० स० इ० भाग १४ पृष्ठ १११—आदित्यवर्मदेव के प्रपौत्र, बलवर्मदेव के पौत्र तथा दिवाकरवर्मदेव के पुत्र महाराजाधिराज मेरुवर्मन का बर्माउर (पञ्जाब में) की मूर्ति का शिलालेख ।

(६१८)

गु० इ० पृष्ठ २६० । पहाड़पुर (पश्चिमोत्तर प्रदेश के गाज़ीपुर जिले में, अब बनारस कालिज) के कुछ नष्ट स्तूप का शिलालेख जिस में राजा (?) शिशुपाल का तथा पार्थिवस (?) का नाम है ।

(६१९)

गु० इ० पृष्ठ २७१ । देओरिया (पश्चिमोत्तर प्रदेश के इलाहाबाद जिले में, अब लखनऊ म्यूजियम) की मूर्ति का शिलालेख जिस में शाक्य योगी बोधिवर्मन द्वारा बुद्ध की मूर्ति के दान दिए जाने का वर्णन उस मूर्ति के नीचे खुदा है ।

(६२०)

गु० इ० पृष्ठ २८१ । सारनाथ (बनारस के निकट, अब कलकत्ता म्यूजियम) का शिलालेख जिसमें लिखा है कि वेशचित्र जिनमें

बुद्ध के जीवन के दृश्य खुदे हैं और जिनके नीचे यह लेख है भिक्षु
हरिगुप्त की आज्ञा से खोदा गया था ।

(६२१)

गु० इ० पृष्ठ २७२ । कमिआ (गोरखपुर जिले में) की मूर्
का शिलालेख जिसमें महाविहारस्वामिन **हरिबल** द्वारा उस मूर्ति क
वर्णन है ।

(६२२)

ए० इ० भाग १ पृष्ठ १२ । लक्खामण्डल (जौनसार बावर जि
में मढ़ा में) का शिलालेख जिसमें सिंघपुर के राजवंश की राजकुम
ईश्वरा का अपने मृतपति चन्द्रगुप्त के, जो कि जालन्धर के जि
राजा का एक लड़का था, निमित्त एक शिवालय समर्पण करने
उल्लेख है । इसे भट्ट क्षेमशिव के पौत्र तथा भट्ट स्कन्द के पुत्र
वसुदेव ने सङ्कलित किया ।

सिंघपुर के यदुवंशी राजाओं में सेनवर्मन हुआ ; उसका पुत्र
देववर्मन ; उसका पुत्र दत्तवर्मन ; उसका पुत्र प्रदीप्तवर्मन ; उसका पु
ईश्वरवर्मन ; उसका पुत्र वृद्धिवर्मन ; उसका पुत्र सिंहवर्मन ; उसका पु
जलवर्मन ; उसका पुत्र यज्ञवर्मन ; उसका पुत्र अचलवर्मन-समरघट्ट
उसका पुत्र दिवाकर वर्मन-मदिघ्नल ; उसका छोटाभाई भास्कर [अचैव
त्रिपुरघ्नल जिसने कपिलवर्मन की पुत्री जयावली से विवाह किया
उनकी पुत्री ईश्वरा जिसने जालन्धर के राजा के पुत्र चन्द्रगुप्त
विवाह किया ।

(६२३)

इ० गु० पृष्ठ २८९ । काशी (?) के बालादित्य और [illegible]
के पुत्र राजा प्रकटादित्य का प्रासाद (बनारस के निकट, [illegible]
[illegible]) में प्राप्त [illegible] शिलालेख) । इस शिलालेख
में एक और बालादित्य का वर्णन है ।

मदनपाल और देवपाल; देवपाल का पुत्र भीमपाल ; उसका पुत्र सू-पाल; उसका पुत्र अमृतपाल; उसका छोटा भाई लवणपाल। इस शिला-लेख में शैव योगी धर्मशिव (जिसका पूर्व निवास अणहिल पा में था), मूर्ति गण और ईशान शिव (जो हरियाण देश में पल्ली के निवासी वत्सराज का सबसे बड़ा पुत्र था) का भी वर्णन

(६२८)

इ० ए० भाग १६ पृष्ठ ९९। महाराज रुद्रदास का शि (खान्देश में) खण्डित दानपत्र।

(६२९)

ज० बा० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ ९०। राजा मानाङ्क के प्र देवराज के पौत्र तथा भविष्य के पुत्र राष्ट्रकूट अभिमन्यु का दान जिसमें एक दान का, जो (किसी जयसिंह के सामने जो कि कोई वत्स का दण्डप्रणेता वर्णन किया गया है) मानपुर में दिया गया वर्णन है।

(६३०)

आ० सा० वे० इ० भाग ४ पृष्ठ १३३। अजण्टा का नष्ट शिलालेख जिसमें बौद्ध योगी बुद्धभद्र का एक गुहा में मं बनवाने का वर्णन है। इस शिलालेख में राजा अश्मक के मंत्री भ राज और देवराज का तथा योगी स्थविर अचल का भी वर्णन है।

(६३१)

गु० इ० पृष्ठ २८०। साञ्ची (भूपाल राज्य में) के खण्डि स्तूप का शिलालेख। ऐसा जान पड़ता है कि इसमें गोशूर सिंहबल पुत्र विहारस्वामिन रुद्र....के इस स्तूप को दान करने का वर्णन है।

(६३२)

गु० इ० पृष्ठ १९३। आरङ्ग (मध्यप्रदेश में, अब नागपु म्यूजियम) में महा जयराज का दानपत्र जो शरभपुर में दिया गया था

(११३)

गु० इ० पृष्ठ १९७ । महा-सुदेवराज का रायपुर (मध्यप्रदेश में, अब रायपुर म्युज़ियम) में दानपत्र जो शरभपुर में दिया गया था ।

(११४)

ज० ब० ए० सो० भाग ३५ पृष्ठ १९९ । महासुदेवराज के सारंगपुर (मध्यप्रदेश में) में प्रथम और द्वितीय दानपत्र जो शरभपुर में दिए गए थे ।

(११५)

ज० ब० ए० सो० भाग १७ पृष्ठ ६९ । उदयपुर (ग्वालियर) का शिलालेख जिसमें सूर्य की स्तुति है ।

(११६)

आ० स० इ० भाग २१ । कालञ्जर की पहाड़ी पर शिलालेख। इसमें पाण्डव वंश के एक राजा उदयन का वर्णन है ।

(११७)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २५७ । नागपुर म्युज़ियम के एक खण्डित शिलालेख की फ़ोटोग्राफ़, जिसका एक छायोपाक तथा अनुवाद ज० बा० ए० सो० भाग १ पृष्ठ १५१ में दिया है । इस शिलालेख में पहिले एक राजा सूर्यघोष का उल्लेख है; उसके बहुत पीछे पाण्डव वंश के उदयन हुए; उसके चार पुत्र थे जिनमें सब से बड़ा इन्द्रबल (?) और सब से छोटा भावदेव था जिन्हें रण के सारन और चिन्तादुर्ग भी कहते हैं । इसे भास्कर भट्ट ने सङ्कलित किया ।

(११८)

गु० इ० पृष्ठ २९४ । पाण्डु वंश के इन्द्रबल के पुत्र नन्नदेव के पुत्र श्रीमत्कोसलाधिपति राजा तीवरदेव (महाशिवतीवरराज) का राजिम (मध्य प्रदेश में) में दानपत्र जो श्रीपुर में दिया गया था ।

(१३९)

इ० ए० भाग १८ पृष्ठ १७९ तथा आ० स० इ० भाग १७। **शिवगुप्त-बालार्जुन** के समय का सिरपुर (श्रीपुर, मध्य प्रदेश में) शिलालेख। इसे देवनन्दिन के पुत्र कृष्णनन्दिन ने संकलित किया।

सूर्य वंश में राजा उदयन; उसका पुत्र इन्द्रबल; उसका पुत्र नन्नदेव (नन्नेश्वर); उसका पुत्र चन्द्रगुप्त; उसका पुत्र हर्षगुप्त; उसका पुत्र शिवगुप्त-बालार्जुन।

(१४०)

गु० इ० पृष्ठ २३४। वाकाटकस (वंश) के महाराज पृथिविषेण तथा उसके सामन्त व्याघ्रदेव का नचने-की तलाई (मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड में) वाला शिलालेख।

(१४१)

गु० इ० पृष्ठ २३६। वाकाटक महाराज प्रवरसेन द्वितीय का चम्मक (बरार के पूर्व में) में दानपत्र जिसमें एक दान का वर्णन है जो शत्रुघ्नराज के पुत्र कोण्डराज की प्रार्थना पर प्रवरपुर में दिया गया था।

वाकाटक वंश के महाराज प्रवरसेन [प्रथम]; उसका पौत्र-गौतमी का पुत्र और भारशिरस के महाराज भवनाग की पुत्री का पुत्र-महाराज रुद्रसेन [प्रथम]; उसका पुत्र महाराज पृथिवीषेन; उसका पुत्र महाराज रुद्रसेन [द्वितीय]; उसका पुत्र (महाराजाधिराज देवगुप्त की पुत्री प्रभावतिगुप्ता से) महाराज प्रवरसेन [द्वितीय]।

(१४२)

गु० इ० पृष्ठ २४५। वाकाटक महाराज प्रवरसेन द्वितीय का सिवनी (मध्य प्रदेश में) का दानपत्र। वंशावली संख्या १४१ में।

(१४३)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ २६०। वाकाटक महाराज प्रवरसेन

द्वितीय का दुदिअ (मध्य प्रदेश में) का दान पत्र जो प्रवरपुर में दिया गया था।

(६४४)

आ० स० वे० इ० भाग ४ पृष्ठ १२४। अजण्टा का खण्डित वाकाटक शिलालेख जिसमें राजा विन्ध्यशक्ति प्रवरसेन [प्रथम], रुद्रसेन [प्रथम], (पृ)थिवी [सेन], प्रवरसेन [द्वितीय], देवसेन और हरिसेन तथा मन्त्री हस्तिभोज और वराहदेव (?) का उल्लेख है।

(६४५)

आ० स० वे० इ० भाग ४ पृष्ठ १२८। अजण्टा घटोत्कच के गुहा का शिलालेख। इसमें (वल्लूर ब्राह्मण जाति के) हस्तिभोज की, जो कि वाकाटक राजा देवसेन का मन्त्री था, वंशावली दी है।

(६४६)

आ० स० वे० इ० भाग ४ पृष्ठ १२९। वाकाटकों (?) के अधीनस्थ एक राजवंश का अजण्टा में खण्डित शिलालेख। इसमें धृतराष्ट्र, हरिसाम्ब, शौरिसाम्ब, उपेन्द्रगुप्त, काच [प्रथम], भिक्षुदास, नीलदास, काच [द्वितीय], कृष्णदास, तथा रविसाम्ब; और [वाकाटक ?] हरिषेण का उल्लेख है।

(६४७)

गु० इ० पृष्ठ २८०। कलकत्ता म्यूज़ियम की खण्डित मूर्ति का शिलालेख जिसमें शाक्य योगी धर्मदास का बुद्ध की मूर्ति के, जिसके पाद पर यह खुदा हुआ है दान का वर्णन है।

(६४८)

गु० इ० पृष्ठ २८२। बोध-गया (अब कलकत्ता म्यूज़ियम) की मूर्ति का शिलालेख जिसमें तिष्याम्र तीर्थ के दो शाक्य योगी धर्मगुप्त और दंष्ट्रसेन के बुद्ध की मूर्ति के, जिसके पाद पर यह खुदा हुआ है, दान करने का वर्णन है।

(६८९)

गु० इ० पृष्ठ २८३ । महासामन्त शशांकदेव की रोहतासगढ़ (बङ्गाल में) में मोहर का सांचा ।

(६९०)

ए० इ० भाग २ पृष्ठ ३४१ । उदयमानदेव का दुधपानी (बङ्गाल में) की पहाड़ी पर शिलालेख । इसमें मगध के एक राजा आदिसिंह का तथा उसके तीन भाई उदयमान, श्रीध्यैतमान और अजितमान का, जो पहिले अयोध्या के व्यापारी थे और तीन ग्राम भूमर शाल्मलि, नभूतिपण्डक, और छिङ्कल के राजा बनाए गए थे, वर्णन है ।

(६९१)

प्रो० ब० ए० सो० १८९० पृष्ठ १९२ । एक शिलालेख जो मुद्गलाश्रम, कष्टहरणि-घाट, मुंगेर में मिला था । इसमें एक राजा भगीरथ का वर्णन है ।

(६९२)

रा० मि० बु० ग० पृष्ठ १९१ । नन्न-गुणावलोक के पुत्र कीर्तिराज के पुत्र राष्ट्रकूट तुङ्ग-धर्मावलोक का बोध-गया (अब कलकत्ता म्यूज़ियम) में शिलालेख ।

(६९३)

आ० स० इ० भाग १ तथा भाग ३ पृष्ठ १२० । महाराजाधिराज गोपाल के राजत्वकाल का नालन्दा की मूर्ति का शिलालेख ।

(६९४)

सर ए० कनिंघाम की महाबोधि । गोपालदेव के राजत्वकाल का बोध गया की मूर्ति का शिलालेख ।

(६९५)

प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ ८० तथा सर ए० कनिंघाम की महाबोधि । धर्मपाल के राजत्वकाल का बोध गया में शिलालेख ।

(१९६)

ज० ब० ए० सो० भाग ६३ पृष्ठ ९३ तथा ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २४७। महाराजाधिराज धर्मपालदेव का खालिमपुर (अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जिसमें एक दान का वर्णन है जो महासामन्ताधिपति नारायणवर्मन की प्रार्थना से पाटलीपुत्र में दिया गया था।

दयित विष्णु; उसका पुत्र वप्पट; उसका पुत्र गोपाल [प्रथम] जिसने भद्रराजा की लड़की देद देवी से विवाह किया; उनका पुत्र धर्मपाल। इस शिलालेख में युवराज त्रिभुवनपाल का दूत की भांति वर्णन है। इसीने नारायणवर्मन की प्रार्थना धर्मपाल से कही थी।

(१९७)

ए० रि० भाग १ पृष्ठ १२३ तथा इ० ए० भाग २१ पृष्ठ २५४। महाराजाधिराज देववालदेव का मुंगिर में दानपत्र जो मुद्गगिरि में दिया गया था।

गोपाल [प्रथम]; उसका पुत्र धर्मपाल जिसने राष्ट्रकूट परबल की पुत्री पण्णादेवी से विवाह किया; उनका पुत्र देवपाल। इस शिलालेख में देवपाल के पुत्र युवराज राज्यपाल का दूतक की भांति वर्णन है।

(१९८)

इ० ए० भाग १७ पृष्ठ ३०९। राजा देवपाल के समय का घोस्रावा (अब बिहार म्यूजियम) में शिलालेख।

(१९९)

आ० स० इ० भाग ३। नारायणपालदेव के समय का गया में शिलालेख।

(२००)

इ० ए० भाग १९ पृष्ठ ३०९ तथा ज० ब० ए० सो० भाग ४७।

महाराजाधिराज **नारायणपालदेव** का भागलपुर (अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र जो मुद्गगिरि में दिया गया था।

गोपाल [प्रथम]; उसका पुत्र धर्मपाल (जिसने इन्द्रराज आदि को पराजित करने के पीछे महोदय (कनौज) का राज्य चक्रायुध को दे दिया) उसका छोटा भाई वाक्पाल; उसका पुत्र जयपाल; बड़ा भाई देवपाल; जयपाल का पुत्र विग्रहपाल [प्रथम] जिसने हयहय राजकुमारी लज्जा से विवाह किया; उनका पुत्र नारायणपाल।

(६६१)

ए० इ० भाग २ पृष्ठ १६१। नारायणपाल के समय का बदाल स्तूप पर शिलालेख। इसमें धर्म[पाल], देवपाल, शूरपाल और नारायणपाल का वर्णन है।

(६६२)

ज० ब० ए० सो० भाग ६१ पृष्ठ ८२। महाराजाधिराज महीपालदेव का दिनाजपुर में दानपत्र जो विलासपुर (!) में दिया गया था। नारायणपाल देव तक की वंशावली संख्या ६६० में; उसका पुत्र राज्यपाल जिसने राष्ट्रकूट तुग की पुत्री भाग्यदेवी से विवाह किया; उनका पुत्र गोपाल [द्वितीय]; उसका पुत्र विग्रहपाल [द्वितीय]; उसका पुत्र महीपाल।

(६६३)

आ० स० इ० भाग ३ पृष्ठ १२२ तथा इ० ए० भाग १ पृष्ठ ११४। महीपालदेव के राज्यकाल का बोधगया का शिलालेख।

(६६४)

प्रो० ब० ए० सो० १८७९, पृष्ठ २२१ तथा आ० स० रि० भाग ३। नयनपालदेव के राज्यकाल का गया के कृष्णद्वारिका मन्दिर का शिलालेख।

इस शिलालेख में शूद्रक और विश्वादित्य का उल्लेख है ।

(६६५)

इं० ए० भाग १४ पृष्ठ १६६ तथा भाग २१ पृष्ठ १०० । महाराजाधिराज विग्रहपालदेव तृतीय का आङ्गाछी (अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र ।

महीपाल सन् की वंशावली संख्या ६६२ में; उसका पुत्र नयपाल; उसका पुत्र विग्रहपाल [तृतीय]

(६६६)

ए० इं० भाग २ पृष्ठ ३५० । गौड़ के पाल कुमारपाल के अधीनस्थ, प्राग्ज्योतिष के महाराजाधिराज वैद्यदेव का कमौली (अब लखनऊ म्यूजियम) में दानपत्र । इसे मुरारि के पुत्र मनोरथ ने सङ्कलित किया था ।

सूर्यवंश (मिहिरस्य वंशे) में पालकुल के गौड़ के राजा विग्रहपाल [तृतीय ?]; उसका पुत्र रामपाल (जिसने भीम और मिथिला को मारा) और उसका पुत्र कुमारपाल; उनके मंत्री योगदेव, उसका पुत्र बोधिदेव और उसका पुत्र वैद्यदेव जिसे कुमारपाल ने तिङ्गदेव के स्थान पर पूर्वीय देश पर शासन करने के लिये नियत किया था ।

(६६७)

आ० स० इं० भाग ३ पृष्ठ १२६ । मदनपालदेव के राजत्वकाल का जयनगर की मूर्ति का शिलालेख ।

(६६८)

इं०ए० भाग १६ पृष्ठ ६४ । गया के शूद्रक के पौत्र तथा विश्वरूप के पुत्र राजा (नरेन्द्र) यक्षपाल का गया में शिलालेख । इसे आमिग्राम वंश के मुरारि ने सङ्कलित किया ।

(६६९)

ए० इं० भाग १ पृष्ठ ३०७ । विजयसेन का देओपर (बंगाल

के राजसाही जिले में, अब कलकत्ता म्यूजियम) में शिलालेख। इसे उमापतिधर ने सङ्कलित किया और मनदास के पौत्र तथा बृहस्पति के पुत्र राणक शूलपाणि ने खोदा।

चन्द्रवंश में वीरसेन तथा अन्य दाक्षिणात्य अनुशासक थे। उस सेन वंश में सामन्तसेन हुआ; उसका पुत्र हेमन्तसेन जिसने यशोदेवी से विवाह किया; उनका पुत्र विजयसेन (जिसने नान्य, वीर आदि राजाओं को पराजित किया)।

(१७०)

ज० ब० ए० सो० भाग ४४ पृष्ठ ११। महाराजाधिराज बल्लालसेन देव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज लक्ष्मणसेनदेव का तरपन्दिघी में दानपत्र जो विक्रमपुर में दिया गया था।

चन्द्रवंश के सेन कुल में हेमन्त हुआ; उसका पुत्र विजयसेन उसका पुत्र बल्लालसेन; उसका पुत्र लक्ष्मणसेन।

(१७१)

ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ४३। गौड़ाधिपति महाराजाधिराज लक्ष्मणसेनदेव के उत्तराधिकारी, गौड़ाधिपति महाराजाधिराज विश्वरूपसेनदेव का बेकरगञ्ज में दानपत्र जो जम्बुग्राम के निकट दिया गया था।

चन्द्रवंश में विजयसेन; उसका पुत्र बल्लालसेन; उसका पुत्र लक्ष्मणसेन जिसने........(?) से विवाह किया; उनका पुत्र विश्वरूप (विश्वरूपसेन)

(१७२)

ज० ब० ए० सो० भाग ६६ पृष्ठ ९। गौड़ाधिपति महाराजाधिराज लक्ष्मणसेनदेव के उत्तराधिकारी, गौड़ाधिपति महाराजाधिराज विश्वरूपसेनदेव का मदनपाड़ा में दानपत्र जो पञ्जुग्राम के निकट दिया गया था।

(६७३)

प्रो० ब० ए० सो० १८८५ पृष्ठ ९१ (राजा । ?) देव-खड्ग का ढाका (असरफपुर अब बंगाल एशियाटिक सोसायटी) में दानपत्र।

(६७४)

ज० ब० ए० सो० भाग ९, पृष्ठ ७६७ । प्राग्ज्योतिष के महाराज विग्रह वनमालवर्मदेव का तेजपुर (आसाम) में दानपत्र ।

धरणिवराह (विष्णु) और पृथ्वी से नरक उत्पन्न हुए; उसके पुत्र भगदत्त और वज्रदत्त । भगदत्त के वंश में प्रालम्भ जिसने जीवदा से विवाह किया; उनका पुत्र हर्जर जिसने तारा से विवाह किया; उनका पुत्र वनमाल ।

(६७५)

प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ १४८ । केशवदेव का सिल्हेट (आसाम) में दानपत्र ।

चन्द्रवंश में खरवाण (?), उसका पुत्र गोकुल (? गोल्हण), उसका पुत्र नारायण; उसका पुत्र गोविन्द-केशवदेव ।

(६७६)

प्रो० ब० ए० सो० १८८० पृष्ठ १९२ । ईशानदेव का सिल्हेट (आसाम) में दानपत्र जिसे दासवंश के माधव ने संकलित किया ।

चंद्रवंश में गोकुल (? गोल्हण); उसका पुत्र नारायण; उसका पुत्र केशवदेव; उसका पुत्र ईशानदेव ।

(६७७)

ज० ब० ए० सो० भाग ४० पृष्ठ १६९ : भञ्जवंश के कोट्टभञ्ज के पुत्र दिग्भञ्ज के पुत्र रणभञ्जदेव का बामनघाटी (उड़ीसा में, अब कलकत्ता म्यूज़ियम) में दानपत्र ।

(१८३)

प्रो० ब० ए० सो० १८८२ पृष्ठ ११ तथा ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३४१। महाराधिराज महा-भवगुप्तदेव [प्रथम] का उसी समय का कटक (था चौदवार, अब बङ्गाल एशियाटिक सोसायटी) में दूसरा दानपत्र।

(१८४)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३४६। महाराजाधिराज महा-भवगुप्तदेव [प्रथम] का उसी समय के कटक (!) में दूसरे दानपत्र की नोटिस।

(१८५)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३५१ तथा ज० ब० ए० सो० भाग ४६ पृष्ठ १५३। चन्द्रवंशी महाराजाधिराज महा-भवगुप्तराजदेव [प्रथम] जनमेजय के पुत्र तथा उत्तराधिकारी, त्रिकलिङ्गाधिपति महाराजाधिराज महा-शिवगुप्तराजदेव ययातिराजदेव का कटक में दानपत्र जो विनीतपुर में दिया गया था॥

(१८६)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३५६। चन्द्रवंशी महाराजाधिराज महा-शिवगुप्तराजदेव ययाति (जो जनमेजय का पुत्र था) के पुत्र तथा उत्तराधिकारी त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज महा-भवगुप्तराजदेव [द्वितीय] भीमरथदेव का कटक (!) में दानपत्र जो ययातिनगर में दिया गया था।

(१८७)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ २५८। ययातिनगर के चन्द्रवंशी महाराजाधिराज महा-शिवगुप्तराजदेव के उत्तराधिकारी त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज महा-भवगुप्तराजदेव (द्वितीय) के राजत्काल का, मधुरकेरा के वोडा (?) के पुत्र राणक पुञ्ज का कुदोपलि (मध्यप्रदेश के

सम्बलपुर जिले में अब नागपुर (म्यूज़ियम) में दानपत्र जो वा (?) मण्डापाटी में दिया गया था।

(६८८)

ज० ब० ए० सो० भाग ६४ पृष्ठ १२९। महाराज कुलस्तम्भदेव वा रल (ण ?) स्तम्भदेव (?) का पुरी (उरीसा में) में दानपत्र।

(६८९)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ३१३। महाराजाधिराज विजयराजदेव का इण्डिया ओफिस में दानपत्र जो कटक में दिया गया था।

इस शिलालेख में महाराज्ञी लाच्छिदेवी तथा हंमिनोदेवी का वर्णन है।

(६९०)

ज० ब० ए० सो० भाग ७ पृष्ठ ५५७। त्रिकलिंगाधिपति महाराजाधिराज उद्योतकेसरिराजदेव के राजकाल का भुवनेश्वर (उरीसा में) में किञ्चित् नष्ट शिलालेख। इसे भट्टपुरुषोत्तम ने सङ्कलित किया।

इस शिलालेख के छपे हुए वर्णन के अनुसार इसमें निम्न लिखित उल्लेख है चन्द्रवंशी जनमेजय; उसका पुत्र दीर्घरव और उसका पुत्र अपवार जो निरपत्य मर गया; उसके पीछे विचित्रवीर्य (जनमेजय का दूसरा पुत्र), उसका पुत्र अभिमन्यु, उसका पुत्र मण्डीहर, और उसका पुत्र उद्योतकेसरिन् जिसकी माता सूर्यवंश की कोलावती थी।

(६९१)

ज० ब० ए० सो० भाग ६ पृष्ठ ८९। भुवनेश्वर (उरीसा में) का शिलालेख जिसमें हरिवर्मदेव के मन्त्री भट्टभवदेव उपनाम बालवलभीभुजङ्ग का प्रशस्ति है। इसे वाचस्पति ने सङ्कलित किया।

(६९२)

ज० ब० ए० सो० भाग ६ पृष्ठ २८० तथा भाग ६६ पृष्ठ १८

कलिंग के गंग अनियङ्कभीम के समय का भुवनेश्वर (उड़ीसा में) शिलालेख ।

इस शिलालेख में पहिले (गौतमगोत्र के) राजपुत्र द्वारदेव का वर्णन है । उसका पुत्र सूर्यदेव, उसका पुत्र आहिराम, और उसके पुत्र और पुत्री स्वप्नेश्वर और सुरमा; इसके पश्चात् चन्द्रवंशी चोडगंग, उसका पुत्र राजराज जिसने सुरमा से विवाह किया, और राजराज का छोटा भाई अनियङ्कभीम ।

(६९३)

इ० ए० भाग १ पृष्ठ ३५५ । महाराज पुरुषोत्तमदेव का कमौर (उड़ीसा में) में दानपत्र ।

(६९४)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १९९ । कलिंग के महेन्द्रवर्मदेव के पुत्र गंग महाराजाधिराज महाराज पृथिवीवर्मदेव का गञ्जम में दानपत्र जो ...त्क (?) में दिया गया था ।

(६९५)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ ४२ । माधववर्मन का गञ्जम (जिला गञ्जम में (अब मद्रास म्युजियम) में दानपत्र जो कैंगोद में दिया गया था ।

इस शिलालेख में ' कलिंगदेश में सुप्रसिद्ध ' पुलिन्दसेन, शैलोद्भव; ...णभीत; उसके पुत्र सैन्यभीत (प्रथम) (यशोभीत;) उसके पुत्र सैन्यभीत (द्वितीय) ; और उसके पुत्र माधववर्मन का वर्णन है ।

(६९६)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १४४ । कलिंगाधिपति महाराज चण्ड-वर्मन का कोमर्ति (गञ्जम जिले में) में दानपत्र जो सिंहपुर में दिया गया था ।

(६९७)

इ० ए० भाग १३ पृष्ठ ४९ । कलिंगदेशाधिपति महाराज नन्द-

प्रभञ्जनवर्मन का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो शिरपल्लि में दिया गया था।

(६९८)

गं० सं० (?) ८७–ए० इ० भाग ३ पृष्ठ १२८। कलिंग के गंग महाराज इन्द्रवर्मन राजसिंह का अच्युतपुरम (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(६९९)

गं० सं० (?) ९१–इ० ए० भाग १६ पृष्ठ १३४ तथा ए० इ० नम्बर १८। कलिंग के गंग महाराज इन्द्रवर्मन राजसिंह का मर्लाकिमेडि (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंग नगर में दिया गया था।

(७००)

गं० सं० (?) १२८–इ० ए० भाग १३ पृष्ठ १२०। कलिङ्ग गङ्ग महाराज इन्द्रवर्मन का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिङ्ग नगर में दिया गया था।

(७०१)

गं० सं० (?) १४६ (?)–इ० ए० भाग १३ पृष्ठ १२१। [कलिङ्ग के] गङ्ग महाराज इन्द्रवर्मन का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिङ्ग नगर में दिया गया था।

(७०२)

गं० सं० (?) १८३–ए० इ० भाग ३ पृष्ठ १३१। कलिंग के गुणार्णव के पुत्र गंग महाराज देवेन्द्रवर्मन का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०३)

गं० सं० २५४–कलिंग के महाराज अनन्तवर्मन के पुत्र गंग देवेन्द्रवर्मन का विजगापटम में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०४)

गं० सं० ८१ (?)—इ० ए० भाग १३ पृष्ठ २७५ । महाराज अनन्तवर्मदेव के पुत्र गंग देवेन्द्रवर्मदेव का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंग नगर में दिया गया था।

(७०५)

गं० सं० २०४—ए० इ० भाग ३ पृष्ठ १८ । महाराज राजेन्द्रवर्मन के पुत्र गंग अनन्तवर्मदेव का अल्मण्ड (जिला विजगापटम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०६)

गं० सं० २५१—इ० ए० भाग १४ पृष्ठ ११ । कलिंग के महाराज देवेन्द्रवर्मन के पुत्र गंग सत्यवर्मदेव का चिकाकोल (जिला गञ्जम में, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०७)

ए० इ० भाग ३ पृष्ठ २२१ । गंग महाराजाधिराज वज्रहस्तदेव के राज्यकाल का, चोल-कामदिराज के पुत्र गंग दारपराज का पर्ला-किमेडी (जिला गञ्जम, अब मद्रास म्यूजियम में) में दानपत्र जो कलिंगनगर में दिया गया था।

(७०८)

इ० ए० भाग ९ पृष्ठ १०१ । महाराज चण्डवर्मन के सब से बड़े पुत्र शालङ्कायन महाराज विजयनन्दिवर्मन का कोल्लेरु झील (जिला गोदावरी) का दानपत्र जो वेंगीपुर में दिया गया था।

(७०९)

ए० इ० भाग ४ पृष्ठ १९९ । विष्णुकुण्डिन (वंश) के महाराज

माधववर्मन के प्रपौत्र, विक्रमेन्द्रवर्मन प्रथम (जो विष्णुकुण्डि वंश तथा वाकाट (वाकाटक) वंश से हुए थे) के पौत्र तथा महाराज इन्द्रभट्टारकवर्मन के सब से बड़े पुत्र महाराज विक्रमेन्द्रवर्मन द्वितीय का चिक्कुल्ल (जिला गोदावरी में) में दानपत्र जो लेंदुलूर में दिया गया था।

(७१०)

ज० बो० ए० सो० भाग १६ पृष्ठ ११६। महाराज प्रभाकर के पुत्र राजा पृथिविमूल का जिला गोदावरी में दानपत्र जिसमें एक दान का वर्णन है जो मित्रवर्मन के पुत्र इन्द्राधिराज, जिसने किसी इन्द्रभट्टारक को जीता था, की प्रार्थना से काझालि में दिया गया था।

(७११)

ज० ब० ए० सो० भाग ६७ पृष्ठ १०६। प्राग्ज्योतिष के ब्रह्मपालवर्मदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज रत्नपालवर्मदेव का बरगाओं (आसाम) में दानपत्र।

हरि (विष्णु); उसका पुत्र नरक; उसका पुत्र भगदत्त; उसका भाई वज्रदत्त।

(७१२)

ज० ब० ए० सो० भाग ६७ पृष्ठ ११२। प्राग्ज्योतिष के ब्रह्मपालवर्मदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज रत्नपालवर्मदेव का सुआलकुची (आसाम) में द्वितीय और तृतीय दानपत्र।

(७१३)

ज० ब० ए० सो० भाग ६६ पृष्ठ १२३। प्राग्ज्योतिष के रत्नपालवर्मदेव के उत्तराधिकारी महाराजाधिराज इन्द्रपालवर्मदेव का गौहटी (आसाम) में दानपत्र।

हरि (विष्णु) और पृथ्वी से नरक उत्पन्न हुए; उसका पुत्र भगदत्त; उसका पुत्र (?) वज्रदत्त। इस वंश में ब्रह्मपाल हुआ; उसका

पुत्र रत्नपाल; उसका पुत्र पुरन्दरपाल जिसने दुर्लभा से विवाह किया, उनका पुत्र इन्द्रपाल।

(७१४)

ज० ब० ए० सो० भाग ६६ पृष्ठ २८९। प्राग्ज्योतिष के महाराजाधिराज बलवर्मदेव का नौगांग जिले (आसाम) में दानपत्र जो [हारू] पर्वरे में दिया गया था।

उपेन्द्र (विष्णु); उसका पुत्र नरक; उसका पुत्र भगदत्त; उसका छोटा भाई वज्रदत्त। इस वंश में बहुत से राजाओं के अनन्तर सालस्तम्भ, पालक, विजय आदि हुए। इसके पश्चात् हर्जर; उसका पुत्र वनमाल; उसका पुत्र जयमाल; उसका पुत्र वीरबाहु जिसने अम्बा से विवाह किया; उनका पुत्र बलवर्मन।

(७१५)

इ० ए० भाग १२ पृष्ठ २७९। जयत्कन्ध के वंश के महाराज अहिवर्मन के पुत्र महाराज महा [सेना] पति पुष्येण की वर्ग में मोहर का साचा।

(७१६)

इ० ए० भाग १८ पृष्ठ ९८९। बुलन्दशहर की एक मोहर का साचा जिसमें [मो]त्तिल का नाम है।

समाप्त

———*———

प्राचीन-लेख-मणि-माला

की

अनुक्रमणिका ।

अ

ए

क

ख

के

ग

घ

च

प

फ

ब

भ

म

य

र

६

म

ल

श

७

ह